CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

# शोधपूर्ण ग्रंथ तथा ग्रंथकर्ता
# आचार्यश्री कनकनंदी

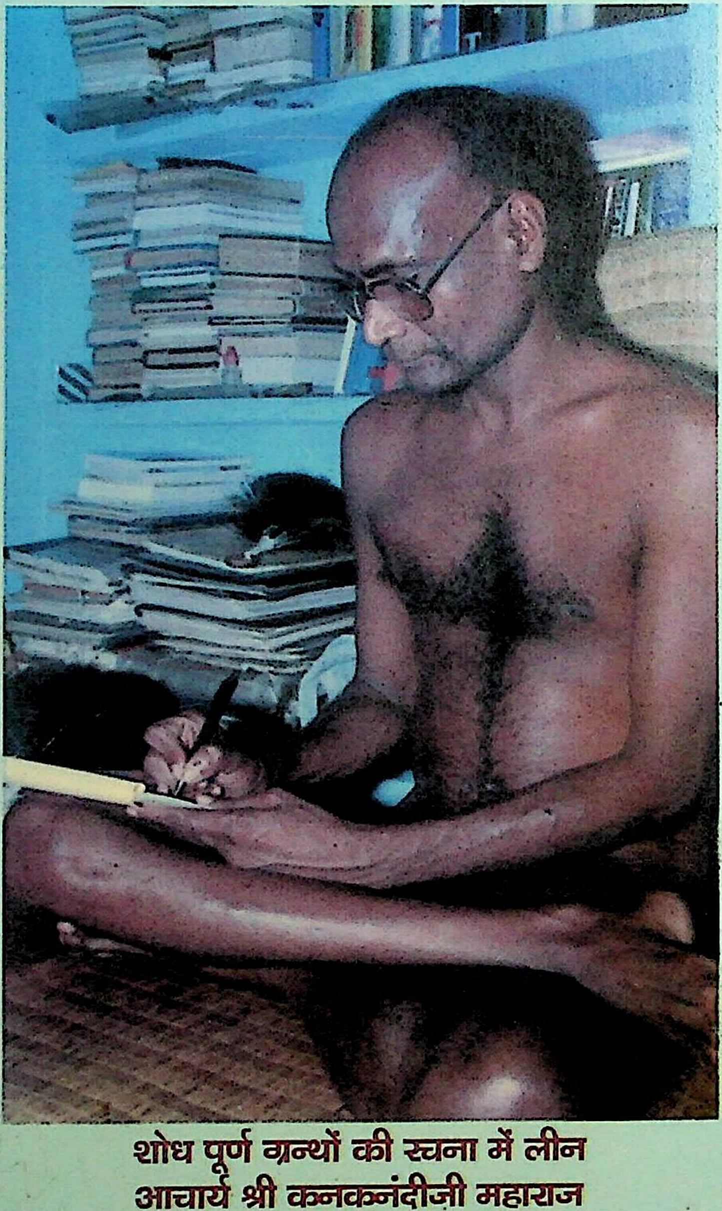

शोध पूर्ण ग्रन्थों की रचना में लीन
आचार्य श्री कनकनंदीजी महाराज

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri



# शोधपूर्ण ग्रंथ तथा ग्रंथकर्ता आचार्यश्री कनकनंदी

शोधपूर्ण ग्रंथ तथा ग्रंथकर्ता आ.श्री कनकनंदीजी श्रोताओं को सम्बोधित करते हुये।

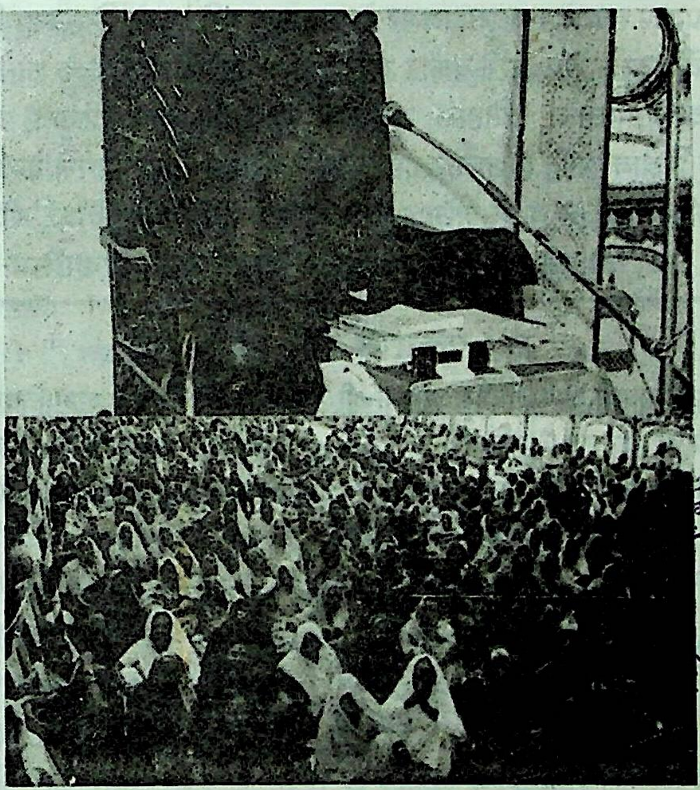

4690

आ. ऋद्धिश्री

(संघस्था आचार्यश्री कनकनन्दी)



Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri



धर्म–दर्शन–विज्ञान शोध संस्थान तथा धर्म–दर्शन–विज्ञान सेवा संस्थान – ग्रंथांक – 128

# शोधपूर्ण ग्रंथ तथा ग्रंथकर्ता
# आचार्यश्री कनकनंदी

**भ. महावीर की 2600वीं जन्म जयन्ति की पूण्य स्मृति में**

जिस प्रकार एक देश या महानगर के सामान्य परिचय के लिए मानचित्र या निर्देशिका चाहिए, उसी प्रकार आ.श्री कनकनंदीजी गुरुदेव के शोधपूर्ण धर्म, दर्शन, विज्ञान, इतिहास, मनोविज्ञान, शिक्षा, स्वप्न, शकुन, मंत्र, सर्वांग विज्ञान आदि विशाल साहित्य रूपी नगर में प्रवेश करने के लिए यह कृति मानचित्र या निर्देशिका के समान है। इस कृति में आ. श्री की अभी तक की संपूर्ण कृतियों का संक्षिप्त वर्णन प्रकाशित है।

## ग्रंथ प्रकाशन सौजन्य :-

(1) सौभाग्यवती डिम्पल जैन सुपुत्री श्री हीरालालजी जैन के शुभ विवाह के उपलक्ष्य में। (1000 प्रतियाँ)
27, एकलिंग कॉलोनी, हिरणमगरी, से.-3, उदयपुर-1, दूरभाष- 460099
(2) श्री कान्तिलाल शान्तिलालजी झवेरी (1000 प्रतियाँ)
98, ज़वेरी बाजार, कुबेर बिल्डिंग, मुम्बई-2 दूरभाष : (022)6481122
रचयत्री : आ. ऋद्धिश्री
प्रथम संस्करण : 2001 प्रतियाँ : 2000
मूल्य : 10.00 (ज्ञान प्रचारार्थे आप की सहयोग राशि)

**www JainKanaknandhi.org** (संस्थान की **website**)
**e:mail Info @ JainKanaknandhi. org.**
**I.** धर्म दर्शन विज्ञान शोध संस्थान एवं **II.** धर्म दर्शन सेवा संस्थान
(बडौत, मु.नगर, कोटा, उदयपुर, सलुम्बर, मुम्बई)



Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri



**प्रकाशन एवं प्राप्ति स्थान–**

**(1) श्री सुशीलचन्द्रजी जैन– फोन. नं. (01234) 62845**

'धर्म–दर्शन–विज्ञान शोध संस्थान' निकट दि. जैन धर्माशाला, बड़ौत

**(2) श्रीमती रत्नमाला जैन C/o डॉ. राजमलजी जैन**

4–5 आदर्श कॉलोनी पुलाँ, उदयपुर (राज.)फो. नं. (0294) 440793

**(3) श्री गुणपालजी जैन**

बेहड़ा भवन 87/1 कुंदनपुरा मुजफ्फरनगर फो नं. : (0131) 450229

**(4) श्रीमती लक्ष्मीगुरुचरण जी जैन**

144 मुवी टावर नीयर, मिल्लतनगर लोखण्डवाला कॉम्पलेक्स,
अंधेरी (प.) मुंबई–400053

फोन नं. : (022) 6327152, 6312124, 63271152

**(5) 'सेवाश्री' सुरेखा जैन (शिक्षिका) w/o वीरेन्द्रकुमार डालचन्दजी गड़िया**

कपड़े के व्यापारी – सलुम्बर जि. उदयपुर पिन. 313001

फोन नं. : (02906) 32043

**(6) श्री महावीर कुमार जैन**

13 अग्रसेन कॉलोनी, दादाबाड़ी कोटा फोन नं. : (0744) 410818

**(7) धर्म दर्शन विज्ञान शोध संस्थान**

C/o चन्द्रप्रभु मंदिर, आयड़, छोटूलाल चित्तोड़ा
आयड़ बस स्टोप के पास, उदयपुर–313001 (राज.)
फोन न. 413565

**लेसर टाईप सेटर्स : *श्री कुन्थुसागर ग्राफिक्स सेन्टर 25, शिरोमणि बंगलोज, सी.टी.एम. चार रस्ता के पास, अहमदाबाद–380026***

***फोन – 5892744, 5891771***

***प्रकाशन (प्रूफ लाने ले जाने) में विशेष सहयोगी–***

***श्री मोडीलालजी प्रजापत, कैलाश कॉलोनी, माछला मगरा, नियर राम निवास होटल के सामने, हिरणमगरी, से.नं. 11, उदयपुर, फोन. 487661***



Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri



# कृतियों के कर्ता का व्यक्तित्व

आ. ऋद्धिश्री

मनुष्य के पास श्रम, समय, चिंतन एवं साधना की सीमित शक्ति है। उसे वह जिस दिशा में लगा देता है उसी प्रकार के परिणाम सामने आते हैं। अपनी क्षमताओं का सदुपयोग नहीं करना तथा आलस्य, प्रमाद की आदतें मानव को अपंग बना देती हैं। जो कर सकने योग्य क्षमतायें थीं वे क्षमतायें भी आलस्य, प्रमाद के कारण गुप्त–सुप्त हो जाती हैं। अशिक्षा, फूट, कलह, वैमनस्य, ईर्ष्या, द्वेष, दुर्भाव आदि विकृतियाँ हमारी दुर्बलता के बड़े कारण हैं। यदि इन दुष्प्रवृत्तियों को हटाकर सृजनात्मक सत्कार्यों एवं सत्प्रयोजनों में लगाया जाये तो उनके स्वर्णिम सत्परिणाम हमारे सामने आ सकते हैं।

पारिवारिक, सामाजिक, वैश्विक, नैतिक, बौद्धिक, शैक्षिक आदि क्षेत्रों में हमारा जीवन बँटा हुआ है। इसीलिए प्रत्येक मानव समूह हित की बात सोचने में स्वयं का घाटा समझता है और व्यक्तिवादी स्वार्थपरता अपनाने में लाभ समझता है। स्वार्थ को ही जब आन्तरिक मान्यता मिली हुई है तो परमार्थ के लिए प्रवाह को उलटकर चलने वाला साहस कैसे और कौन उत्पन्न करें ? इस कठिन, दुःसाध्य कार्य को करने के लिए बड़े–2 साधुसंत, दार्शनिक, मनोवैज्ञानिक, शिक्षाविद, पंडित आदि भी समर्थ नहीं है जो कि वर्तमान परिवेश के स्वार्थयुक्त मानव के मर्मस्थल तक पहुँचकर सुधार कर सके। घिसी–पिटी सिद्धान्तवादी चर्चाओं को तोता रटन्त की तरह दुहराते रहना व्यर्थ है। तर्क और सत्य तथ्यों के आधार पर आज की विकृत अवस्थाओं को उखाड़कर फेंकने और उनके स्थान पर उत्कृष्टताओं को स्थित करना ही नया क्रांतिकारी परिवर्तन है।

विश्व का भावी नवनिर्माण मानवीय उत्कृष्टताओं के अभिवर्द्धन पर ही अवलंबित है। इसीलिए इस धरा धाम पर समय–समय पर ऐसे दिव्यात्मा, पुण्यात्मा, महात्मा, संत पुरूषों का जन्म होता रहा है जो विकृतियों को नष्ट करके सुकृतियों को जन्म देते हैं।

कोई भी युग स्वतः निर्मित नहीं होता अपितु उसका निर्माण किया जाता है। और कोई भी युग निर्माता आकाश से नहीं टपकता है अपितु इसी धाराधाम पर जन्म लेता है। यद्यपि हरयुग सुकृतियों और विकृतियों का ही मिला–जुला रूप



Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri



होता है फिर भी आने वाला हर युग यह अपेक्षा रखता है कि वह ऐसे महिमा मण्डित गौरवशाली युगपुरूषों से गौरवान्वित हो जो आगे आने वाले अंधकार में दीपक का कार्य करे।

20वीं सदी भौतिकतावाद और विज्ञान की सदी रही। इस सदी में भौतिक, बौद्धिक, तकनीकी विकास तो बहुत हुआ लेकिन भावनात्मक, संवेदनात्मक, आध्यात्मिक विकास शून्य ही रहा। मानव यंत्रवत् बनकर रह गया; उसके अन्तरंग से करुणा, दया, ममता, समता, सद्हृदयता, संवेदना, सहिष्णुता, वात्सल्यता, परोपकारिता, उदारता, परमार्थता आदि सद्गुण दूर होते चले गये। इसीलिए भौतिक समृद्धि के ढेर पर बैठा मानव अशांति, संताप, तनाव, संघर्ष के सागर में गोता लगा रहा है। इस अशांत, संताप, तनाव, संघर्ष के वातावरण को शांति में बदलने के लिए इस धराधाम पर वैज्ञानिक धर्माचार्य क़नकनंदीजी गुरूदेव जैसे महान् दिव्यात्मा, पुण्यात्मा, तेजस्वी, ओजस्वी, महिमामण्डित संत पुरूष ने जन्म लेकर जन-जन में नैतिकता, सदाचारता, वैज्ञानिकता, आध्यात्मिकता, उदारता, परमार्थता, वात्सल्यता, संवेदना, सहिष्णुता, एकता, कर्त्तव्यपरायणता आदि सदगुणों का शंखनाद किया है। जिस प्रकार अग्नि को बुझाने के लिए पानी की आवश्यकता होती है उसी प्रकार आज के भौतिकवादी स्वार्थान्ध परिवेश को बदलने के लिए कनकनंदीजी जैसे गुरूदेव की आवश्यकता है।

आज मेरा ही क्या जन-जन का यह सौभाग्य है कि ऐसे विषम, दूषित, प्रतिकूल वातावरण में हमें ऐसे महान्, दिव्य तेजस्वी सच्चे निग्रंथ गुरु का संरक्षण मिल रहा है जो विश्व के आध्यात्मिक जगत् में कोहिनूर हीरे की तरह प्रकाशमान हैं।

इस दिव्यात्मा के मन में बाल्यकाल से ही यह गहरी टीस पैदा हो गयी थी कि जिस विश्वगुरु भारत की इतनी महान्-महान् प्रतिभाओं ने इतने महान्-महान सिद्धान्त प्रतिपादित किये, जिस भारतीय सभ्यता संस्कृति में दया, प्रेम, करुणा, ममता, उदारता, संवेदना, सौहार्दता, अतिथिदेवो भवः, पितृदेवोभवः, मातृ-देवोभवः आदि तत्व थे ऐसा ज्ञान-विज्ञान का आविष्कारक भारत आज इतना दीन-हीन, अनाथ, असहाय, पतित, भ्रष्ट कैसे बन गया? इस दीन-हीन स्थिति-परिस्थिति में कैसे सुधार हो? इस स्थिति-परिस्थिति को सुधारने हेतु गुरुदेव का चिंतन, मनन, मंथन, अन्वेषण बाल्यावस्था से ही प्रारम्भ हो गया था।



Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri



गुरूदेव ने अपने सुखों को तिलाञ्जलि देकर तलवार शूलों की कंटकाकीर्ण राहों पर चलकर जन–जन की गुप्त–सुप्त चेतना को जागृत करने के लिए एवं जैनधर्म को जनधर्म बनाने के लिए सड़ी–गली, मिथ्या, अंधी रूढ़िगत परम्पराओं की कमर तोड़ने का दृढ़संकल्प करके शिविर, संगोष्ठी, प्रवचन, साहित्यलेखन आदि सत्कार्यों को करके समग्र क्रांति का बिगुल बजाया है।

गुरूदेव ने इस बात पर गंभीरता से चिंतन–मनन मंथन, अन्वेषण किया कि महत्वपूर्ण परिवर्तन ना तो शस्त्रों की नोक पर होते हैं और न मायावी घोषणाओं से। चिरन्तन सत्य तो यह है कि साहित्यिक क्रांति से ही वैचारिक क्रांति हुआ करती है, और वैचारिक क्रांति से ही परिवार, समाज, राष्ट्र में आशातीत परिवर्तन हो सकते हैं। इसीलिए गुरूदेव ने धर्म, दर्शन, विज्ञान, खगोल, भूगोल, इतिहास, गणित, तर्क, न्याय, व्याकरण, ज्योतिष, राजनीति, अंगविज्ञान, स्वप्नविज्ञान, शकुन विज्ञान, मंत्र विज्ञान, आयुर्वेद इत्यादि प्रकार के ६ भाषाओं में साहित्य लिखकर साहित्य जगत् में धूम मचा दी है। गुरूदेव सभी प्रकार की विद्याओं को जानने में बृहस्पति सम पारगामी हैं। इसीलिए तो ऐसे महान् दिव्य, तेजस्वी, ओजस्वी, अलौकिक महिमा मण्डित संत का साहित्य आज इंटरनेट पर पढ़ा जा रहा है और ऐसे सत् साहित्य की देश–विदेश में मांग है।

प्रकृति के सभी शुभ तत्व अपने चरम पर पहुँचकर ही क्रियाशील होते हैं तब कहीं जाकर ऐसे दिव्यात्मा, पुण्यात्मा, महात्मा संत पुरूषों का जन्म हुआ करता है। वास्तव में हम कितने पुण्यशाली, सौभाग्यशाली हैं जो कि ऐसे महान् यशस्वी, तेजस्वी, तपस्वी, दिव्य, अलौकिक प्रतिभामंडित सच्चे गुरु की उपलब्धि हुई। यदि हम अपनी गुप्त–सुप्त चेतना को ऐसे प्रतिभाशाली, अलौकिक, महान्, ज्येष्ठ, श्रेष्ठ, वरिष्ठ गुरु को प्राप्त करके जाग्रत करें तभी हमारे शिष्यत्व की सार्थकता सिद्ध होगी।

धर्म दर्शन विज्ञान प्रवेशिका I, II., III, नैतिक शिक्षा सामान्य ज्ञान, विश्व द्रव्य विज्ञान (द्रव्य संग्रह), पुरूषार्थसिद्ध्युपाय, इष्टोपदेश, आदर्श जीवन की प्रायोगिक क्रियायें, स्वतन्त्रता के सूत्र (तत्वार्थसूत्र) ये ग्रंथ शिविर, संगोष्ठी में अध्ययन हेतु उपयोगी हैं।

ग्रीष्मकालीन, शीतकालीन शिविरों में चौथी कक्षा से लेकर विश्वविद्यालय के विद्यार्थीयों, अध्यापक, डॉक्टर्स, इन्जीनियर्स, प्रोफेसर्स इत्यादि बड़े--बड़े लोग भाग



Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri



लेकर अपने ज्ञान को विस्तृत करते हैं। शिविर, संगोष्ठी में आचार्यश्री स्वरचित साहित्य से ही अध्यापन कराते हैं। यहाँ तक कि प्रार्थना, भजन, श्लोगान, आरती, पूजा आदि भी स्वरचित या संघस्थ साधुओं द्वारा रचित ही सिखाते व करवाते हैं। इसका कारण यह है कि आचार्यश्री जैनधर्म को आधुनिक युग की मांग के अनुसार विज्ञान से जोड़कर धर्म–विज्ञान, कानून, राजनीति, इतिहास सभी के साथ समन्वय करके रूढ़िगत/परम्परागत संकीर्ण मान्यताओं को तोड़ना चाहते हैं। ये सब अनेकान्तात्मक, विशाल, दूरदर्शी, सार्वभौम सत्य दृष्टिकोण अन्य साहित्यों में नहीं पाया जाता है।

---

***आदर्श पंचकल्याणक (देवारी) में मूर्तियों का संस्कार करते हुए***
***आ. श्री कनकनंदीजी, उपाध्यायश्री विद्यानंदीजी, मुनिश्री आज्ञासागरजी ससंघ***

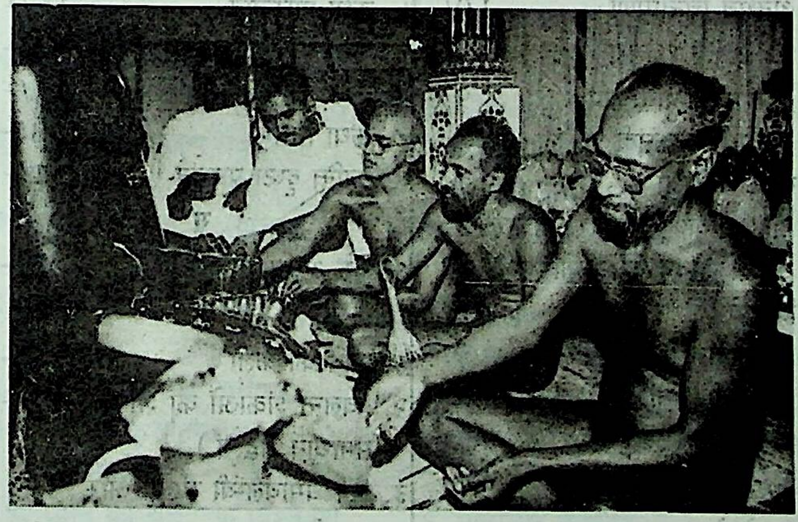



Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri



## समग्र क्रांति के प्रणेता, सिद्धान्तचक्रवर्ती, अभीक्ष्ण–ज्ञानोपयोगी, वैज्ञानिक धर्माचार्य कनकनंदी गुरूदेव द्वारा रचित शोधपूर्ण ग्रंथों कि सूची

कृति मूल्य

**अ**

१. अनेकान्त सिद्धान्त (द्वि.सं.) 41/
२. अहिंसामृतम 16/
३. अति मानवीय शक्ति (द्वि.सं.) 31/
४. अयोध्या का पौराणिक ऐतिहासिक एवं राजनैतिक विश्लेषण 11/–
५. अग्नि परीक्षा 11/–
६. अनेकान्त के प्रकाश में मोक्षमार्ग 21/–
७. अपुनरागमन पथः मोक्षमार्ग 5/–
८. अनुभव चिन्तामणि 10/–

**आ**

१. आत्मोत्थानोपायः तपः 9/–
२. आचार्य कनकनंदी जी की दृष्टि में शिक्षा 11/–
३. आदर्श विहार–आहार–विचार 35/
४. आदर्श जीवन की प्रायोगिक क्रियायें 5/–
५. आहारदान से अभ्युदय 9/–
६. आहारदान विधि (हिन्दी,मराठी)

**इ**

१. आध्यात्म मनोविज्ञान (इष्योपदेश) 51/–

**उ**

१. उपवास का धार्मिक वैज्ञानिक विश्लेषण 15/–
२. उंठो जागो प्राप्त करो (हिन्दी, कन्नड़) 15/–

**ऋ**

१. ऋषभ पुत्र भरत से भारत (द्वि.सं.) 21/–

**क**

१. कर्म का दार्शनिक एवं वैज्ञानिक विश्लेषण (द्वि.सं.) 45/–
२. क्रान्ति के अग्रदूत (द्वि.सं.) 21/–
३. कथा सुमन मालिका 15/–
४. कथा सौरभ 21/–
५. कथा पारिजात 15/–
६. कथा पुष्पांजलि 15/–
७. कथा चिन्तामणि 11/–
८. कथा त्रिवेणी 8/–
९. क्रान्ति दृष्टा प्रवचन 11/–

**ग**

१. गुरु अर्चना 5/–

**ज**

१. जीने की कला 7/–
२. ज्वलन्त शंकाओं का शीतल समाधान (द्वि.सं.) 41/–
३. जैन धर्मावलम्बी संख्या और उपलब्धि 21/–
४. जीवन्त धर्म सेवा धर्म 11/–
५. जिनार्चना (प्रथम पुष्प) तृ.सं. 51/–



Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri



६. जिनार्चना (द्वितीय पुष्प) 21/-

**त**

१. तत्वानुचिन्तन 5/-

**द**

१. दिगम्बर जैन साधु नग्न क्यों 75/-
(हिन्दी, मराठी, गुजराती, उर्दु)
(15वां संस्करण)

२. दंसण मूलो धम्मो तहा संसार मूल हेदूं मिच्छतं 15/-

**ध**

१. धर्म विज्ञान बिन्दु 15/-

२. धर्म ज्ञान एवं विज्ञान 15/-

३. धर्म एवं स्वास्थ्य विज्ञान (प्र.पुष्प) (द्वि.सं.) 20/-

४. धर्म एवं स्वास्थ्य विज्ञान (द्वि.पुष्प) 10/-

५. धर्म दर्शन विज्ञान प्रवेशिका (प्रथम पुष्प) (षष्ठं सं.) 11/-

६. धर्म दर्शन विज्ञान प्रवेशिका (द्वितीय पुष्प) (षष्ठं सं.) 2/-

७. धर्म दर्शन विज्ञान प्रवेशिका (तृतीय पुष्प) (षष्ठं सं.) 25/-

८. धर्म दर्शन एवं विज्ञान (द्वि.सं.) 51/-

९. धर्म प्रवर्तक 24 तीर्थंकर 11/-

१०. धार्मिक कुरीतियों का परिशोधन 5/-

११. ध्यान का वैज्ञानिक विश्लेषण (द्वि.सं.) 21/-

**न**

१. नग्न सत्य का दिग्दर्शन 15/-

२. नैतिक शिक्षा एवं सामान्य ज्ञान 20/

३. निमित्त उपादान मीमांसा-द्वि.सं. 9/-

**प**

१. पुण्प पाप मीमांसा (द्वि.सं.) 15/-

२. पार्श्वनाथ का तपोसर्ग कैवल्यधाम बिजौलिया 15/-

३. पूजा से मोक्ष, पुण्य तथा पाप भी 21/-

४. पुरुषार्थसिद्ध्युपाय (अहिंसा का विश्वरूप) 101/-

५. प्रथम शोध-बोध आविष्कार एवं प्रवक्ता

**ब**

१. 72 कलायें 5/-

२. बालबोध जैनधर्म 7/-

३. बंधु बन्धन के मूल 61/-

**भ**

१. भाग्य एवं पुरूषार्थ 15/-

२. भारतीय आर्य कौन कहाँ से कबसे, कहाँ के? 21/-

३. भाव एवं भाग्य तथा अंग विज्ञान (सर्वांग विज्ञान की वैज्ञानिक गवेषणा) 151/-

४. भविष्य फल विज्ञान (द्वि.सं.) 101/

५. भ.महावीर उनका दिव्य संदेश 5/-

६. भारत को पुनः विश्वगुरू बनाने के लिए समग्र क्रांति चाहिए 15/-

७. भ्रष्टाचार उन्मूलन 5/-

**म**

१. मनन एवं प्रवचन (द्वि.सं.) 5/-

२. मंत्र विज्ञान (द्वि.सं.) 25/-



Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri



३. मानवीय निकृष्ट संघर्ष का इतिहास 10/–

य

१. युग निर्माता भ. ऋषभदेव (द्वि.सं.) 41/–
२. युग निर्माता भ. ऋषभदेव (अंग्रेजी) 51/–
३. युग निर्माता भ. ऋषभदेव (पद्यानुवाद) 5/–
४. ये कैसे धर्मात्मा–निर्व्यसनी राष्ट्रसेवी 11/–

ल

१. लेश्या मनोविज्ञान (द्वि.सं.) 11/–

व

१. विनय मोक्षद्वार 6/–
२. विश्व विज्ञान रहस्य 100/–
३. विश्व इतिहास 25/–
४. विश्व धर्मसभा समवशरण 21/–
५. विश्व धर्म विज्ञान (द्रव्यसंग्रह) 41/–
६. व्यसन का धार्मिक वैज्ञानिक विश्लेषण (तृ.सं.) 30/–
७. विश्वशांति के अमोध उपाय (द्वि.सं.) 10/–
८. विश्व धर्म के दस लक्षण 41/–
९. व्यक्ति एवं समाज निर्माण के आद्यकर्तव्य 15/–

श

१. शाश्वत समस्याओं का समाधान 18/
२. शांति क्रांति के विश्व नेता बनने के उपाय 51/–
३. शिक्षा शोधक स्मारिका (तृ. राष्ट्रिय वैज्ञानिक संगोष्ठी) 101/–
४. शकुन विज्ञान 30/–
५. शोधपूर्ण ग्रंथ तथा ग्रंथकर्ता आ. कनकनंदीजी 70/–

स

१. संगठन के सूत्र (द्वि.सं.) 25/–
२. संस्कार (हिन्दी, अंग्रेजी, मराठी, कन्नड, गुजराती) (15वां. सं.) 5/–
३. संस्कार (बृहत्) 30/–
४. संस्कार सचित्र (तृ.सं.) 11/–
५. स्वप्न विज्ञान (द्वि.सं.) 51/–
६. स्वतन्त्रता के सूत्र 71/–
७. सत्यधर्म 5/–
८. सत्य साम्यसुखामृतम् (प्रवचनसार) 301/–
९. सर्वोदय शिक्षा मनोविज्ञान (बृहत) 201/–
१०. सर्वोदय शिक्षा मनोविज्ञान (छोटा) 21/–
११. स्मारिका प्रथम संगोष्ठी 81/–
१२. सत्य शोधक स्मारिका (द्वितीय संगोष्ठी) 51/–
१३. संस्कृति की विकृति 10/–
१४. समग्र क्रांति के उपाय 15/–
१५. सत्यान्वेषी आ. कनकनंदी का व्यक्तित्व एवं कृतित्व 5/–
१६. सेवा धर्म जीवन्त धर्म

ह

१. हिंसामय यज्ञ का प्रारम्भ क्यों? 7/–

क्ष

१. क्षमा वीरस्य भूषणम् (तृ.सं.) 25/–



Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri



त्र

१. त्रैलोक्य पूज्य ब्रह्मचर्य (द्वि.सं.) 25/

श्र

१. श्रमण संघ संहिता 30/--

F

1. Fate and Efforts 15/-

L

1. Laishya Psychology 11/-

N

1. Nakedness of Digamber Jain saints and Kesh Lonch 5/-

P

1. Philosophy of Scintific Religion 21/-

W

1. What Kind of "DHARAMATMA" (Plousman) These Are 21/-

आगामी प्रकाशनाधीन ग्रंथ

## आचार्यश्री कनकनन्दी जी गुरुदेव के संघ के विशेष कार्यक्रम

1. www.jainkanaknandhi.org (इंटरनेट वेबसाइट)
2. E.mail. info@jainkanakandhi.org
3. राष्ट्रीय वैज्ञानिक संगोष्ठियाँ
4. धर्म दर्शन विज्ञान प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन
5. धार्मिक प्रशिक्षण कक्षायें
6. स्व संघ पर संघ के साधुओं के अध्ययन एवं अध्यापन कार्यक्रम
7. प्रश्नमंच एवं सांस्कृतिक कार्यक्रम
8. बच्चो, युवक–युवतियों को संस्कारवान बनाना एवं उनसे आहार लेना।
9. हर क्षेत्र में अच्छे व्यक्तिओं को एवं संस्थानों को पुरस्कृत करना।
10. हर विधा के वैज्ञानिक शोधपूर्ण साहित्य का सृजन एवं प्रकाशन।
11. धर्म दर्शन विज्ञान शोध संस्थान
12. धर्म दर्शन सेवा संस्थान

*– जो सत्यग्राही नहीं है वह न सच्चा धार्मिक, न सच्चा वैज्ञानिक है, न सच्चा राजनेता है, न सच्चा समाज सेवक है, न सच्चा न्यायविद् है।*

*– दीपक के समान स्वयं प्रकाशित होकर दूसरों को प्रकाशित किया जा सकता है।*

*आ. कनकनंदीजी गुरुदेव*



Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri



# आचार्य श्री कनकनन्दी गुरुदेव द्वारा रचित ग्रन्थों का परिचय अक्षरानुक्रम से

## (1) अनेकान्त सिद्धान्त :- I

द्रव्य का लक्षण सत्स्वरूप है। सत् अनेकान्तात्मक है। अनेकान्त ही धर्म की सिद्धि करने वाला है। अनेकान्त जैनधर्म का प्राण है। अगर अनेकान्त को जैनधर्म से निकाल दिया जाये तो जैनधर्म निष्प्राण हो जायेगा। प्रत्येक वस्तुस्वरूप को अनेकान्त दृष्टि से ही समझना चाहिए। एकान्त से मिथ्या हो जाता है और मिथ्यात्व से अनंत संसार परिभ्रमण होता है। वस्तु स्वरूप को समझने के लिए आचार्यों की वाणी के अनुसार पूज्य आचार्य गुरुवर्य ने 'अनेकान्त सिद्धान्त' नामक पुस्तक लिखने में प्रायः 30-35 दर्शनों का समीक्षात्मक दार्शनिक पद्धति से तर्कबद्ध वर्णन किया है। प्रत्येक दर्शन के सत्यांश को स्वीकार किया है तथा पूर्ण सत्य क्या है उसका भी पूर्ण वर्णन किया है।

वर्तमान में जैनधर्म में संकुचित मनोभाव, मतवाद, अहंभाव, अर्थवाद आदि विकृतियों का निरसन करने के लिए पूर्वाचार्यों कृत आगम के आधार पर एवं तर्क, अनुमान, वैज्ञानिक परिप्रेक्ष्य में सत्य की कसौटी पर कस कर अत्यन्त दुरुह गूढ रहस्यों का प्रतिपादन इस कृति में किया है। अतः यह अनुपम, अलौकिक कृति सभी को पढने योग्य है। इस कृति का द्वितीय संस्करण हिन्दी भाषा में प्रकाशित है। नये द्वितीय संस्मरण का मूल्य 41/ रूपये है। पृष्ठ संख्या 227

## (2) अहिंसामृतम् :- II

जैन दर्शन में 'अनेकान्तदर्शन' के अतिरिक्त 'अहिंसा परमो धर्म' सिद्धान्त को ही सर्वोपरि माना गया है। अहिंसा न केवल इस जगत् में प्राणिमात्र को सुख, शांति देती है वरन् अमृत की भाँति मनुष्य को अमरत्व अर्थात् शाश्वत पद प्रदान करती है। लेकिन बहुत ही दुःख एवं पीडा का विषय है कि वर्तमान युग में हिंसा का बोलबाला संपूर्ण क्षेत्र में है। इसीलिए वर्तमान युग में अहिंसा की आवश्यकता



Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri



अधिक है, इस आवश्यकता को दृष्टि में रखकर पूज्य गुरूदेव ने विभिन्न धर्मों में वर्णित अहिंसा का समावेश इस कृति में किया है।

सभी महानुभाव इस कृति का अध्ययन करके इसे मात्र अध्ययन की परिधि में ही ना बाँधें बल्कि इस कृति में वर्णित आदर्शों को अपने जीवन में उतारें, दूसरों से उतरवायें एवं उतारने वालों की मुक्त कंठ से प्रशंसा अनुमोदना करके अहिंसा का विस्तृत रूप से प्रचार–प्रसार करें तभी इस कृति की रचना व आपके अध्ययन की सार्थकता / श्रेष्ठता हासिल होगी। इस कृति का प्रथम संस्करण हिन्दी भाषा में प्रकाशित है। मूल्य मात्र 6/ रूपये पृष्ठ 75

## (3) अति मानवीय शक्ति :- III

प्रत्येक आत्मा अक्षय अनन्त ऋद्धि, सिद्धि, बुद्धि शक्ति सम्पन्न है; परन्तु स्वयं के राग–द्वेष, मोह, काम क्रोधादि वैभाविक परिणमन के कारण स्वयं ही स्वयं के स्वाभाविक अक्षय, अनंत गुणों का हनन करता है। वैभाविक परिणति का त्याग करने पर स्वभाविक अचिन्त्य, चमत्कारपूर्ण गुण समूह प्रकट हो जायेंगे। जैसे सूर्य अखण्ड ज्योति पुंज हैं, परन्तु बादलों के आचरण के कारण सूर्यरश्मि ढक जाती है। जब बादल हटता जाता है तब सूर्य रश्मि प्रकट होती जाती है।

साधु संत, तपस्वी महापुरुष वैभाविक परिणमन को रोकने के लिए आध्यात्मिक साधना करते हैं, जिससे उन्हें अनेक चमत्कारपूर्ण ऋद्धि, सिद्धि, विभूति की उपलब्धि होती है। आधुनिक मनोवैज्ञानिक तथा वैज्ञानिक लोग भी इन्हीं शक्तियों के शोध–बोध में संलग्न हैं।

पूज्य गुरुदेव ने इस कृति में जैन, बौद्ध, हिन्दू, ईसाई धर्म तथा आधुनिक शोधपूर्ण अनेकों पुस्तकों में वर्णित ऋद्धि–सिद्धि, विभूतियों का सविस्तार सागोंपांग वैज्ञानिक तरीके से वर्णन किया है। पूज्य गुरूदेव ने अपने व्यापक अध्ययन, अनुभव पठन, चिंतन, मनन, सूक्ष्म सृष्टि एवं सत्य–तथ्यों के तलस्पर्शी ज्ञान के द्वारा यह सिद्ध किया है कि सामान्य मानव में ऋद्धि आदि शक्तियाँ नहीं पायी जाती हैं बल्कि उत्कृष्ट तप साधना के बल पर बिना इच्छा/आकाँक्षा के दिव्य, तेजस्वी पुरूषों में ये शक्तियाँ प्रकट होती हैं, इसीलिए गुरुदेव ने इस कृति का नाम ''अतिमानवीय शक्ति'' दिया है।

इस कृति की अत्यधिक लोकप्रियता होने के कारण इसका द्वितीय संस्करण


Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri



हिन्दी भाषामें प्रकाशित है। नये द्वितीय संस्मरण का मूल्य 31/- रू.
पृ.सं.-200

## (4) अयोध्या का पौराणिक, ऐतिहासिक एवं राजनैतिक विश्लेषण :- IV

श्री अयोध्या जी का इतिहास प्रसिद्ध है। यह जगविदित है तीर्थ क्षेत्र है जो 63 शलाका पुरूषों (24 तीर्थंकर, 12 चक्रवर्ती, 9 बलभद्र, 9 नारायणष 9 प्रतिनारायण) एवं न जाने कितने महापुरूषों की जन्मस्थली व कार्यस्थली रही है। न केवल प्रथम तीर्थंकर आदिनाथ भगवान् वरन् उनसे भी पहले और बाद में कितने-कितने महापुरुषों ने यहाँ जन्म लिया है। ऐसे धर्मपरायण महापुरुषों की जन्मस्थली साधनास्थली पर अचानक ही वैमनस्य, साम्प्रदायिकता व द्वेष की अग्नि संतप्त हो उठी। कुछ अदूरदर्शी व तथाकथित राजनीतिज्ञों एवं अतत्वज्ञ, अल्पपाठी, धर्मान्ध धर्माधिकारियों की स्वार्थपरता ने ही यह अग्नि सुलगायी थी। जिसके पीछे उनका हठ, दम्भ व अज्ञान उत्तरदायी था। इस दृढतापूर्ण दुष्कृत्य से राजनीति से परे के व्यक्ति भी क्षुब्ध होने लगे, निर्लिप्त व तत्वज्ञानी साधु समाज भी उद्वेलित हो उठा।

राष्ट्रप्रेमी पूज्य गुरूदेव की भावनायें भी ऐसा दुष्कृत्य सहन न कर सकी और गुरुदेव ने उसी समय अपनी लेखनी के द्वारा अधिकांशतः प्रमाण 'मुस्लिम धर्म के संस्थापक हजरत मुहम्मद' के (सन 570 ई.) जन्म से पूर्व के ग्रंथों तथा भारत में मुस्लिमों के आगमन के पश्चात् से देशी-विदेशी उपलब्ध लिखित दस्तावेजों के आधार पर एवं तिलोयपण्णति, हरिवंश पुराण, पद्मपुराण, जैन रामायण, वाल्मीकि रामायण, रामचरित्र मानस, महापुराण आदि अनेकों प्राचीन शास्त्रों के मूल प्रमाण देकर यह सिद्ध कर दिया कि अयोध्या एवं भगवान् राम की पूजनीयता या विश्वसनीयता को असत्य साबित नहीं किया जा सकता है।

जिज्ञासु, तार्किक सभी क्षेत्रों के विद्वान पाठक इस कृति का अध्ययन, मनन, चिंतन, करें तथा स्वयं निर्णय लें कि कैसे वास्तविकता को स्वीकार करें एवं दुराग्रह को छोड़कर व्यक्ति, समाज, नगर, देश, धर्म, संप्रदाय में शांति सद्भावना बनायें। किसी दूसरे अनैतिक राष्ट्रों के अनर्गल प्रचार से प्रभावित न होकर विदेशी व देशी षडयन्त्रों को स्वयं प्रकाशित करें। यही इस कृति को पढ़कर अपने जीवन



Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri



में क्रियान्वित करें। इस कृति का प्रथम संस्मरण हिन्दी भाषा में प्रकाशित है। मूल्य मात्र 10/– रूपये है। पृ.सं.– 134

## (5) अग्नि परीक्षा :- V

सत्य ही विश्व में सारभूत है, अमृत स्वरूप है, शाश्वतिक है। सत्य के बिना विश्व एक समय के लिए भी स्थिर नहीं रह सकता है। सत्य ही सार्वभौम है। अभी तक जितने महापुरुष हुए और होंगे वे सब सत्य को जानने के लिए, पाने के लिए प्रयत्नशील होते हैं। इन्हीं महापुरुषों की शृंखला में पूज्य कनकनंदीजी गुरूदेव है जिन्हें बाल्यकाल से सत्य ही सर्वप्रिय है। सत्य को उजागर करने के लिए एवं असत्य का समूल विनाश करने हेतु गुरूदेव ने इस कृति में धर्म सरल भी है क्लिष्ट भी है, उपलब्धि से भी सदुपयोग दुर्लभ, क्या केवल प्राचीन या अर्वाचीन होना गुण–दोष का मापदण्ड है ? सम्प्रदायवाद धूर्त राजनीति क्रूर आदि विषयों पर सविस्तार बड़ा रोचक, श्रेष्ठ, उत्कृष्ट प्रकाश डाला है। इस कृति का प्रथम संस्करण हिन्दी भाषा में प्रकाशित है। मूल्य मात्र 11/– रूपये है।

## (6) अपुनरागमन पथः मोक्षमार्ग :- VI

सम्यग्दर्शन, ज्ञान चारित्रात्मक मार्ग ही मोक्षमार्ग है। जैसे त्रिभुज क्षेत्र बनाने के लिए तीन बाहु की नितान्त आवश्यकता होती है; एक भी बाहु का अभाव होने पर त्रिभुज क्षेत्र नहीं बन सकता है उसी प्रकार सम्यक्दर्शन, ज्ञान, चारित्र तीनों के समन्वय से ही मोक्षमार्ग मिलता है।

इस छोटी सी पुस्तक में पूज्य गुरुदेव ने संक्षिप्त, सारगर्भित दार्शनिक एवं आध्यात्मिक प्रणाली से शोधपूर्ण व्याख्या करके यह सिद्ध किया है कि हे अनादिकालीन पथ भूले पथिक! तुम अपने पथ से भ्रष्ट होकर परिभ्रमण रूपी दुःख, क्लेश, संताप के पात्र मत बनो। मूल्य – 5/– रू.

## (7) अनेकान्त के प्रकाश में मोक्षमार्ग :- VII

वस्तु अनेक धर्मात्मक होने के कारण वस्तु स्वरूप अनेकान्तात्मक है। वस्तु में जो विभिन्न कार्य होते हैं, वे कार्य भी अनेक कारणों से होने से वे कार्य भी अनेकान्तात्मक है। प्रत्येक कार्य के लिए योग्य अन्तरंग एवं बहिरंग कारणों के


Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri



साथ–साथ विरोधी कारणों का भी अभाव होना चाहिए। जैसे कि भात बनाना एक कार्य है। इसके लिए चावल अन्तरंग कारण हैं परन्तु पानी, अग्नि, बर्तन आदि बहिरंग कारण हैं। गीला ईंधन आदि विरोधी कारण हैं। जब बर्तन में पानी रख कर आग से पानी को गर्म करके उसमें चावल डाला जाता है तब योग्य तापमान एवं समय प्राप्त करके चावल भात बन जाता है। उसी प्रकार मोक्षरूपी कार्य के लिए सम्यक्दर्शन, सम्यक्ज्ञान, सम्यक् चारित्र अन्तरंग कारण हैं, तो उत्तम शरीर, आर्य क्षेत्र, चतुर्थकाल जैसे उत्तम काल रूपी बाह्य कारणों के सद्भाव तथा कषाय, कर्म आदि विरोधी कारणों का अभाव चाहिए।

उपर्युक्त सविस्तार वर्णन इस कृति में गुरूदेव ने किया है। प्रथम दो अध्यायों में अनंतदर्शी का हेतु अनेकांत एवं मोक्षमार्ग में रत्नत्रय की भूमिका एवं तीसरे, चौथे, पांचवे अध्यायों में मोक्षमार्ग में सम्यक्दर्शन की भूमिका, मोक्षमार्ग में सम्यक्चारित्र की भूमिका, मोक्ष की परिभाषा एवं भेद, सार्वभौम वैश्विक सर्वोदय धर्म का स्वरूप इत्यादि विषयों की आगमोक्त उद्धरण–उदाहरणों सहित सविस्तार वर्णन किया है। इस कृति का प्रथम संस्मरण हिन्दी भाषा में प्रकाशित है। कृति का मूल्य 21/– रू. है। पृ.सं. 30 + 121

## (8) अनुभव चिंतामणि :- VII

कार्य करने के अनन्तर जो संवेदन / प्रतीति / अनुभूति होती है उसे अनुभव कहते हैं। जिस–जिस विषय संबंधी अनुभव हो जाता है उस–उस संबंधी ज्ञान, आचार–विचार, व्यवहार, पुस्तकीय, परकीय उपदेशात्मक ज्ञान आचार–विचार एवं व्यवहार से श्रेष्ठ, पारदर्शी, दृढ़, परिपूर्ण होता है। पुस्तकीय आदि ज्ञान मृगमरीचिका के समान या राष्ट्र के नक्शे के समान होता है तो अनुभवात्मक ज्ञान पिये हुए पानी के समान या यथार्थ में राष्ट्र के समान होता है। इसीलिए अनुभव चिंतामणि के समान होता है; जिसके स्पर्श मात्र से पतित / कलंकित / दूषित / निकृष्ट भावरूपी लोहा पवित्र / निष्कलंक / निर्मल / उत्कृष्ट भावरूपी सोना बन जाता है। अनुभव के बिना धर्म, ज्ञान, व्यवहार, पढ़ाई, ग्रंथ, उपदेश, पूजा–पाठ, जप–तप, ध्यान सब निस्सार है।

इस कृति में गुरूदेव ने अपने जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में जो अनुभव किये हैं उसे लिपिबद्ध किया है। अखिल जीव जगत् स्वानुभवरूपी चिंतामणि से अनंत



Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri



ज्ञान, सुख शांति, आनंद को प्राप्त करें तभी इस कृति की श्रेष्ठ सार्थकता सिद्ध होगी।

इस कृति का प्रथम संस्करण हिन्दी भाषा में प्रकाशित है। मूल्य मात्र 10/- रूपये है।

## (9) आत्मोत्थानोपायः तपः - I

सूर्य अनादिकाल से अविराम गति से अपने गतिपथ में प्रकाश एवं ताप को बिखेरता हुआ गमन करता है, इसीलिए सूर्य को तपन भी कहते हैं। यदि सूर्य अविराम गति से गमन नहीं करेगा तो उसका पतन होना अनिवार्य है, यह वैज्ञानिक सिद्धान्त है। इसीप्रकार जो तप, त्याग, दान, ज्ञान, वैराग्य के पथ पर सतत् गमन नहीं करेगा उसका भी पतन अनिवार्य है।

तप का सीधा सादा अर्थ है आत्मोन्नति के लिए श्रम करना परिश्रम करना, पुरूषार्थ करना। बाह्य द्रव्य के अवलम्बन से जो श्रम किया जाता है उसे बाह्य तप एवं अन्तरंग अवलम्बन से जो श्रम किया जाता है उसे अन्तरंग तप कहते हैं। परन्तु दोनों तपों में भाव विशुद्धि का होना अनिवार्य है। भाव विशुद्धि के अभाव में वह तप न रहकर बाह्य आडम्बर शुष्क साधन, शरीर पीड़ा के साथ पतन का भी कारण बन सकता है।

इन उपरोक्त बातों की इस कृति में महावैज्ञानिक पूज्य गुरुदेव ने आयुर्वेद, मनोविज्ञान, प्राकृतिक चिकित्सा एवं जैन, बौद्ध, हिन्दू आचार्यकृत ग्रंथों के आधार पर विषद / मार्मिक / तार्किक / रोचक / सुखद विवेचना की है। अखिल जीव जगत् इस कृति का अध्ययन करके अपने श्रेष्ठ मानव पर्याय की सार्थकता हासिल करें।

इस कृति का प्रथम संस्करण हिन्दी भाषा में प्रकाशित है। मूल्य 11/- रू. पृष्ठ - 60

## (10) आदर्श विचार विहार आहार :- II

प्रत्येक प्राणी सुख चाहते हैं दुःखसे डरते हैं। इसका कारण अन्वेषण करने पर पाया जाता है कि सुख चाहना एवं दुःखसे भागना स्वाभाविक है क्योंकि प्रत्येक जीव का स्व–शुद्ध स्वरूप सुखरूप है और दुःख वैभाविक / विकृत / अप्राकृतिक / अशुद्ध / मिश्र / पर स्वरूप है। इसीलिए प्रत्येक जीव का कर्त्तव्य के साथ अधिकार



Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri



भी है "सुख को प्राप्त करना एवं दुःख से निवृत्त होना।" सुख हमारा स्वभाव होते हुए भी हमें संसार अवस्था में सुख क्यों नहीं मिलता ? ऐसा महा प्रश्न होना स्वाभाविक है। इसका यथार्थ उत्तर यह है कि हमारा असम्यक् विचार, आहार, विहार आदि है। इसे ही आध्यात्मिक दृष्टि से धर्म कहते हैं।

आचरण ही प्रथम धर्म है। सम्यक् व्यवहार से ही सुख मिलता है। धर्म उसे कहते हैं जो सुख प्राप्त करावे। अधर्म उसे कहते हैं जो हमें सुख से वंचित करावे। हम आध्यात्मिक दृष्टि से, शारीरिक दृष्टि से, मानसिक दृष्टि से पतित होते हैं वही पाप है और पाप ही सर्व दुःखों का मूल है। पापकर्म से ही शारीरिक आदि दुःख मिलते हैं एवं शारीरिक स्वास्थ्य, मानसिक, आध्यात्मिक स्वास्थ्य खराब होते हैं। इसीलिए प्रत्येक प्राचीन आयुर्वेद साहित्य में स्वस्थ रहने के लिए, स्वास्थ्य में वृद्धि करने के लिए तथा उसको स्थिर करने के लिए पाप को त्यागकर धर्म का आचरण करने के लिए धर्म का उपदेश दिया गया है। शरीर की सुरक्षा एवं शारीरिक स्वास्थ्य भी धर्म साधन के लिए स्वीकार किया गया है इसीलिए भोजन पान आदि के द्वारा इस शरीर की स्थिति के लिए इस प्रकार का प्रयत्न करना चाहिए जिससे इंद्रियाँ वश में रहें एवं धर्म साधना भी होती रहे।

इस शोधपूर्ण कृति में पूज्य गुरुदेव ने जैन, हिन्दू आदि के अनेक आयुर्वेद एवं धार्मिक ग्रन्थों का अवलम्बन लेकर यह सिद्ध किया है कि धर्म केवल रूढ़ि नहीं है, परलोक सुधारने के लिए नहीं है, पापियों को डराने के लिए नहीं है धार्मिकों को प्रोत्साहित करने के लिए नहीं है; परन्तु धर्म समस्त शारीरिक मानसिक, आध्यात्मिक, व्यक्तिगत, समाजगत, इहलोक, परलोक सुख शांति, समृद्धि के लिए एक अनुभूत, परीक्षित, वैज्ञानिक अखण्डित व स्वस्थ प्रणाली है। सुख, शांति, समृद्धि की इच्छा रखने वाले इस कृति का अध्ययन करके जीवन में आदर्श विचार, विहार, आहार को अपनाते हुए शारीरिक स्वास्थ्य के साथ-साथ मानसिक, आध्यात्मिक स्वास्थ्य को प्राप्त करें। इस कृति का प्रथम संस्करण हिन्दी भाषा में प्रकाशित है। मूल्य- 35/- रूपये पृष्ठ- 305

## (11) आदर्श जीवन की प्रायोगिक क्रियायें :- III

जीवन को समुन्नत, समुज्ज्वल, आदर्श सुखमय बनाने के लिए सजग श्रद्धा, प्रखर प्रज्ञा एवं आदर्श चारित्र की नितांत, सर्वदा अनिवार्यता है। व्यक्ति का



Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri



आदर्श जीवन ही परिवार, ग्राम, समाज, राष्ट्र तथा विश्व की आदर्श आधार शिला है।

वर्तमान युग एक संक्रमण एवं क्रांतिकारी युग है। व्यक्ति में बौद्धिक विकास, उदार विचार, समन्वय की प्रवृत्ति आदि की तो वृद्धि हुई है परन्तु साथ–2 पाश्चात्य अंधानुकरण, फैशन, परावलम्बन, व्यसन आदि दुष्प्रवृत्तियों में भी वृद्धि हुई है। इस संक्रमण की अवस्था में यदि समुचित मार्गदर्शन नहीं मिलेगा, तो मानव विकास के परिवर्तन में विनाश हो जायेगा।

अखिल विश्व के मानवों को सही मार्गदर्शन मिले इस भावना उद्देश्य को लेकर पूज्य गुरुदेव ने आदर्श व्यक्ति के संपूर्ण सत् कर्त्तव्यों का वर्णन इस कृति में बड़ी ही सरल, रोचक, मधुर वैज्ञानिक शैली से किया है।

इस कृति का प्रथम संस्करण हिन्दी भाषा में प्रकाशित है।

मूल्य – 5 रू. पृष्ठ – 45

यह कृति विशेषतः धार्मिक कक्षा एवं शिविर में प्रयोग की जाती है।

## (12) आहारदान से अभ्युदय :- IV

श्रावकों के मुख्य 6 कर्तव्य होते हैं। इन 6 कर्तव्यों में कुंद–कुंद देव ने दान एवं पूजा को मुख्य कर्त्तव्य कहा है। यह श्रावक का मुख्य धर्म है। जो इन दोनों कर्त्तव्यों का पालन अपना मुख्य धर्म समझकर करता है वह श्रावक है, धर्मात्मा है, सम्यक्दृष्टि है।

इस कृति में पूज्य गुरुदेव ने दान का रहस्य, दाता के गुण, योग्य पात्र, चारों प्रकार के दानों का फल, महिमा आदि वर्णन किया है। आहारदान की महत्ता पर विशेष प्रकाश डाला है। आहारदान विधि, आहार की चीजों की मर्यादा, आहार कौन दे सकता है इत्यादि विषयों का विस्तृत, उदाहरण; गाथा, श्लोक सहित सांगोपांग वर्णन किया है। यह कृति सभी श्रावकों के लिए पठनीय है। इस कृति का संस्करण हिन्दी भाषा में प्रकाशित है। मूल्य – 21/ रू. पृ.सं. – 76

## (13) आध्यात्मिक्क मनोविज्ञान (इष्टोपदेश) :- V

इष्टोपदेश के मूल ग्रंथकर्ता आचार्य पूज्यपाद देवनन्दी हैं। इष्टोपदेश का प्रत्येक श्लोक क्रांतिकारी, विचारोत्पादक, मनोवैज्ञानिक, आध्यात्मिक तथा निश्चय–



Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri



व्यवहार परक है। इष्टोपदेश के संस्कृत टीकाकार पंडित आशाधरजी बहुप्रतिभाशाली, बहुश्रुत एवं सफल ग्रंथकार के साथ-साथ श्रेष्ठ टीकाकार भी थे।

इस ज्येष्ठ / श्रेष्ठ / महान् ग्रंथ की तौलनिक / वैज्ञानिक समीक्षा पूज्य कनकनंदी जी गुरूदेव ने करके इसका नया नाम ''आध्यात्मिक मनोविज्ञान'' इसीलिए दिया क्योंकि इसमें आध्यात्म का मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण से वर्णन किया गया है। अभी तक मनोविज्ञान में अनेक शाखायें विकसित हो गयी हैं। जैसे- बाल मनोविज्ञान, किशोर मनोविज्ञान, युवा मनोविज्ञान, प्रौढ मनोविज्ञान, वृद्ध मनोविज्ञान, शिक्षामनोविज्ञान, समाज मनोविज्ञान, अपराध मनोविज्ञान, रोग मनोविज्ञान, अतीन्द्रिय मनोविज्ञान आदि। इन सभी मनोविज्ञानों से भी श्रेष्ठतम मनोविज्ञान का बोध इष्टोपदेश में मिलता है। इसीलिए गुरुदेव ने इसका नाम 'आध्यात्मिक मनोविज्ञान' दिया। दूसरा कारण यह है कि वर्तमान युग वैज्ञानिक युग है। युगानुकूल परिस्थितियों के अनुसार और आवश्यकतानुसार सत्य-तथ्य का अविरोध कथन करना एवं व्यवहार करना रूढिवादी परम्परा तथा आचरणों से श्रेष्ठ है। आदिनाथ भगवान तथा महावीर भगवान ने कुछ अलग पद्धति से उपदेश किया है तो मध्य के 22 तीर्थंकरों मे अलग पद्धति से उपदेश किया।

प्राचीन शब्दों का ज्ञान आधुनिक व्यक्तियों को कम रहता है। इसीलिए नाम से ही वे उदासीन होकर उन ग्रंथों के अध्ययन से वंचित रह जाते हैं। इसलिए गुरुदेव ने इष्टोपदेश का आधुनिक नाम ''आध्यात्मिक मनोविज्ञान'' रखा है।

इस महान्, उत्कृष्ट ग्रंथ की वैज्ञानिक समीक्षा करके गुरूदेव ने जन-जन में स्थित गुप्त-सुप्त अनंत शक्तियों को उजागर करके 'सत्यं शिवं सुन्दरम्' सच्चिदानंद 'विज्ञान धन स्वरूप' 'आत्मानन्दस्वरूप एवं सत्य तथ्य का उद्घाटन करेने के लिए तथा पीड़ित अखिल जगत् को शाश्वतिक सुख शांति का मार्ग बताने के लिए यह उत्कृष्ट / श्रेष्ठ / महान् कार्य किया है। सुखाकांक्षी, अखिल जीव जगत् इस कृति का अध्ययन / मनन / चिंतन करके शाश्वतिक सुख शांति को प्राप्त करें ऐसी उदात्त / उदार / परोपकारमयी गुरूदेव की भावनायें / कामनायें हैं।

इस कृति का प्रथम संस्करण हिन्दी भाषा के साथ प्रकाशित है। सजिल्द मूल्य 51/-- रूपये मात्र है।

पृ.सं. 25 + 231



Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri



## (14) उपवास का धार्मिक एवं वैज्ञानिक विश्लेषण :-I

प्रायः प्रत्येक धर्म, जाति, देश में चिकित्सा प्रणाली में उपवास की परम्परा है और उसके महत्व को स्वीकार किया गया है। उपवास का अर्थ न केवल भोजन त्याग करना है, न केवल स्वास्थ्य रक्षा के लिए उपयोगी है परन्तु भोजन के साथ–साथ क्रोधादि भाव, तनाव, आर्त, रौद्र ध्यान, आरम्भ परिग्रहादि त्याग करके आत्म चिंतन, तत्व चिंतन, धर्मध्यान करने से शारीरिक, मानसिक, आध्यात्मिक रोग दूर होते हैं। परन्तु वर्तमान में उपवास की जो प्रणाली है उसमें अनेक भ्रांतियाँ, त्रुटियाँ एवं अनेक रूढ़ियाँ हैं। जिससे उपवास से लाभ कम एवं हानि अधिक होती है।

हानियों से बचें एवं लाभ का अर्जन करें इस बात को लक्ष्य करके पूज्य गुरूदेव ने विभिन्न आयुर्वेद, प्राकृतिक चिकित्सा, धर्मशास्त्रों का अध्ययन करके एवं स्वयं के प्रायोगिक अनुभव से इस कृति का सर्जन किया है। इस कृति में विभिन्न उदाहरण मूल प्राकृत, संस्कृत गाथा, श्लोक, प्रमाण देते हुए गुरूदेव ने प्रथम, द्वितीय, तृतीय आदि अध्यायों में उपवास का फल, उपवास में कर्त्तव्यविधि, उपवास के अतिचार इत्यादि विषयों का सविस्तार वैज्ञानिक / तार्किक / रोचक / सरल भाषा में वर्णन किया है। इस कृति का प्रथम संस्करण हिन्दी भाषा में प्रकाशित है। मूल्य 15/– रूपये पृष्ठ– 110

## (15) उठो जागो प्राप्त करो :- II

इस कृति में पूज्य गुरूदेव के क्रांतिकारी, शोधपूर्ण लेखों का संकलन है। इन लेखों में व्यक्ति निर्माण से लेकर राष्ट्र, विश्व को समृद्ध, समुन्नत, समुज्ज्वल बनाने के लिए मानव की गुप्त–सुप्त चेतना को जागृत करने के लिए जोरदार शंखनाद किया है।

इस कृति का हिन्दी, कन्नड़ भाषा में प्रथम संस्करण प्रकाशित है। मूल्य 15/–

## (16) ऋषभ पुत्र भरत से भारत :- I

भारतवर्ष अनादिकाल से त्याग, तपस्या, बलिदान तथा आध्यात्मिक गतिविधियों के कारण अन्य–अन्य देशों के लिए पूज्यनीय, गुरू स्वरूप रहा है। भारतीय सभ्यता संस्कृति धर्म एवं राजनीति को प्रभावित करने वाले एवं गतिविधियाँ देनेवाले





Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri



अनेक महापुरुष हो गये हैं, उनमें से उस महापुरुष रूपी नक्षत्र में चन्द्रमा स्वरूप पुण्यश्लोक भरत चक्रवर्ती हैं। भरत चक्रवर्ती में एक साथ भोग एवं योग, लक्ष्मी सरस्वती का समावेश था। भरत चक्रवर्ती का योगदान भारतीय संस्कृति के प्रत्येक पहलू में हुआ था। वे राजनीति–राजकार्य एवं प्रजापालन में इतने दक्ष हुए कि उनके नाम के कारण इस विशाल भूखण्ड का नाम अजनाभि देश से परिवर्तित होकर भारत देश पड़ा। कुछ वैदिक ऐतिहासिक विद्वान अपनी अल्पबुद्धि से सत्य–तथ्य को जाने बिना इस देश का नाम हिन्दुस्थान और इण्डिया आदि कहने लगे। इतना ही नहीं कुछ वैदिक विद्वानों के साथ–साथ भारत के कुछ विद्वान् भी शकुन्तला एवं दुष्यन्त के पुत्र भरत के नाम से इसका नाम भारत हुआ यह कहते हैं। परन्तु यह भी निराधार कोरी कल्पना है। वैदिक एवं जैन वाङ्मय में स्पष्ट रूप से अनेक स्थानों पर वर्णन किया गया है कि ऋषभदेव के ज्येष्ठ पुत्र भरत चक्रवर्ती के नाम से इस देश का नाम भारत रूप से विख्यात हुआ।

पूज्य गुरुदेव ने इस कृति में विभिन्न जैन, हिन्दू, वैदिक आदि ग्रंथों के सप्रमाण उदाहरण देते हुए यह सिद्ध किया है कि ऋषभदेव के पुत्र भरत के नाम पर इस देश का नामकरण हुआ। इस कृति में भरत चक्रवर्ती की गौरव गाथाओं का वर्णन सविस्तार सोदाहारण सहित है।

प्राचीन गौरव से प्रेरणा लेकर उज्ज्वल, आदर्शमय भविष्यत की ओर बढ़ना ही गुरूदेव का परम लक्ष्य है। इसीलिए यह कृति जन–जन की प्रेरणा स्रोत एवं लोकप्रिय होने के कारण इसका हिन्दी भाषा में द्वितीय संस्करण प्रकाशित हो गया है। मूल्य मात्र 21/ रू.

## (17) कर्म का दार्शनिक वैज्ञानिक विवेचन :- I

विश्व शाश्वतिक अनादि अनंत है। इस शाश्वतिक विश्व में संचरण करने वाले जीव भी अनादि से हैं। विश्व में जीव को परिभ्रमण कराने का जो कारण है वह है कर्म। बिना कर्म के संयोग से जीव की विचित्रपूर्ण विभिन्न अवस्था, गतिविधियाँ नहीं हो सकतीं। जो भव्य है वह अनादि परम्परा से प्रवाहमान कर्म को संपूर्ण रूप से नष्ट करके निष्कलंक, सिद्ध, बुद्ध बन जाता है, परन्तु जो अभव्य है वह कभी भी कर्मों के बंधन से विमुक्त होकर शाश्वतिक सुख का अनुभव नहीं कर सकता।



Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri



कर्म को प्रायः सभी दार्शनिक एवं धार्मिक परम्परायें स्वीकार करती हैं। कोई कर्म को भाग्य कहता है, तो कोई अदृष्ट, कोई दैव आदि। अन्यान्य दर्शन कर्म को स्वीकार करते हुए भी, उसका प्रतिपादन करते हुए भी जैनधर्म में जो सूक्ष्म वैज्ञानिक, तर्कपूर्ण, गणितिय, विस्तृत वर्णन है, वैसा वर्णन अन्य किसी दार्शनिक या धार्मिक साहित्य में देखने को नहीं मिलता है।

इस कृति में पूज्य गुरूदेव ने हिन्दू, बौद्ध, जैन दर्शन में वर्णित कर्म सिद्धान्त का आलम्बन लेकर बहुत ही सूक्ष्म / विशद मार्मिक / हृदयग्राही / दार्शनिक / वैज्ञानिक / आध्यात्मिक रूप से विवेचना / गवेषणा / समीक्षा की है।

प्राकृत / संस्कृत मूल गाथा, श्लोकों, उदारणों के द्वारा प्रथम अध्याय में कर्म की प्रबल शक्ति, कर्म की सिद्धि, द्रव्यकर्म, भाव कर्म की विशद विवेचना है। द्वितीय अध्याय के अंतर्गत आस्रव आदि के लक्षण भेद, विशेषतायें, आस्रव के विभिन्न कारण इत्यादि विषयों की सविस्तार विवेचना है। तीसरे अध्याय में कर्म बंध होने का दार्शनिक एवं वैज्ञानिक कारण, उसके भेद, लक्षण, प्रकृतियाँ उत्कृष्ट व जघन्य स्थिति, अनुभाग, प्रकृति, प्रदेश बंध का सविस्तार विस्तृत वर्णन है। चौथे व पांचवें अध्याय में पुण्य एवं पाप कर्म के फल, विविध कर्मों के वैचित्र्यपूर्ण फल, विभिन्न युग में कर्मानुसार सुख–दुःख, राष्ट्र में संकट आने का कर्म, युद्ध होने का कर्म, नरसंहार का कर्म, पुरूषार्थ से कर्म में परिवर्तन पुरूषार्थ की अन्तिम विजय, कर्म त्याग का क्रम, विभिन्न दर्शनों में वर्णित कर्म की विशद, सोदाहरण व्याख्या है। इस कृति को लिखने में गुरूदेव का मूल उद्देश्य / लक्ष्य / भावना कामनायें यही है कि सुखार्थी मुमुक्षुजीव कर्म का कारण, कर्म का फल, कर्म को नष्ट करने के उपाय जानकर, मानकर एवं अनुकरण करके निष्कर्म बनें।

इस कृति का द्वितीय संस्मरण हिन्दी भाषा में प्रकाशित है। नये संस्करण का मूल्य 45/– रू. पृष्ठ संख्या

## (18) क्रांति के अग्रदूत :- II

क्रांति का अर्थ है विकास / उन्नति / प्रगति / सर्वोदय सुख–शांति की उपलब्धि। इसके सामाजिक, आर्थिक, नैतिक, यान्त्रिक, औद्योगिक, बौद्रिक, शैक्षिक, राजनैतिक, आध्यात्मिक, धार्मिक आदि अनेक भेद हैं। परन्तु वही क्रांति यथार्थ से क्रांति है, जिससे अक्षय, अनंत, शाश्वतिक सुख शांति की उपलब्धि हो। इसकी



Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri



उपलब्धि आध्यात्मिक क्रांति, से ही हो सकती है अतः आध्यात्मिक क्रांति ही यथार्थ में सर्वश्रेष्ठ क्रांति है इसीलिए शांति के लिए आध्यात्मिक क्रांति का परिज्ञान होना अनिवार्य है। आध्यात्मिक क्रांति के परिज्ञान के लिए आध्यात्मिक क्रांति के अग्रदूत का परिज्ञान होना आवश्यक है; क्योंकि क्रांति के जीवन्त प्रायोगिक प्रयोगशाला क्रांतिकारी महापुरुष ही होते हैं।

क्रांति के बोलबाला युग में पूज्य गुरूदेव ने क्रांति के अग्रदूतों का व्यक्तित्व किस प्रकार का होता है, आध्यात्मिक क्रांति के अनुपूरक स्वरूप राजनैतिक, सामाजिक आदि क्रांति के अग्रदूतों का इस कृति में वैज्ञानिक, गणितीय, सरल, मार्मिक रोचक शैली में वर्णन किया है।

इस कृति का अध्ययन करके आधुनिक मानव को ज्ञान करना चाहिए कि यथार्थ क्रांति को लाने के लिए क्रांतिकारी युगपुरूषों, नेताओं एवं क्रांति के इच्छुकों को किन–किन व्यक्तित्व एवं गतिविधियों को अपनाना चाहिए। इस बात का सही दिशा बोध इस कृति का अध्ययन करने पर ही ज्ञात होगा।

इस कृति का द्वितीय संस्करण हिन्दी भाषा में प्रकाशित है। नये संस्करण का मूल्य 21/– रूपये हैं। पृष्ठ संख्या– 150 है।

## (19) कथा चिन्तामणि :- III से VIII

बोधप्रद कथाओं के अध्ययन–मनन–चिंतन से मानसिक शांति के साथ–साथ सत् प्रेरणायें भी मिलती हैं। कथा के नायक किस प्रकार की जटिल परिस्थितियों को पार करके आगे बढ़ते हैं, इसका दृश्य मानस पटल पर होने के कारण विज्ञ पाठक भी महापुरुषों के समान विकट परिस्थितियों में आगे बढ़ने का साहस करते हैं। इसीलिए सत्कथाओं का अध्ययन मानव के लिए दृढ़ अवलम्बन भूत है। परन्तु वर्तमान समय में कपोल कल्पित, अतिरंजित, जासूसी, तिलस्मी, रोमान्टिक, सामाजिक उपन्यास आदि साहित्यों का अधिक प्रचलन हो रहा है, जिसके कारण आज मानव को मानसिक पोषक तत्व तो नहीं मिल रहा है किन्तु विध्वंसक तत्व अधिक मिल रहा है। सिनेमा, नाटक, टी.वी. रेडियो, समाचारपत्र आदि में भी अश्लील, अनैतिक, कथा, कहानी, लेखों का अधिक प्रचार--प्रसार हो रहा है इसीलिए तो आज देश–विदेश में अन्याय, अत्याचार, भ्रष्टाचार, पापाचार, आतंकवाद, गुण्डागर्दी दिनोदिन बढ़ती जा रही है। समाज में, राष्ट्र में, विश्व



Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri



में नैतिक उत्थान चाहिए तो नैतिक साहित्य का अधिक प्रचार–प्रसार होना चाहिए; क्योंकि जो बड़ीबड़ी क्रांतियां हुई उनके पीछे भी साहित्य का बड़ा योगदान रहा है। शिक्षा में भी नैतिक साहित्य व नैतिक शिक्षा के अभाव में विद्यार्थी साक्षर होते हुए भी राक्षस, मूर्ख बने रहे हैं। इसीलिए शिक्षा प्रणाली में नैतिक साहित्य व नैतिक शिक्षा की आवश्यकता ही नहीं, अनिवार्यता भी हैं। इन सभी उपर्युक्त सत् उद्देश्यों को लेकर ही पूज्य गुरुदेव ने जैन–अजैन, बौद्ध, देश–विदेश की नैतिक, बोधप्रद कथाओं का संकलन किया है। इन संकलनों को विभिन्न पुस्तकों में विभक्त किया गया है।

1. इस कृति का मूल्य –11/– रू. पृ.सं. 8 + 97
2. कथा त्रिवेणी – मूल्य 8/– रू. प्रथम संस्करण
3. कथा पारिजात – मूल्य 15/– रू. प्रथम संस्करण पृ.सं. 129
4. कथा पुष्पाञ्जली– मूल्य 15/– रू. प्रथम संस्करण
5. कथा सौरभ– मूल्य 21/– रू. प्रथम संस्करण
6. कथा सुमन मालिका– मूल्य 15/– रू. प्रथम संस्करण

## (20) क्रांति दृष्टा प्रवचन :- IX

आज का प्रत्येक प्राणी दुःखी, अशान्त नजर आ रहा है क्योंकि वह बाह्य ढोंग दिखावे में अपनी श्रेष्ठता मानता है। इस बाह्य ढोंग दिखावे का निराकरण शिक्षा, सुसंस्कारों द्वारा ही हो सकता है। पूज्य गुरुदेव जगह–जगह अपनी अमृतमयी दिव्यदेशना के द्वारा सभी को शिक्षा से सुसंस्कारित करते हैं। सभी के उज्ज्वल जीवन का निर्माण हो, अज्ञानता का अंधकार विघट करके ज्ञान का प्रकाश जगे एवं सभी के जीवन में सुख, शांति, समृद्धि के पुष्प खिलें ऐसी शुभ महती मंगल, उदार भावनाओं से परिपूरित इस कृति में कुछ अमृत कण समायोजित हैं। पाठकगण इस कृति को पढ़कर अपनी जीवनरूपी बगिया में सत्आचरण, महत्गुणों के पुष्प खिलायें। इस कृति का प्रथम संस्करण हिन्दी भाषा में प्रकाशित है। मूल्य– 10/– रूपया पृष्ठ 55 है।

## (21) गुरू अर्चना :- I

इस कृति में पूज्य आचार्य गुरूदेव की पूजन, आरती, भक्ति, वंदना, भजनों का संकलन है। मूल्य – 3/– रू.



Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri



## (22) जीने की कला :- I

तीन लोक में तीन काल में मानव जीवन ही श्रेष्ठ जीवन है। क्योंकि मानव योग्य, सम्यक् पुरुषार्थ से मानव से महामानव एवं महामानव से भगवान् बन सकता है। ऐसी महान् दुर्लभ मानव पर्याय को पाकर उसका सदुपयोग करना मानव का परम कर्त्तव्य है। महान् कर्त्तव्यों का निर्वहन वही करेगा जिसको जीने की कला का ज्ञान हो।

पूज्य गुरुदेव ने इस कृति में जीने की कला कैसे प्राप्त होती है इसका वर्णन किया है। इस कृति में सप्त व्यसनों का त्याग, सामाजिक, पारिवारिक एकता, कर्त्तव्य परायणता आदि जीवनोपयोगी विषयों पर सुंदर विवेचना करके दिग्भ्रमित समाज को सही दिशा देने का पूर्ण प्रयत्न, पुरूषार्थ किया है। सभी प्राणी जीने की कला सीखकर स्व–पर जीवन रूपी बगिया में सुख, शांति, समृद्धि के पुष्प पल्लवित–पुष्पित करें।

इस कृति का प्रथम संस्करण हिन्दी भाषा में प्रकाशित है।

मूल्य 7/- रू. पृष्ठ- 50

## (23) जिनार्चना (भाग एक एवं दो) :- II & III

जैन धर्म अनेकान्तात्मक वैज्ञानिक वस्तु स्वातन्त्र्य धर्म है। जैन दर्शनानुसार प्रत्येक जीव ही नहीं बल्कि प्रत्येक जड़, चेतनात्मक द्रव्य स्वयंभू, परम स्वातन्त्र्य को धारण करने वाला है अर्थात् प्रत्येक द्रव्य भले वह चेतन हो, अचेतन हो, क्षुद्र हो, विशाल हो स्वसत्ता से अन्य द्रव्य से स्वतन्त्र होकर स्वयं ऐश्वर्यशाली है। इसीलिए एक द्रव्य के ऊपर दूसरे द्रव्य का किसी प्रकार से अधिकार नहीं है। द्रव्य दृष्टि से न कोई स्वामी है, न भृत्य, न कोई पूज्य है, न कोई अपूजक, न कोई भक्त है, न कोई भगवान्। इसीलिए स्वभावतः शंका होती है कि जैनधर्म में अर्चना, पूजा, भक्ति क्यों? व्यवहारिक दृष्टि की अपेक्षा से चुम्बक के घर्षण रूपी संघर्ष से लोह पिण्ड चुम्बकत्व प्राप्त कर लेता है, प्रज्ज्वलित दीपक के संपर्क से बुझा दीपक प्रज्ज्वलित हो जाता है, अग्नि के संपर्क से जल, घी, धातु, आदि उत्तप्त हो जाते हैं ठीक इसी प्रकार गुणी, पूज्य पुरूषों की संगति, अर्चना, वंदना भक्ति, पूजा, गुणानुवाद,विनय आदि के कारण भक्त की आत्मा में निहित गुप्त--



Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri



सुप्त आदर्श शक्तियाँ भी उजागर हो जाती हैं। इसीलिए इस मनोवैज्ञानिक सिद्ध सिद्धान्तानुसार जैन धर्म में पूजा, अर्चना, भक्ति, वंदना की जाती है। अन्य धर्मों में भी अपने पूज्य पुरूषों के प्रति गुणानुरागी रूपी भक्ति एवं श्रद्धा की परम्परा है। भक्त भगवान् के प्रति स्वयं की भक्ति एवं समर्पित भाव को द्रव्य एवं भाव रूप में व्यक्त करता है।

पूज्यं गुरूदेव ने समस्त विवादों एवं विग्रह को समूल समाप्त करने के लिए ही इस पुस्तक की रचना की है। जिनार्चना की वास्तविक विधि क्या होनी चाहिए। आदि विधियों का 50–60 आगम प्रणीत ग्रंथों से संकलन करके एक अनुपम कृति की रचना की है। सचित्त पूजा, अचित्त पूजा को लेकर चल रहे विवादों का समाधान आगमोक्त विधि से किया गया है। पुस्तक का अध्ययन करने के बाद संशय और विवाद का विकल्प नहीं उठता है। पुस्तक में आगमोक्त, सत्य प्रमाण होने के कारण जन–जन में इसकी माँग हैं इसीलिए 'जिनार्चना भाग एक एवं दो' के अभी तक तीन संस्करण निकल चुके हैं। नये संस्करण की प्रति का मूल्य 51/– रू., 21/– रू. हैं। ये पुस्तकें हिन्दी भाषा में छप चुकी हैं।

## (24) ज्वलन्त शंकाओं का शीतल समाधान :- IV

जैनधर्म में अनेकान्त स्याद्वाद, अहिंसा, अपरिग्रह आदि श्रेष्ठ / उत्कृष्ट / महान–महान सिद्धान्तों के कारण पश्चिम के अनेक राजनीति विशारद, ज्ञानी–मनीषी, तत्ववेत्ता दार्शनिक, धर्मविदों ने जैनधर्म को सर्वोच्च, शांतिप्रिय, समन्वयात्मक, वैज्ञानिक, विश्वधर्म के रूप में हृदय से स्वीकार करके मुक्तकंठ से प्रशंसा की है।

इस प्रकार अत्यन्त उदार अनेकान्त / स्याद्वादमय / समन्वयात्मक धर्म में आज अनेकानेक शंका–प्रतिशंका, वाद–विवाद, क्रिया–प्रतिक्रिया, घर्षण--संघर्षण आदि चल रहे हैं। जो जैन धर्म समस्त विषमताओं को नष्ट करनेवाला था। वही आज विषमता से भरा हुआ है। पहले दीपक के नीचे अंधेरा था। अभी विद्युत दीपक के ऊपर अंधेरा है। अग्नि को शांत करने के लिए जब तक ईंधन डालते रहेंगे तब तक अग्नि शांत न होकर अधिक प्रज्ज्वलित होती जायेगी। इसी प्रकार जब तक शंकाओं को शांत करने के लिए कुतर्क–वितर्क रूपी ईंधन डालते जायेंगे तब तक शंकारुपी अग्नि ज्वाला और बढ़ती जायेगी। परन्तु प्रज्ज्वलित अग्नि पर जल डालने से वह शांत हो जाती है उसी प्रकार शंकारूपी अग्नि पर अनेकांत स्याद्वादमय सुतर्कमय



Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri



समाधानरूपी जल डालने पर शंकारूपी अग्नि शांत हो जायेगी।

वर्तमान में दिगम्बर धर्म में जो अनेक ज्वलन्त शंकायें अपनी प्रलयकारी भयंकर ज्वालाओं से दह–दह जल कर धर्म को ही भस्म कर रही हैं उसको यथाशक्ति, शीतल करने के लिए पूज्य गुरूदेव ने अनेक समाधान रूपी शीतल जलकणों की वर्षा की हैं। इस कृति में प्रथम अध्याय से लेकर अन्तिम अध्याय तक में विभिन्न ज्वलन्त शंकाओं का आगमोक्त, वैज्ञानिक पद्धति से गाथा सूत्र, श्लोक आदि द्वारा शीतल समाधान किया है। इस कृति का द्वितीय संस्मरण हिन्दी भाषा में प्रकाशित है। नये संस्मरणका मूल्य– 41/– रूपये है। पृष्ठ संख्या–230

## (25) जैन धर्मावलम्बी संख्या और उपलब्धि :- V

जैन धर्म समस्त अच्छे विशेषणों से, गुणों से युक्त है। अर्थात् जैनधर्म प्राचीन है, गुणवत्ता से युक्त हैं, सत्य है, शिव है, सुंदर है। तथापि वर्तमान भारत में तथा आधुनिक पृथ्वी में इसको स्पष्टरूप से पालन करने वाले मनुष्यों की संख्या कम है और जैनधर्म की गुणवत्ता / महानता के अनुपात में जैनियों की गुणवत्ता व उपलब्धि कम है। यह बहुत बड़ा प्रश्न एवं जिज्ञासा है।

परम पूज्य गुरूदेव ने इस कृति में अपने दीर्घ अनुभव, अनुसंधान / शोध–बोध के साथ–साथ पूर्वाचार्यकृत अनेक साहित्यों के उदाहरणों की समायोजना की है। यह कृति सभी के पढ़ने के लिए अति योग्य है। इस कृति को पढ़कर सभी जैनधर्म का प्रचार–प्रसार करें एवं जैनधर्म की उत्कृष्टता / श्रेष्ठता / महानता को समझें। ऐसी शुभ, मंगल, पवित्र, उदार, उदात्त भावना के साथ इस कृति का प्रथम संस्करण हिन्दी भाषा में प्रकाशित है। मूल्य 21/– रू. पृष्ठ–110

## (26) तत्वानुचिंतन :- I

"यादृशी भावना यस्य सिर्द्धिर्भवति तादृशी" जिसकी भावना जिस प्रकार की होती है उसकी कार्य सिद्धि भी तद्नुकूल होती है। "As you think so you become" जैसा सोचोगे वैसा बनोगे। खराब विचार करोगे तो खराब बनोगे, उत्तम विचार करोगे तो उत्तम बनोगे। "भावना भव नाशिनी भावना भव वर्द्धिनी"। भावना से अनंत दुःख के कारणभूत भव वृद्धि होती है एवं भावना से संसार विलय को प्राप्त हो जाता है। जैसे एक लोहखण्ड अन्य एक चुम्बक से घर्षण को



Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri



प्राप्त कर या विद्युत शक्ति से भावित होकर चुम्बकरूप में परिणमन करने लगता है उसी प्रकार जो जिस भावना रूपी शक्ति से भावित होता है वह उस रूप में परिणमन हो जाता है।

भाव ही प्राणशक्ति है। भाव विद्युत एवं चुम्बक के समान शक्तिशाली है। भाव से रहित जीव जड़वत् हो जाता है। इसीलिए प्राचीन महर्षियों ने अनुभव की कसौटी पर परीक्षण–निरीक्षण करके कहा है कि जिसकी मानसिक स्थिति स्थिर उन्नत, उदार, पवित्र है उसका भाग्य उन्नत है, जिसका मानसिक स्थिर कुत्सित, नीच, अपवित्र है उसका भाग्य भी दीन–हीन है अतः सम्पूर्ण कार्यों में भावों की प्रमाणता सर्वोपरि है।

विभिन्न प्राचीन आर्ष सत्य शोधकों के / सत्य उपासकों के अमूल्य ग्रंथों की सहायता से पूज्य गुरूदेव ने इस कृति में विभिन्न प्रकार की भावनाओं का तार्किक/मनोवैज्ञानिक पद्धति से सविस्तार वर्णन किया है। यह कृति आज के दुःखी जनों को उनके दुःखों से उबारने में पूर्ण हस्तावलम्बन होगी। प्रबुद्ध पाठकवर्ग इस कृति का अध्ययन करके स्वरूप एवं विश्व स्वरूप का परिज्ञान करके परम तत्व स्वरूप एवं स्वआत्म तत्व को प्राप्त करें। इस कृति का प्रथम संस्करण हिन्दी भाषा में प्रकाशित है। मूल्य - 25/– रूपये पृष्ठ–140

## (27) दिगम्बर साधु का नग्नत्व एवं केशलोंच क्यों?:-I

सरल, सहज, यथाजात, बालकवत् निर्विकार दिगम्बर जैन साधुओं को देखने मात्र से विभिन्न मनुष्यों में विभिन्न प्रकार के मनोभाव शंका, कुशंका, तर्क–वितर्क उठना स्वाभाविक है। उनके विभिन्न प्रकार के मनोभाव एवं शंकाओं के समाधान के लिए तर्कपूर्ण नैतिक एवं आध्यात्मिक दृष्टिकोण से विभिन्न उदाहरणों सहित पूज्य गुरूदेव ने इस कृति की रचना की है।

इस कृति के चौदहवाँ संस्करण हिन्दी, अंग्रेजी गुजराती, उर्दू, मराठी भाषाओं में प्रकाशित हैं। मूल्य मात्र 5/– रूपया, पृष्ठ– 40

## (28) दंसणमूलो धम्मो तहा संसारमूल हेदु मिच्छत्तं :- II

मिथ्यात्व कर्म बंध के लिए मुख्य कारण है। कषाय आदि से कर्म बंध होने पर भी मिथ्यात्व से और भी अधिक कर्म बंध होता है इसीलिए आस्रव एवं बंध प्रक्रिया में मिथ्यात्व अकिंचित्कर नहीं है, अतिकर है।



५ Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri



पूज्य गुरुदेव ने धवला, जयधवला, आदि लगभग 60–70 आर्षग्रंथों के आधार पर यह सिद्ध किया है कि मिथ्यात्व संसार का मूल हेतु है।

अंधकार का परिशोधन जैसे अंधकार से नहीं होता वैसे ही मिथ्यात्व का परिशोधन मिथ्यामत से नहीं होता है लेकिन अंधकार का परिशोधन जैसे प्रकाश से होता है वैसे ही मिथ्यामत का परिशोधन सत्य मत से होता है। इसी लक्ष्य/उद्देश्य को लेकर पूज्य गुरुदेव ने यह पुस्तक लिखी है। सत्य जिज्ञासु सत्य को जाने माने एवं प्राप्त करें तथा मिथ्यात्व का नाश करके सम्यक्त्व को प्राप्त करके मोक्ष सुख को प्राप्त करें।

इस कृति का प्रथम संस्करण हिन्दी भाषा में प्रकाशित है। मूल्य– 15/– रू पृष्ठ– 155

## (29) धर्म विज्ञान बिन्दु :– I

सुख शांति का एक मात्र उपाय धर्म है। इसीलिए आचार्यों ने कहा है कि "पापः शत्रु धर्मः बन्धुः" उत्तम सुख की प्राप्ति धर्म से ही संभव है अतः धर्म को जानने की अभिरुचि प्रत्येक प्राणी में होती है। लेकिन धर्म के सम्यक् रहस्य को किस प्रकार जाना जाये इस बात का परिज्ञान कराने के लिए आध्यात्मिकता से ओत–प्रोत, ज्ञान वैराग्य की शक्ति से सम्पन्न, विज्ञान के परिनिष्ठित मनीषी पूज्य गुरूदेव ने अपनी सुपरिमार्जित सुबोध मार्मिक–तार्किक रोचक / मोहक शैलीमें इस कृति में यह सिद्ध किया है कि धर्म के अभाव में विज्ञान झूठा है और विज्ञान को छोड़ देने पर धर्म महत्वहीन होता है। आज का युग तार्किक प्रधान है अतः इस बात की परम आवश्यकता है कि विज्ञान और आध्यात्मिकता का योग्य समन्वय किया जाये। जीवन के अन्तरंग और बहिरंग उभय पक्ष हैं। अन्तरंग जीवन का विकास आध्यात्मक द्वारा संभव है और बाह्य जीवन का विकास विज्ञान द्वारा संभव है इसी दृष्टि का आशय इस कृति की विशिष्टता है। अतः विज्ञान में रूचि रखने वाले प्रबुद्ध जन इस कृति से निश्चित रूप में धर्म के स्वरूप को आत्मसात् करेंगे।

इस कृति का प्रथम संस्करण हिन्दी भाषा में प्रकाशित है। मूल्य –21/– रू पृष्ठ–130

## (31)धर्म एवं स्वास्थ्य विज्ञान (भाग एक एवं दो): IIसेIII

धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष के लिए शारीरिक, मानसिक, आध्यात्मिक स्वास्थ्य की आवश्यकता है। तीनों स्वास्थ्य में आध्यात्मिक स्वास्थ्य सर्वोपरि है; लेकिन



Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri



आध्यात्मिक स्वास्थ्य को प्राप्त करने के लिए मानसिक एवं शारीरिक स्वास्थ्य की भी आवश्यकता है। इसीलिए जैनाचार्यों ने आयुर्वेद की रचना की। आचार्यों का आयुर्वेद ग्रंथों की रचना करने के पीछे यही मुख्य हेतु था कि शरीर की रक्षा धर्म पालन के लिए हो। मगर शरीर रोगी है तो धर्म पालन की बात तो बहुत दूर वह प्रतिक्षण दुःख, अशांति, पीडा, का ही अहसास–अनुभव करेगा। मनुष्य जन्म का सार धर्म पालन करने में ही है इसीलिए पूज्य गुरूदेव ने सभी प्राणियों के प्रति करुणा, ममतामयी भावना रखते हुए, स्वस्थ शरीर से धर्म कर सकें इस बात को सोचते हुए इस कृति को दो भागो में लिखा। स्वास्थ्य क्या है, स्वास्थ्यप्रद दिनचर्या विधि, स्वास्थ्य साधन के विभिन्न उपाय जैसे– मनोवैज्ञानिक चिकित्सा, शाकाहार चिकित्सा, स्वास्थ्यप्रद विभिन्न औषधियों के नाम, शारीरिक स्वास्थ्य का रहस्य क्या, कैसे, भोजन आदि की विस्तृत व्याख्या इस कृति के अंतर्गत आचार्य गुरूदेव ने विभिन्न आयुर्वेद शास्त्रों का अवलम्बन लेकर लीया है। इस कृति के दोनों भागों का द्वितीय संस्करण हिन्दी भाषा में प्रकाशित है। प्रथम भाग का मूल्य 20/– रू. एवं द्वितीय भाग का मूल्य 51/– रू. मात्र है।

## (31) धर्म-दर्शन-विज्ञान प्रवेशिका (प्रथम, द्वितीय, तृतीय भाग) :- IV से VI

बच्चा मानव समाज का जनक, महत्वपूर्ण इकाई, कर्णधार, भविष्य की धरोहर, उन्नायक है। इसीलिए बालक को सभ्य, सुसंस्कृत, उन्नत बनाना मानों व्यक्ति, समाज, परिवार, राष्ट्र, धर्म, सभ्यता, संस्कृति को उन्नत बनाना है। इसीलिए सर्व उन्नति के मूल कारण स्वरूप बालकों को सभ्य, विनयशील, सुसंस्कारवान, ज्ञानी, धीर–वीर, देशभक्त, कर्त्तव्यनिष्ठ, अनुशासन प्रिय, समयानुबद्ध, देव–शास्त्र–गुरु भक्त, माता पिता के आज्ञाकारी, त्यागी, धर्मपरायण बनाना, मात–पिता, अभिभावक, गुरुजन एवं राष्ट्र के सर्वोपरि नैतिक उद्देश्य को लेकर गुरुदेव ने इन कृतियों की रचना की है।

गुरूदेव बाल्यावस्था से ही बच्चों को अधिक महत्व देते हैं। गुरुदेव का इतना विश्वास मंदिर–मूर्ति, पंचकल्याणक, प्रतिष्ठा आदि में नहीं है जितना कि बालकों को योग्य सुसंस्कृत, सुसंस्कारवान बनाने में है। गुरुदेव बाल्यावस्था से ही बच्चों



Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri



को निःशुल्क पढ़ाना, गरीब, दीन, अनाथ बच्चों की तन-मन-धन समय आदि से सब प्रकार की सेवा सहायता करते थे। साधु होने के बाद भी बच्चों को, अपने एवं अन्य संघ के साधु साध्वियों का पढ़ाना, शिविर, संगोष्ठी करना इत्यादि कार्य करते हैं।

आधुनिक बच्चों को आधुनिक परिवेश में शिक्षा देने के लिए, शिविर में प्रशिक्षण देने के लिए, धार्मिक स्कूलों में पढ़ाने के लिए सरल, तुलनात्मक, वैज्ञानिक कारणों सहित इस धर्म-दर्शन-विज्ञान प्रवेशिका के तीन भागों की रचना की है। धर्म, ज्ञान एवं विज्ञान को जैन-अजैन शिक्षित व्यक्ति द्वारा अधिक पसन्द करने के कारण इसका अंग्रेजी में भी संस्करण प्रकाशित है। जिसका नाम है-

"Philosophy of scientfic religion"

इस पुस्तक की शिविर आदि में अध्ययन हेतु, अत्याधिक लोकप्रिय, सरल है। वैज्ञानिक होने के कारण हिन्दी एवं अंग्रेजी भाषा में षष्ठम संस्करण प्रकाशित हो गये हैं। नये संस्करणों का तीनों भागों का मूल्य इस प्रकार है

प्रथम- 11/- रू, द्वितीय भाग-21/- रू., तृतीय भाग-25/- रू.

अंग्रेजी संस्करण का मूल्य -21/- रू.

## (32) धर्म दर्शन एवं विज्ञान :- VII

***धर्म :*** सभ्यतापूर्ण, सुसंस्कारित, नम्र, हिताहित विवेक से सुरभित, आहार विहार, आचार-उच्चार को धर्म कहते हैं या विज्ञान से परिक्षित, दर्शन से निर्णीत उस आध्यात्मिक (पवित्र भावनात्मक) मार्ग को धर्म कहते हैं जिसपर आचरण करने से जीव को शाश्वतिक, अभौतिक, अतीन्द्रिय, आत्मोत्थ अपरिमित, अकथनीय, निरुपम सुख शांति मिलती है।

***दर्शन :*** विभिन्न युक्ति, तर्क, मनन, चिंतन, अध्ययन, परीक्षण, निरीक्षण, समीक्षा, मीमांसादि से सत्य का साक्षात्कार करना दर्शन है।

***विज्ञान :*** इंद्रियों से, यंत्रादि भौतिक साधनों से सत्य का, भौतिक जगत् का, प्रकृत्यादि का यत्किञ्चित् परीक्षण करना, विश्लेषण करना, निरीक्षण करना, अनुसंधान करना, शोध करना, बोध करना, खोज आदि विज्ञान है।

'धर्म दर्शन एवं विज्ञान' नामक कृति में आचार्य गुरूदेव ने तौलनिक समन्वय दृष्टिकोण से जैन-दिगम्बर, श्वेताम्बर, बौद्ध, हिन्दू, ईसाई, मुस्लिम धर्मादि का



Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri



समावेश किया है। दर्शन में जैन, बौद्ध, योग, सांख्य, न्यायिक आदि प्राचीन दर्शन एवं यूरोपीयादि पाश्चात्य दर्शनों का समावेश किया है। विज्ञान में जैन जीव विज्ञान, भौतिक, रासायनिक, मनोविज्ञान, आध्यात्मिक विज्ञान, प्राचीन यंत्र–वाहन, अस्त्र–शस्त्रों का वर्णन किया है। आधुनिक भौतिक, रासायनिक, जीव विज्ञान, मनोविज्ञान का समावेश है।

मंत्र–यंत्र–तंत्र विद्या में निहित शक्तियों का एक आधुनिक वैज्ञानिक दृष्टिकोण से प्रतिपादन किया गया है। जिसमें इच्छित फल देने वाली कामधेनु विद्या, बला–अतिबला विद्या (प्राचीन सुपर कम्प्यूटर) बहुरूपिणी विद्या, महाज्वाला विद्या, अवलोकिनी विद्या, पर्णलघ्वी विद्या (प्राचीन पैराशूट) विद्यानिर्मित रथ, भोजन देने वाली विद्या, विश्व विज्ञान मनोवाञ्छित फल देने वाला कल्पवृक्ष, प्राचीन कालीन राजमहल, जलचारी रथ, प्राचीन काल में कृत्रिम वर्षा, पुष्पक विमान, स्वर्ग–नरक एक वैज्ञानिक शोध एवं प्राचीन कालीन विभिन्न ज्ञान–विज्ञान के शास्त्र (बारह अंगों के नाम और उनके पदों की संख्या) इत्यादि गहन, शोधपूर्ण, वैज्ञानिक दृष्टिकोण को लेकर गुरुदेव ने इसकृति की रचना की है।

जब विज्ञान–दर्शन–धर्म परस्पर मैत्री भाव से स्व–स्व कार्य सिद्ध करते हैं तब वह कार्य प्राणी जगत् के लिए आशीर्वाद रूप हो जाता है। राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी ने भी कहा था कि– "धर्म से रहित विज्ञान अंधा है तथा विज्ञान से रहित धर्म पंगु है।" इस बात को पूज्य गुरुदेव मानते हैं कि "धर्म से रहित विज्ञान, सभ्यता, संस्कृति, मानव उसी प्रकार ऊपर से सुंदर है जिसप्रकार फूल से ढंका भयंकर विषधर सर्प। इसी भावना / कामना को लेकर आचार्य गुरुदेव ने धर्म को विज्ञान से एवं विज्ञान को धर्म–दर्शन से जोड़कर इस अनुपम अलौकिक कृति की रचना की है। इस कृति का द्वितीय संस्करण हिन्दी भाषा में छपकर प्रकाशित हो गया है। इस कृति का मूल्य 51=00 रू. हैं।

## (35) धर्म प्रवर्तक चौबीस तीर्थंकर :- VIII

अनेकांत सिद्धान्त को समझने के लिए पूर्वाचार्यों ने चार अनुयोगों का कथन किया है। सिद्धान्त में प्रवेश पाने के लिए पहले प्रथमानुयोग पढ़ना अति आवश्यक है। प्रथमानुयोग में महान् पुरूषों के चरित्र का वर्णन होता है। जिसके पढ़ने से पुण्यबंध होता है, जिससे बोधि / सम्यक्ज्ञान और समाधि की प्राप्ति होती है।



Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri



इस कृति में आचार्य गुरूदेव ने 25 तीर्थंकरों के जीवन का सविस्तार बहुत ही रोचक / मार्मिक / तार्किक / वैज्ञानिक पद्धति से वर्णन किया है। कृति का अध्ययन करने के बाद 24 भगवान् के जीवन का संपूर्ण ज्ञान हो जायेगा अतः यह कृति सभी अबाल–वृद्ध के पढ़ने को योग्य है।

इस कृति का द्वितीय संस्करण हिन्दी भाषा में प्रकाशित है। मूल्य–11/– रूपये पृष्ठ–70

## (34) धार्मिक कुरीतियों का परिशोधन :– IX

प्रभावक / तेजस्वी / कर्त्तव्यनिष्ठ आत्मविश्वासी सज्जन धर्म की अवनति / ग्लानि / दुर्दशा / मलीनता को पुरुषार्थ हीन / आलसी / किंकर्त्तष्यविमूढ़ / भाग्यवादी / नियतिवादी होकर सहन नहीं करते हैं। वे अपनी प्रखर प्रज्ञा, निष्ठा तेजस्विता, कर्त्तव्यपरायणता, बलिदान की भावनाओं से कुरुढ़ि, मिथ्या परम्परायें, आडम्बर, पाप प्रवृत्तियाँ, धर्मान्धता, अज्ञानता आदि के ऊपर कठोर सत्यधर्मरूपी अमोध अस्त्र का प्रयोग करके कुरुढ़ि आदि को निरस्त, परास्त विनाश करते हैं।

इस कृति में पूज्य गुरूदेव ने धर्म / समाज / राष्ट्र / विश्व / कानून आदि में जो विकृतियाँ / रूढ़ियाँ / मिथ्या परम्परायें पनप रही हैं उन सबका निरसन किया है।

सत्य प्रेमी सत्य को जानकर–मानकर एवं आचरण कर स्वयं सत्यमयी बनें एवं दूसरों को बनावे तभी इस कृति की एवं कृति के कर्ता की सफल–श्रेष्ठ सार्थकता है।

इस कृति का प्रथम संस्करण हिन्दी भाषा में प्रकाशित है। मूल्य मात्र 5/– रूपये, पृष्ठ–25

## (35) ध्यान का वैज्ञानिक विश्लेषण :- X

आधुनिक युग में देश–विदेश में 'योग भगावे रोग' का नारा जोर पकड़ रहा है। भौतिक भोगवादी–पाश्चात्य जब केवल भौतिक साधनों से एवं औषधि की शीशी में सुख शांति एवं स्वास्थ्य प्राप्त करने का असफल प्रयास करके निराश हो चुके, तब वे पुनः भारतीय सभ्यता–संस्कृति, परम्परा की ओर मुड़े हैं। भारतीय ऋषि मुनि, तीर्थंकरों ने जो शारीरिक, मानसिक, आध्यात्मिक रोग निवारक एवं पूर्ण शांति प्रदायक, सर्वश्रेष्ठ अमूल्य औषधि पद्धति का आविष्कार, प्रचार–प्रसार किया था, वह है ध्यान / योग / समाधि। यह योग वर्तमान में विदेशियों को एक



Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri



आकर्षण का विषय बन गया है। आज देश में बड़े–बड़े चिकित्सा वैज्ञानिक, शरीर वैज्ञानिक, मनोवैज्ञानिक इस ध्यान की महत्ता का अनुभव करके उसका यथार्थ ज्ञान करने में जुटे हुए हैं। जब विदेशी लोग ध्यान पद्धति को अपनाने लगे तब भारतीय भी अपनी परम्परा की महत्ता को स्वीकार करके पुनः ध्यान की ओर बढ़ रहे हैं। यह दुःख के साथ सुख का विषय है। दुःख इसीलिए है कि भारतीय लोग अपनी ध्यान की उत्कृष्ट सत्य–वैज्ञानिक–पद्धति को अंध परम्परा, रुढ़ि मानकर अवहेलना करने लगे थे परन्तु जब विदेशी वैज्ञानिक लोग इसको स्वीकार करने लगे तब अपनी मूल धारणा को अनुभव करके पुनः ध्यान को अपनाने लगे हैं, यह सुख का विषय है।

पूज्य गुरुदेव ने आधुनिक युग में व्यस्त–त्रस्त, तनाव युक्त मानसिक रोग से पीड़ित क्लान्त मानव को देखकर उनकी पीड़ा दूर करने के लिए इस कृति में अनेकों मूल प्राकृत, संस्कृत गाथा, श्लोक, उदाहरण देकर विभिन्न ग्रंथों के द्वारा सिद्ध किया है कि ध्यान क्या और ध्यान में वैज्ञानिकता क्या है?

इस कृति का अखिल जीव जगत् अध्ययन करके शारीरिक मानसिक, आध्यात्मिक स्वास्थ्य को प्राप्त करे।

इस कृति का द्वितीय संस्करण हिन्दी भाषा में प्रकाशित है।

मूल्य मात्र 21/– रू. पृष्ठ –150

## (36) नग्न सत्य का दिग्दर्शन :- I

परमात्मा सत्य स्वरूप है, अतः उसकी प्राप्ति के लिए मनुष्य में सत्य की प्रतिष्ठा होनी चाहिए। परमात्मा की प्राप्ति के लिए तो सत्य अनिवार्य साधन है ही, जगत् में दूसरें सब कार्यों में भी अंततः सत्य की विजय होती है, झूठ की नहीं। इसीलिए बुद्धिमान विवेकवान् मनुष्य सत्य, सदाचार को ही अपनाते हैं, झूठ को नहीं।

सत्य में विश्व प्रतिष्ठित है। अहिंसा, अचौर्य, ब्रह्मचर्य, क्षमा, विश्वास, ज्ञान–विज्ञान, अनेकांत, स्याद्वाद, आत्मा, परमात्मा, मोक्ष सभी कुछ सत्य में समाहित हैं। इसीलिए धर्म, विज्ञान, परम्परा, सभ्यता, संस्कृति, राजनीति, कानून आदि में सत्य का होना अनिवार्य है।

लेकिन वर्तमान परिवेश में इससे विपरीत है यानि हर जगह हर क्षेत्र में, हर व्यक्ति असत्य का अवलम्बन लेकर ही अपनी क्रियायें कर रहा है। सर्वोपरि सत्य



Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri



के उपासक पूज्य गुरूदेव ने बाल्यावस्था से लेकर अभी तक जितने भी महान् / श्रेष्ठ / समुन्नत कार्य किये वे सब सत्य को ही मुख्य केन्द्र बना कर किये हैं। गुरुदेव की भावना / कामनायें हैं कि सर्वत्र सुख, शांति, सद्भावना, विश्वमैत्री, संगठन, भ्रष्टाचार उन्मूलन, मिथ्या, रुढ़िवादी परम्परायों का खण्डन, शिथिलाचार, उच्छृंखलता, अनुशासनहीनता, कर्त्तव्यपरान्मुख आदि का विनाश हो एवं सत्य का सर्वत्र–सार्वभौम प्रचार, प्रसार, प्रभावना हो इसी भावना को लेकर गुरूदेव ने इस कृति का तो क्या लगभग 135 ग्रंथों की रचना करने का भागीरथी प्रयास किया है। सभी प्राणी इस कृति का अध्ययन करके असत्य का त्याग करें एवं सत्य को अपने जीवन में घारण करें, दूसरों से भी करवायें तभी कृति के कर्त्ता की शुभ भावना फलीभूत होगी।

इस कृति का प्रथम संस्करण हिन्दी भाषा में प्रकाशित है।

मूल्य–15/– रू. पृष्ठ – 80

## (37) नैतिक शिक्षा एवं सामान्य ज्ञान :- II

नैतिक शिक्षा एवं सामान्य ज्ञान का महत्व, स्थान तथा आवश्यकता, भूमिका, परिधि वैसी है जैसे कि जीवन के लिए प्राणवायु की। जीवन की हर परिस्थिति / अवस्था / व्यवस्था के लिए जिसकी आवश्यकता होती है वह है "नैतिक शिक्षा एवं सामान्य ज्ञान".

पूज्य गूरूदेव ने लाखों आबाल–वृद्ध–वनिता, शिक्षार्थी से शिक्षक, ग्रामीण से लेकर वैज्ञानिक, सामान्य गण से लेकर राजनेता तक को देखा, सुना, परखा, अनुभव किया। उन सब में जो समानता पाई है वह है नैतिक शिक्षा एवं सामान्य ज्ञान की कमी। इस कमी को पूरा करने के लिए गुरुदेव सतत् प्रयत्नशील रहते हैं। वे शिविर, कक्षा, प्रवचन, संगोष्ठी तथा अन्यान्य योग्य समय में इसका प्रशिक्षण देते हैं। इस कृति में नैतिक शिक्षा एवं सामान्य ज्ञान संबंधी अनेक विषयों का बड़ा ही सुंदर/ रोचक / मार्मिक / तार्किक / वैज्ञानिक पद्धति से सोदाहरण सविस्तार वर्णन किया है।

यह पुस्तक जैन–जैनेतर, विद्यार्थी, प्रौढो को लक्ष्य में रखकर लिखी है। विभिन्न कक्षाओं में, शिविर में प्रशिक्षण के लिए अत्यन्त महत्वपूर्ण एवं उपयोगी हैं। मानव का शारीरिक, मानसिक, वाचनिक, नैतिक, आध्यात्मिक, सामाजिक, राष्ट्रीय,



Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri



अन्तर्राष्ट्रीय, वैश्विक विकास हो तथा व्यक्ति से लेकर अन्तर्राष्ट्रीय प्रेम, सौहार्द, संगठन, सहकार बढ़े इस लक्ष्य को रखकर इसमें विषय वस्तु का समावेश किया है। इस कृति का अध्ययन करके अखिल जीव जगत् सुखी, समृद्ध, प्रगतिशील बनें। इस कृति का प्रथम संस्करण हिन्दी भाषा में प्रकाशित है। मूल्य–20/– रूपये पृष्ठ– 190

## (38) निमित्त उपादान मीमांसा :- III

जिनेन्द्र देव ने संसारी प्राणी का कार्य निमित्त और उपादान दोनों से होना बताया है। अकेला निमित्त भी कुछ नहीं कर सकता तथा अकेला उपादान से ही कार्य की सिद्धि नहीं हो सकती। कार्य की सिद्धि के लिए, कार्य–करण भाव होना परमावश्यक है। कार्यरूप उपादान की जागृति के लिए योग्य निमित्त होना चाहिए। जिस प्रकार 'सम्यक्दर्शन की उत्पत्ति के लिए अनादि मिथ्यादृष्टि जीव के लिए सद्गुरु का उपदेश' यह अकाट्य सिद्धान्त है। योग्य निमित्तों के बिना उपादान जागृत नहीं हो सकता। वर्तमान समय में निमित्त और उपादान में एकान्तदृष्टि की अपेक्षा बड़ी चर्चा है। कोई कहता है कि निमित्त के द्वारा ही कार्य होता है, कोई कहता है कि मात्र उपादान से ही कार्य होता है। इन समस्त चर्चित विषयों का समाधान पूज्य गुरूदेव ने इस कृति में बड़े ही सुंदर ढंग से, तर्क, अनुमान, आगम, प्रमाणों के द्वारा किया है। गुरुदेव ने विभिन्न आगम आर्ष ग्रंथों के प्रमाण देते हुए सिद्ध किया है कि दोनों कारणों की उपलब्धि होने पर ही कार्य की सिद्धि हो सकती है। समस्त चर्चित शंकाओं का समाधान इस कृति का अध्ययन करने पर स्वयमेव हो जायेगा। इसीलिए सम्पूर्ण तत्वों के स्वरूप को समझने के आकांक्षी इस पुस्तक को अवश्य पढ़ें।

इस कृति का द्वितीय संस्करण हिन्दी भाषा में प्रकाशित है।

मूल्य–7/– रूपया, पृष्ठ–70

## (39) पुण्य पाप मीमांसा :- I

पुण्य–पाप दोनों ही आत्मा की परतंत्रता में कारण हैं, इसीलिए इन दोनों में भेद नहीं है ऐसा कहना उपयुक्त नहीं है। क्योंकि इष्टानिष्ट फल के निमित्त से इन दोनों में भेद है। जैसे सोने और लोहे की बेड़ी का अविशेषता से समान फल



Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri



है। प्राणी को परतन्त्र करना, वैसे ही पुण्य–पाप दोनों ही आत्मा को परतन्त्र करने में निमित्त कारण है। इन पुण्य–पाप में कोई भेद नहीं है– यह पुण्य (शुभ) है, यह अशुभ है यह तो केवल संकल्प मात्र भेद है। लेकिन यह कहना ठीक नहीं है क्योंकि सोना एवं लोहे की बेड़ी की तरह दोनों ही आत्मा की परतन्त्रता में कारण हैं तथापि इष्ट फल और अनिष्टफल के निमित्त से पुण्य–पाप में भेद है। जो इष्ट, जाति, गति, इंद्रिय विषय भाव आदि का कारण है वह पाप है। इस प्रकार पुण्य कर्म एवं पाप कर्म में भेद है। इनमें शुभोपयोग पुण्यास्रव का कारण है एवं अशुभोपयोग पापास्रव का कारण है। पुण्य के बिना जीवों के पुरूषार्थ की सिद्धि नहीं होती। मोक्ष सिद्धि के लिए भी पुण्य की परम आवश्यकता है।

अनेकान्तात्मक, सर्वज्ञ प्रतिपादित जैनधर्म में कुछ एकान्तवादी, हठग्राही लोग जैनधर्म का रहस्य बिना समझे तथा भूमिका अनुसार अशुभ, शुभ, शुद्ध तथा पाप–पुण्य आदि का पूर्णतः परिज्ञान किये बिना मनमानी यद्वा–तद्वा चर्चा एवं चर्या कर रहे हैं। इससे वे स्व–पर इहलोक, परलोक को अंधकारमय कर रहे हैं।

उपर्युक्त विषमता / अंधकार / आगमविरूद्ध / सत्य विरोध, सामाजिक, पारिवारिक, व्यक्तिगत तनाव दूर हो इस उद्देश्य को लेकर पूज्य गुरूदेव ने अनेकान्त एवं स्याद्वाद पद्धति से लगभग 60–70 आगमोक्त ग्रंथों के आधार पर विभिन्न प्राकृत, संस्कृत, मूल गाथा, श्लोक, प्रमाण, नय, दृष्टान्त आदि के द्वारा इस कृति की रचना की है। यह कृति अत्यन्त उपयोगी महत्वपूर्ण है, प्रत्येक श्रावक को अवश्य पढ़नी चाहिए। इस कृति की अत्यधिक मांग के कारण द्वितीय संस्करण हिन्दी भाषा में प्रकाशित है। मूल्य मात्र 15/– रूपये है, पृष्ठ –135

## (40) पार्श्वनाथ का तपोपसर्ग कैवल्यधाम बिजौलियाः II

आचार्यों के कथनानुसार आचार्य, उपाध्याय, साधु एवं आप्तपुरुषों द्वारा प्रणीत शास्त्र और शिलालेख भी प्रमाणित होते हैं। यदि आचार्यादि रचित शिलालेख प्रमाणिक नहीं होंगे तो ताड़पत्र, ताम्रपत्र कागजादि में लिखा हुआ ग्रंथ भी प्रामाणिक नहीं होगा। प्राचीनकाल में आचार्यादि दूरदृष्टि सम्पन्न होते थे वे ग्रंथों को, लेखों को चिरस्थायी बनाने के लिए शिलाओं में भी उत्कीर्ण करते थे। ऐसे शिलालेख उड़ीसा के खण्डगिरि, उदयगिरि, कर्नाटक, महाराष्ट्र, म.प्र., राजस्थान आदि में पाये जाते हैं। इसी शृंखला के अंतर्गत राजस्थान के भीलवाड़ा जिलान्तर्गत



Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri



बिजौलिया कस्बे के पूर्व दिशा में रेवा नदी के तट में जैन मंदिरों के साथ-साथ अनेक प्राचीन शिलालेख हैं। जो अपनी प्रामाणिकता एवं प्राचीनता स्वयं सिद्ध करते हैं। रेवानदी का विशाल शिलालेख का निर्माण वि.सं. 1226 को हुआ था। वर्तमान में वि.सं. 2058 चल रहा है इसीलिए यह शिलालेख 832 वर्ष प्राचीन है। यह प्राचीन शिलालेख बताता है कि यहाँ ही भगवान् पार्श्वनाथ ने तप किया था, यहाँ ही कमठोपसर्ग हुआ था, यहाँ ही केवलज्ञान प्राप्त हुआ था, यहाँ ही प्रथम समवशरण की रचना हुई थी, यहाँ ही पार्श्वनाथ की मूर्ति प्रकट हुई थी, यहाँ ही वही रेवती कुण्ड है। इससे यह सिद्ध होता है कि यह क्षेत्र चतुर्थकालीन प्रायः तीन हजार वर्ष से भी प्राचीन है।

पूज्य गुरुदेव ने लगभग 30-35 आर्षग्रंथ एवं प्राचीन शिलालेखों के द्वारा इस कृति में यह सिद्ध किया है कि लोगों को प्राचीन इतिहास का सत्य तथ्य ज्ञात हो, क्षेत्र का प्रचार हो, क्षेत्र का विकास हो एवं लोगों की मिथ्या भ्रांतियाँ टूटें।

इस कृति का प्रथम संस्करण हिन्दी भाषा में प्रकाशित है।

मूल्य-15/- पृष्ठ-150

## (41) पूजा से मोक्ष, पुण्य तथा पाप भी :- III

भक्त भगवान् बनने के लिए भगवान् की पूजा, सत् विश्वास, सत् विवेक एवं सच्चारित्र से युक्त होकर करता है तो यही पूजाका रहस्य, उद्देश्य, विधान एवं फल है। इसके विपरीत जो धन प्रदर्शन के लिए, अहंकार की पुष्टि के लिए, वाद-विवाद, पंथवाद, फूट को बढ़ाने के लिए मंदिर मूर्ति बनवाता है। पूजा भक्ति आदि करता है वह यथार्थ से सच्चे फल का भोक्ता नहीं है।

आज प्रायः अधिकांश व्यक्ति छोटी-2 बातों को लेकर आपस में पंथवाद, वैमनस्य, फूट, कलह के बीज बोते हैं एवं स्वयं को दूसरें से अधिक श्रेष्ठ / महान् मानकर उसकी निंदा आलोचना, टीका-टिप्पणी करते हैं।

इन सब भेदभाव, मतभेदों को दूर करने एवं सम्यक् धर्म को समझाने हेतु पूज्य गुरूदेव ने लगभग 60-70 प्राचीन आगमोक्त ग्रंथों के आधार पर प्रमाण देते हुए इस कृति के प्रथम अध्याय में पूजा का हृदय, धर्माराधना का केन्द्र देव, शास्त्र, गुरु, जिन दर्शन से निज दर्शन इत्यादि विषयों की विशद विवेचना की है। द्वितीय, तृतीय, चतुर्थ, पंचम आदि अध्यायों में यथार्थ से हमारे पूज्य कौन ?



Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri



निर्ग्रन्थ श्रमण ही नवदेवता, यथार्थ पूजा, क्या आगमोक्त पूजादि पाप कारक है इत्यादि विषयों पर गाथा, श्लोक, सूत्र, उदाहरण आदि के द्वारा बहुत ही गहन प्रकाश डाला है।

इस कृति को पढ़कर अपनी मिथ्या गलत धारणाों का परित्याग करक सम्यक् / समीचीन मार्ग का अनसुरण करें। इस कृति का प्रथम संस्करण हिन्दी भाषा में प्रकाशित है। मूल्य–21/– रूपये पृष्ठ–160

## (42) पुरूषार्थ सिद्ध्युपाय :- IV

जो दूसरों को कष्ट देता है, वह पहले अपने परिणामों को दूषित करता है; बिना दूषित परिणाम हुए दूसरों को क्षति नहीं पहुँचा सकता। आत्म परिणाम का दूषित होना ही स्वयं की प्रधान भाव हिंसा है। भाव हिंसा होते हुए दूसरों को कष्ट न पहुँचने पर भी हिंसा होती है अतएव स्वयं के परिणामों को अहिंसामय शुद्ध रखना ही यथार्थ अहिंसा है। भाव हिंसा रखते हुए कदाचित् द्रव्य हिंसा होने पर भी यथार्थ से हिंसा का दोष नहीं लगता है।

पुरूषार्थ सिद्ध्युपाय ग्रंथ में अन्य विषय होते हुए भी विशेष रूप से हिंसा–अहिंसा का बहुत ही विस्तृत मौलिक वर्णन है। इसीलिए पूज्य गुरूदेव ने इस ग्रंथ की भावानुवाद के साथ–साथ वैज्ञानिक सत्य शोधक समीक्षा करते हुए इस ग्रंथ का नया नाम "अहिंसा का विश्व स्वरूप" दिया है। यह कृति संस्कृत टीका सहित होने के साथ–साथ अंग्रेजी, प्राकृत, संस्कृत की मूल गाथा, श्लोक आदि से परिपूर्ण होने के कारण स्वाध्याय प्रेमियों के लिए अत्यन्त ही उपयोगी, महत्वपूर्ण कृति है। इस शोधपूर्ण वैज्ञानिक कृति की रचना के लिए हिन्दू, बौद्ध, वैदिक, जैन धर्मों के अनेकों ग्रंथों का अवलम्बन लिया गया है, इसीलिए यह कृति शोधार्थियों के लिए, शिविर में प्रशिक्षण हेतु विद्यार्थियों के लिए एवं सत्य तथ्य का तलस्पर्शी, सम्यक्ज्ञान प्राप्त करने के लिए स्वाध्याय प्रेमियों के लिए विशेष रूप से लाभकारी, महत्वकारी है।

इस कृति का प्रथम संस्करण हिन्दी भाषा में प्रकाशित है।

सजिल्द मूल्य- 101/– रू.



Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri



## (43) बहत्तर (72) कलायें :- I

जीवन को ज्ञान–विज्ञानमय, सरल, सहज, सुंदर बनाने के लिए गहन, तत्वज्ञान के साथ–साथ कला का ज्ञान होना अनिवार्य है। संगीत आदि कलाओं के माध्यम से शारीरिक मानसिक आदि रोग दूर होने के साथ–साथ मनोरंजन एवं वातावरण शुद्ध होता है। चतुर्थकाल में भगवान् आदिनाथ ने अपने सभी पुत्र–पुत्रियों को विभिन्न प्रकार की कलाओं विद्याओं का प्रशिक्षण दिया था। इस पंचमकाल में पुज्य कनकनन्दीजी गुरुदेव ने हम सभी शिष्यों को विभिन्न प्रकार की कलाओं, विद्याओं का प्रशिक्षण दिया है। इस कृति में पूज्य गुरूदेव ने 72 कलायें, 64 लिपियाँ, वर्णमाला का आध्यात्मिक रहस्य, प्राचीनकालीन, वस्त्र, आभूषण, अद्‌भुतरथ संचालन एवं गणितज्ञान आदि विषयों का विस्तृत वर्णन किया है।

इस कृति का प्रथम संसमरण हिन्दी भाषा में प्रकाशित है। एवं मूल्य मात्र 5/– रूपये हैं।

## (44) बाल बोध जैन धर्म :- II

विश्व में सर्वश्रेष्ठ प्राणी मनुष्य है, क्योंकि मानव अपना विवेक पुरूषार्थ, ज्ञान, विज्ञान से स्वयं को सुसंस्कृत करके उन्नति के सर्वोच्च शिखर पर पहुँच सकता है। लेकिन मानव विवेकवान् सुसंस्कारवान् तब बनता है जब उसमें गर्भावस्था से ही योग्य संस्कार दिये जायें। बालक में जब तक धार्मिक, नैतिक, सत् आचरणों का बीजारोपण नहीं किया जायेगा तब तक समुन्नत समुज्ज्वल, श्रेष्ठ, आदर्श, परिवार, समाज, राष्ट्र की कल्पना भी नहीं की जा सकती।

पूज्य गूरूदेव का मुख्य, विशेष उद्देश्य बच्चों को संस्कारवान्, प्रतिभावान् बनाने का बाल्यावस्था से ही रहा है, इसीलिए आप बाल्यावस्था से लेकर अभी तक बच्चों को पढ़ाते हैं, उनके लिए पुस्तकें लिखते हैं, उनसे आहार आदि लेते हैं।

यह कृति भी पूज्य गुरूदेव ने नन्हें मुन्नें बच्चों को धर्म से जोड़ने, उनमें सुसंस्कारों, सत्क्रियाओं का बीजारोपण करने के लिए ही लिखी है।

इस कृति का प्रथम संस्करण हिन्दी भाषा में प्रकाशित है। मूल्य – 7/– रू.

## (45) बंधु बंधन के मूल :- III

जो स्नेहरूपी निविड़पाश में बाँधता है उसे बंधु कहते हैं। इस कृति में पूज्य गुरूदेव ने पूर्वाचार्य रचित जैन साहित्य के साथ–साथ हिन्दू, बौद्ध आदि साहित्यों



Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri



का अवलम्बन लेकर यह सिद्ध किया है कि शरीर से संबंधित मोह से युक्त संसार बंधन में डालने वाले यथार्थ बंधु नहीं हैं। किन्तु बंधन में डालने के कारण परम शत्रु हैं क्योंकि जीव धर्म के माध्यम से ही परम आध्यात्मिक सुख को प्राप्त कर सकता है। इसीलिए जो धर्म के पथ पर बाधक होते हैं वे सब हमारे लिए परम वैरी हैं।

उपर्युक्त बंधकारक बंधुओं से अपनी सुरक्षा हो एवं शाश्वतिक, अनंत, अविनाशी अक्षय सुख की प्राप्ति हो इसी उद्देश्य को लेकर पूज्य गुरूदेव ने इस उत्कृष्ट / श्रेष्ठ / विशिष्ट / महान् कृति की रचना की है।

इस कृति का प्रथम संस्करण हिन्दी भाषा में प्रकाशित है।

सजिल्द मूल्य 41/- रू. पृष्ठ 400

## (46) भाग्य एवं पुरूषार्थ :- I

भाग्य एवं पुरूषार्थ एक दृष्टि से एक ही विषय के दो पहलू है; क्योंकि वर्तमान का पुरूषार्थ ही भविष्यत का भाग्य है। वर्तमान का पुरूषार्थ भी पूर्व भाग्य से कुछ अंश तक प्रेरित भी होता है। जैसे बीज से वृक्ष तथा वृक्ष से बीज की उत्पत्ति होती है, उसी प्रकार पुरूषार्थ से भाग्य एवं भाग्य से पुरूषार्थ की उत्पत्ति होती है।

इस कृति में आचार्य गुरुदेव ने विभिन्न पुस्तकों के दृष्टान्त, श्लोक, गाथा, सूक्ति, नीतिपूर्ण वाक्यों के द्वारा भाग्य एवं पुरुषार्थ, पुरुषार्थ से भाग्य में परिवर्तन, भाग्य की प्रचण्ड शक्ति, सौभाग्य एवं दुर्भाग्य का विचित्र परिणाम, पुरुषार्थ की अन्तिम विजय, हिन्दू धर्म में वर्णित भाग्य और पुरूषार्थ, भाग्य का वैज्ञानिक विश्लेषण भाग्य और पुरूषार्थ का सार इत्यादि विषयों का बडा ही रोचक, मार्मिक, हृदयग्राही शैली में वर्णन किया है। जन-जन में इस पुस्तक की लोकप्रियता के कारण हिन्दी भाषा में चार संस्करणों के साथ प्रकाशित हो चुकी है। नये संस्करण का मूल्य 15/- रू. है।

इसकी अत्यधिक माँग के कारण इस का मराठी एवं अंग्रेजी संस्करण भी प्रकाशित है। अंग्रेजी संस्करण का मूल्य- 15/- रू.

## (47) भारतीय आर्य कौन-कहाँ के-कब से- कैसे ?:II

प्रायः भारतीय इतिहास की प्रत्येक पुस्तक में पहले से लेकर अब तक यह लिखा पाया जाता है कि "भारत में जो आर्य लोग हैं वे पशु पालन के लिए चारण



Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri



भूमि के अन्वेषण के लिए घूमते–घूमते सिन्धु आदि पंच नदी को पार करके पंजाब में होते हुए भारत में प्रवेश किये, उसके पहले इस देश में आर्येतर (द्रविड– असभ्य – म्लेच्छ) लोग रहते थे। दोनों में युद्ध हुआ और युद्ध में आर्य लोग विजयी हुए, क्योंकि आर्य लोग ज्ञान–विज्ञान से युक्त थे और अस्त्र–शस्त्र के प्रयोग में दक्ष थे। इसीलिए वे परास्त होकर उत्तर भारत को छोडकर दक्षिण भारतमें चले गये।ध धीरे–धीरे मार्यालोग भारत में फैलकर यहाँ के ही स्थायी निवासी होकर यहीं रहने लगे। अतएव भारत में रहने वाले आर्य विदेशी एवं आक्रमणकारी हैं।" इस गलत मिथ्या अन्धानुकरण को हटाने के लिए ना तो अभी तक कोई शोध–बोध हुआ ना कोई दिशा परिवर्तन।

इस गलत मिथ्या अंधानुकरण को हटाने के लिए पूज्य गुरूदेव ने अनेक प्राचीन कालीन लेखकों के साहित्य के आधार पर प्रमाण के साथ इस कृति की रचना करके यह सिद्ध किया है कि भारतीय आर्य भारत के ही हैं, वे बाहर से नहीं आये हैं। इस बात की सत्य पुष्टि करते हुए प्रथम अध्याय में भारतीय आर्यों का यथार्थ इतिहास, प्राचीनतम आर्यों का इतिहास इत्यादि विषयों की विशद प्राकृत, संस्कृत, मूलगाथा, श्लोक, उदाहरण तर्क देकर व्याख्या की है। दूसरें, तीसरें, अध्यायों में आर्य और म्लेच्छों की परिभाषा, भेद, विशेषतायें, खान–पान, रहन–सहन का स्तर सामाजिक, राजनैतिक, आर्थिक, शैक्षणिक, धार्मिक स्तर का वर्णन किया गया है। कर्म युग का प्रारम्भ कब, कैसे, किस प्रकार हुआ इत्यादि विषयों की विस्तृत व्याख्या जैन–जैनेतर लगभग 20–25 ग्रंथों को प्रमाण सूत्र देकर की गयी है। इस कृति का प्रथम संस्करण हिन्दी भाषा में प्रकाशित है।

मूल्य 21/– रू. पृष्ठ संख्या–215

## (48) भविष्य फल विज्ञान (शकुन विज्ञान) :- III

भूत तथा वर्तमान को जानने की अपेक्षा भवष्यित को जानने की प्रवृत्ति मनुष्य की अधिक होती है। क्योंकि भूत तो बीत गया वह पुनः वापिस नहीं आयेगा जिससे कि उसे हानि–लाभ मिलें। वर्तमान तो सम्मुख विद्यमान है जिससे वह उसे कुछ अंश में स्पष्ट देखता है और जानता है इसीलिए वह उसका समाधान अपनी योग्यता के अनुसार करता है। परन्तु भविष्य अज्ञात अंधेरा दूर में



Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri



है इससे वह उसके हानि–लाभ से अपरिचित होने के कारण अधिक शंकाशील एवं भयभीत रहता है। इसीलिए वह उसे जानने के लिए अधिक लालायित रहता है। इस आवश्यकता से ही ज्योतिष, पंचांग, सामुद्रिक शास्त्र, स्वप्न विज्ञान, शकुन विज्ञान, भविष्य कथन ज्ञान–विज्ञानों का आविष्कार हुआ। इन सभी की शृंखलाओं में पूज्य गुरुदेव ने विभिन्न धर्मों के अनेकों ग्रंथ एवं आधुनिक वैज्ञानिक शोधपूर्ण पत्र–पत्रिकाओं के माध्यम से इस कृति की रचना की है। अखिल जीव जगत् इस कृति का अध्ययन करके अशुभ से बचें एवं शुभ में प्रवेश करें।

इस कृति का द्वितीय संस्करण हिन्दी भाषा में प्रकाशित है।

सजिल्द पुस्तक का मूल्य 101/– रू. पृष्ठ 465

## (49) भगवान महावीर और उनका दिव्य संदेशः IV

अनादिकाल से भारत विश्व का गुरु रहा हैं। क्योंकि इस पवित्र धरती पर अनेक आध्यात्मिक महापुरूष हो गये हैं, हो रहे हैं, होंगे भी इसीलिए इस धरती को पवित्र आध्यात्मिक देश माना गया है। इस देश का गौरव केवल भू पृष्ठ पर ही नहीं किन्तु स्वर्ग तक व्याप्त था।

भारत की वसुन्धरा पर अनेकों दिव्यात्मा, महात्मा, पुण्यात्मा महिमा मण्डित महापुरूषों ने जन्म लिया है। उन्हीं की शृंखला में जैनधर्म के अन्तिम (24वें) तीर्थंकर भगवान् महावीर भी हैं। इन्हीं भगवान् महावीर का बाल्यावस्था से कैवल्यज्ञान तक की क्रियाओं का, उनके आचरणों का, सरल, रोचक, मार्मिक शैली में सविस्तार सोदाहरण वर्णन इस कृति में पूज्य गुरुदेव ने किया है। यह कृति जन साधारण के पढ़ने के लिए अति योग्य है।

इस कृति का प्रथम संस्करण हिन्दी भाषा में प्रकाशित है।

मूल्य–5/– रू. पृष्ठ–35

## (50) भारत को पुनः विश्वगुरु बनाने के लिए समग्र क्रांति चाहिए :- V

इस कृति के प्रवचनकार पूज्य आचार्य गुरुदेव ने अपनी अमृतमयी, मधुर, सरस, रोचक वाणी के द्वारा रूढ़िगत मिथ्या मान्यताओं का खण्डन करके चारित्रिक,



Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri



बौद्धिक, अध्यात्मिक, नैतिक, सामाजिक, वैश्विक विचारधाराओं का सम्यक्रूप से, वैज्ञानिक पद्धति से प्रतिपादन किया है।

गुरूदेव की बाल्यकाल से यह चिंता एवं विचारणीय प्रश्न रहा है कि भारत आध्यात्म प्रधान, सोने की चिड़िया एवं समस्त ज्ञान–विज्ञान का आविष्कारक देश रहा लेकिन आज सबसे भ्रष्टतम देश कैसे हो गया ? इस भारत को पुनः विश्वगुरु बनाने के लिए समग्र क्रांति की आवश्यकता है। समग्र क्रांति कैसे हो ? इन कारणों की व्याख्या गुरुदेव ने इस कृति में जगह–जगह प्रवचनों के माध्यम से की है।

अखिल जीव जगत् इस अनमोल कृति का अध्ययन करे एवं अपने देश का उद्धार करके पुनः आध्यात्ममय बनायें। इस कृति का प्रथम संस्करण हिन्दी भाषा में प्रकाशित है। मूल्य– 11/– रू., पृष्ठ–55

## (51) भ्रष्टाचार उन्मूलन :– VI

द्रव्य जब स्व मर्यादा में रहता है तब उस अवस्था को ही शुद्धावस्था कहते हैं। शुद्धावस्था ही 'सत्यं शिवं सुन्दरम्' है। जब द्रव्य अपनी मर्यादा का उल्लंघन करता है तब वह अशुद्ध हो जाता है। अशुद्ध अवस्था में ही विकार भाव उत्पन्न होता है। विकार भाव ही अनेक अनर्थ परम्परा का बीज है। जब जीव स्व स्वरूप / स्वभाव / गुण / धर्म / कर्म / आचरण / कर्त्तव्य की मर्यादा से च्युत हो जाता है तब उसमें अनेक विकार भाव की परम्परा प्रारम्भ हो जाती है। जीव के इस प्रकार के विकार भाव ही समस्त अनर्थ / अव्यवस्था / भ्रष्टाचार / आतंकवाद / तनाव / कलह / युद्ध / विनाश आदि का मूल कारण है।

भ्रष्टाचार के लिए अनेक कारण होते हैं। जैसे क्रोध, प्रतिशोध की भावना, हिंसा, शोषण, नैतिक पतन, आक्रमण, सत्तालोलुपता, आदि। इसके साथ ही बाह्य कारण भी अनेकों हैं जैसे– अश्लील साहित्य, अश्लील टी.वी. सिनेमा प्रोग्राम, बीड़ी, तम्बाकू, नशीले पदार्थ सेवन, दहेज के कारण बहुओं की मृत्यु, गर्भपात, समयानुसार अपना कर्त्तव्य नहीं करना, अनुशासन भंग करना, पूज्य पुरूषों की विनय नहीं करना, दूसरों की निंदा, चुगली करना, असंयमित, अमर्यादित, खोटे बचन बोलना इत्यादि सब भ्रष्टाचार हैं।

इस भ्रष्टाचार को जड़ से उखाड़ने हेतु पूज्य गुरुदेव ने इस कृति की रचना की है। सभी प्राणी इस कृति का अध्ययन करके भ्रष्टाचार का त्याग करके शाश्वतिक



Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri



सुख, शांति, समृद्धि को प्राप्त करें तभी इस कृति की रचना श्रेष्ठ / महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त करेगी।

इस कृति का प्रथम संस्करण हिन्दी भाषा में प्रकाशित है।

मूल्य– 5/– रू. पृष्ठ – 50

## (52) मन्त्र विज्ञान :- I

प्राचीन काल में इच्छाशक्ति, आध्यात्मिक शक्ति तथा पुण्य अधिक होने के कारण कठिन से कठिन कार्य भी इच्छा मात्र से या मंत्र प्रयोग से सिद्ध हो जाता था। इसीलिए प्राचीन युग को मंत्र युग या आध्यात्मिक युग कह सकते हैं। कालक्रम से इच्छाशक्ति, पुण्य आदि घटने के कारण विशिष्ट कार्य आदि संपादन के लिए मंत्र के साथ--साथ तंत्र आदि का प्रयोग होने लगा। कालक्रम से और भी इच्छाशक्ति आदि घटने के कारण मंत्र शक्ति, तंत्र शक्ति आदि ह्रास होती गई, जिससे मनुष्य ने विशिष्ट कार्य संपादन के लिए यंत्र का आविष्कार किया। इसीलिए अति प्राचीन काल को मंत्र युग, मध्यकाल को तंत्रयुग, आधुनिक युग को यंत्र युग कह सकता है।

मंत्र –विद्या आदि की सूक्ष्म तरंगें मंत्रवादी तथा विद्याधर से निसृत होकर उनकी इच्छा एवं प्रेरणानुसार विभिन्न कार्य करने में समर्थ होती हैं। विद्या, मंत्रादि, सिद्ध होने पर उनका दुरुपयोग करने पर पुण्य क्षय से शक्तिशाली मंत्रवादी या विद्याधर से भी विद्या, मंत्रादि क्षीण हो जाते हैं।

इस कृति में पूज्य गुरूदेव ने विभिन्न मंत्र शास्त्रों में वर्णित कल्याणकारी मंत्रों के साथ–2 वैज्ञानिक, अनेकों लेखकों के शोधपूर्ण लेखों को भी दिया है। प्राचीन मंत्र विज्ञान आधुनिक मनोविज्ञान, शब्द विज्ञान, स्वर विज्ञान, रासायनिक एवं भौतिक विज्ञान आदि विभिन्न ग्रंथों का समन्वय इस कृति में किया है।

इस कृति का द्वितीय संस्करण हिन्दी भाषा में प्रकाशित है।

मूल्य 25/– रू. पृष्ठ– 100

## (53) मानवीय निकृष्ट संघर्ष का इतिहास :- II

रामायण, महाभारत, मत्स्य–कच्छप, वराह नृसिंह पुराण, भगवत् पुराण, भगवद् गीता, पद्मपुराण, हरिवंशपुराण से लेकर मध्यकालीन इतिहास तथा आधुनिक इतिहास एवं वर्तमान के अनुभव से ज्ञात होता है कि मानव इतिहास



Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri



एक निकृष्ठ संघर्ष का इतिहास है। कभी मानव धन के लिए, कभी धर्म के लिए, कभी मान–सम्मान के लिए, कभी जमीन के लिए, कभी स्त्री के लिए खूनी, बर्बर, लोमहर्षक संघर्ष करता है, दूसरों को मारता है, स्वयं को मरवाता है, धन–जन–सभ्यता, संस्कृति को निर्ममरूप से रौंदता है। मानव का इतिहास सुरा–सुंदरी–शिकार–समर रूपी संघर्ष का इतिहास है।

इस कृति के माध्यम से पूज्य गुरुदेव मनुष्यों को सर्वश्रेष्ठ, उन्नत, आदर्शमयी बनाना चाहते हैं। अखिल मानव जगत् इस कृति का अध्ययन–मनन–आचरण करके निकृष्ट संघ का रास्ता त्यागकर उत्कृष्ट निर्माण का रास्ता अपनायें तभी वैज्ञानिक युग में मनुष्यों की मानवीयता श्रेष्ठता सार्थकता हासिल कर पायेगी।

इस कृति का प्रथम संस्करण हिन्दी भाषा में प्रकाशित है।

मूल्य 10 रुपये मात्र है।

## (54) युग निर्माता भ. ऋषभदेव :- I

विश्व में एक ऐसे महान् महापुरुष हो गये हैं, जिनका योगदान जैन या भारतीय सभ्यता के लिए ही नहीं परन्तु समस्त विश्व सभ्यता–संस्कृति के लिए रहा है। वे हैं युगादि पुरुष आदि ब्रह्मा आदिनाथ (ऋषभदेव)। उनका व्यक्तित्व आचार–विचार आकाश के समान व्यापक था। जिससे वे केवल धर्म ही नहीं परन्तु धर्म के साथ–साथ राजनीति व्यवस्था, शिल्प, कृषि, वाणिज्य, कला, शिक्षा–दीक्षा, पारिवारिक व्यवस्था, ज्ञान–विज्ञान आदि सम्पूर्ण विषय में पारंगत थे। भोग प्रधान भोगभूमि के उपरांत जब कर्म भूमि का आगमन हो रहा था। उस सन्धिकाल में ये महापुरुष अवतरित हुए थे। भोगी, सरल स्वभावी, धर्म कर्म से विरहित, अनभिज्ञ मानव समाज को धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष रूपी पुरुषार्थ की शिक्षा दी थी। इतना ही नहीं उन्होंने कर्मप्रधान जीवनयापन के लिए असि, मसि, कृषि, विद्या, वाणिज्य, शिल्प एवं सेवा का प्रशिक्षण भी अनभिज्ञ प्रजा को देकर एक युगान्तकारी क्रान्ति का सूत्रपात किया था। उन्होंने उस युग को इतना प्रभावित किया था जिससे उस युग की संपूर्ण गतिविधियाँ मानों ऋषभदेव की गतिविधियाँ थी। इसीलिए उपकृत प्रजा उनको आदि ब्रह्मा, आदि सृष्टिकर्ता, युगनिर्माता आदि नामों से पुकारती थी। इसीलिए आदिनाथ का वर्णन प्रत्येक धर्म के धार्मिक साहित्य में 'धर्म के आदि प्रणेता' नाम से किया गया है।



Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri



इसका सविस्तार वर्णन विभिन्न जैन, वैदिक, वाङ्मय का अवलम्बन लेकर इस कृति में किया है। प्रथम अध्याय के अंतर्गत ऋषभदेव का स्वर्गावतरण से लेकर बाल्यावस्था, किशोरावस्था आदि का वर्णन है। द्वितीय अध्याय में यौवन अवस्था एवं शरीर संगठन, आदिनाथ द्वारा कला एवं विद्याओं का वर्णन, ऋषभदेव का राज्याभिषेक, राजा ऋषभदेव का वैराग्य उत्पादन कार्यक्रम, ऋषि ऋषभदेव बने भगवान् आदि का वर्णन है एवं 5, 6, 7, 8 अध्यायों में हिन्दु धर्म के अनुसार ऋषभदेव, विभिन्न शास्त्रों में वर्णित ऋषभदेव, पुरातत्व से सिद्ध ऋषभदेव, आदिनाथ के विभिन्न रूप आदि विषयों का सविस्तार वर्णन है। हिन्दी में दो एवं अंग्रेजी में एक संस्करण प्रकाशित हो गये हैं। मूल्य–41/– रू. एवं 51/–, इस कृति का पद्यानुवाद भी है। मूल्य 5/– रू. है।

## (55) ये कैसे धर्मात्मा - निर्व्यसनी राष्ट्रसेवी..?: II

इस कृति में पूज्य गुरूदेव ने स्व–पर उपकार के लिए विश्व में व्याप्त मूढ़ता, जड़ता, हठग्राहिता, अंधविश्वास, रूढिवाद, पंथवाद को दूर करने के लिए तथा सत्य, न्याय, उदारता, सरलता, नम्रता, भद्रता, निष्पक्षता का प्रचार–प्रसार करने के लिए कुछ हितकारी कडुवी औषधि के समान कठोर सत्य वचनों का प्रयोग किया है।

गुरूदेव को ना तो किसी से राग है, ना द्वेष परन्तु गुरुदेव ने अनुभव किया कि "धर्म सर्व हिताय सर्व सुखाय" है। व्यवहारिक पक्ष में धर्म की आड़ में या धर्म के नाम पर कुछ धर्मान्ध व्यक्ति धर्म को ही कलंकित करते हैं। इसी प्रकार जो समाज, राष्ट्रादि के रक्षक होते हैं वे ही अधिकांश भक्षक होते हैं। ऐसे उपरोक्त धार्मिक एवं परोपकारी राष्ट्रसेवक व्यक्ति 'गोमुख व्याघ्र' की तरह होते हैं।

इस कृति में धर्म एवं राजनीति में व्याप्त भ्रष्टाचार को दूर करने के लिए कुछ क्रांतिकारी सुझाव प्रस्तुत किये है। क्रांतिकारी भावनाओं को लिपिबद्ध करने के लिए जैन-अजैन मनीषी आचार्यों के सिद्धान्तों का सहारा लेकर एक अनुपम, अलौकिक कृति की रचना की है। यह कृति हिन्दी एवं अंग्रेजी दोनों भाषाओं में द्वितीय संस्करण में प्रकाशित है।

दोनो भाषाओं की कृतियों का मूल्य 11/-- अंग्रेजी मूल्य– 21/– रू.



Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri



## (56) लेश्या-मनोविज्ञान :- I

लेश्या के गुण व स्वरूप को जानने वाले सर्वज्ञ, वीतरागी प्रभु ने लेश्या का स्वरूप ऐसा कहा है कि जिसके द्वारा जीव अपने को पुण्य एवं पाप से लिप्त करें उसे लेश्या कहते हैं। अथवा चेतना की भावधरा ही लेश्या है। लेश्या निरन्तर बदलती रहती है। मनोविशारदों ने संपूर्ण जगत् के जीवों की चित्तवृत्तियों का वैज्ञानिक विश्लेषण करते हुए लेश्या के ६ प्रकार बताये हैं यथा– कृष्ण, नील, कापोत, पीत, पद्म, शुक्ल। प्रत्येक लेश्या के उत्कृष्ट, मध्यम, जघन्य ये तीन भेद होते हैं। संख्यात, असंख्यात भेद भी प्रत्येक लेश्या के होते हैं।

पूज्य गुरुदेव ने इस कृति में लेश्याओं का वर्णन बहुत ही मार्मिक वैज्ञानिक पद्धति से किया है। इस कृति में सैद्धान्तिक आर्ष ग्रंथ आदि अनेकों ग्रंथों के उदाहरण, गाथा, श्लोक, प्रमाण दिये हुए हैं।

इस कृति का हिन्दी भाषा में द्वितीय संस्करण एवं अंग्रेजी भाषा में प्रथम संस्करण प्रकाशित है। अंग्रेजी एवं हिन्दी दोनों कृतिओं का मूल्य–11/– रूपये है।

## (57) विनय मोक्ष द्वार :- II

विनय जिनभाषित द्वादशांगी में अथवा संघ में मूल है। जैसे मूल के बिना शाखा नहीं रह सकती वैसे ही विनय के बिना धर्म आदि नहीं टिक सकते। पूज्य, श्रेष्ठ, गुणी जनों की विनय करने से आयु, वर्ण, सुख, बल इत्यादि गुणों में वृद्धि होती है।

इस कृति में पूज्य गुरूदेव ने यही सिद्ध किया है कि जो विनयी, नम्र, शिष्ट, कोमल, मृदु, ऋजु होते हैं वे अपने जीवन में सुखी, समृद्ध, सम्पन्न शीलता आदि गुणों से सुशोभित होते हैं। इस कृति का प्रथम संस्करण हिन्दी भाषा में प्रकाशित है। मूल्य 6/– रू.

## (58) विश्व विज्ञान रहस्य :- III

अल्पज्ञ जीव जब विश्व के बारे में पूर्णरूप से नहीं जान पाता है, तब विश्व के बारे में विभिन्न परिकल्पना स्वज्ञान के अनुसार करता रहता है। इसीलिए विभिन्न खगोल, भूगोल तथा विश्व तत्व विद्वानों के द्वारा ज्ञात एवं वर्णित विश्व में अनेक विषमतायें परिलक्षित होती है परन्तु विश्व विज्ञान के रहस्य के ज्ञाता



Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri



सर्वज्ञ भगवान् विश्व के प्रत्येक कण–कण को स्पष्ट, प्रत्यक्ष रूप से जानने के कारण उनके द्वारा प्रतिपादित विश्व में किसी भी प्रकार विषमता नहीं पायी जाती है।

श्री सर्वज्ञ देव द्वारा प्रतिपादित विश्व के स्वरूप को आधारभूत लेकर अन्यान्य धर्म एवं विज्ञान में वर्णित विश्व के स्वरूप का वर्णन पूज्य गुरूदेव ने अपनी सत्य शोधक लेखनी एवं ऋतम्भरा प्रज्ञा के द्वारा इस कृति में किया है।

इस 'विश्व विज्ञान रहस्य' में जैन, बौद्धधर्म, अनेक भारतीय दर्शन, अनेक विदेशी दर्शन के साथ–2 आधुनिक विज्ञान में वर्णित विश्व के विभिन्न पहलुओं का वर्णन समीक्षात्मक पद्धति से किया गया है। इसमें अनेक स्थलों पर विभिन्न सिद्धान्तों के समन्वय के साथ–साथ यथायोग्य समीक्षात्मक खण्डन भी किया गया है।

इस कृति का अध्ययन, मनन, चिंतन करके विश्व का रहस्यमय स्वभाव तथा स्व का रहस्यमय स्वरूप जानकर भव्य जीव स्वयं विश्व दृष्टा बनें तभी कृति की एवं कृति कर्ता की भावना / कामना अपनी सार्थकता हासिल करेगी।

इस कृति का प्रथम संस्करण हिन्दी भाषा में प्रकाशित है।

मूल्य– 100/– रू.. पृष्ठ–240

## (59) विश्व इतिहास :- IV

मनुष्य एक बुद्धिजीवी, जिज्ञासु, उन्नतिशील विवेकवान् प्राणी है। वह स्वयं के बारे में एवं विश्व के बारे में जानने के लिए विभिन्न परीक्षण–निरीक्षण. शोध–बोध–खोज करता आ रहा है और आगे भी करता जायेगा। स्व का ज्ञान आत्मज्ञान या आध्यात्मिक ज्ञान है एवं विश्व का ज्ञान भौतिक ज्ञान, विश्वविज्ञान, खगोलज्ञान, भूगोलज्ञान, ऐतिहासिक ज्ञान है। मनुष्य को इतिहास का ज्ञान होना भी आवश्यक है क्योंकि इतिहास में भूतकालीन समस्त विशिष्ट घटनाओं का वर्णन पाया जाता है। इतिहास में बड़े–बड़े महापुरुष राजा–महाराजा, क्रांतिकारी, युगपुरुष धर्म प्रचारक, धर्म संस्थापक, तीर्थंकर, ऋषिमुनि, तत्वज्ञानी, तपस्वी, ज्ञानी, विज्ञानियों का वर्णन मिलता है। उपर्युक्त वर्णन से मनुष्य को भूतकालीन अनुभव मिलता है; जिससे वह वर्तमान में जागृत होकर भविष्य के लिए प्रयाण करता है। इतिहास को हम भूतकालीन ज्ञान–विज्ञान, सभ्यता संस्कृति का ज्ञानकोष मान सकते हैं। इसीलिए एक चिन्तक ने बहुत ही अच्छा लिखा है–''प्रत्येक ऐतिहासिक घटना कुछ इस प्रकार से अमिट चिन्ह अंकित करती है जो किसी राष्ट्र की अमूल्य निधि



Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri



बनकर भावी पीढ़ियों को युग–युग तक प्रेरणा और चेतना प्रदान करते हैं।''

इतिहास को हम दो भागों में विभक्त कर सकते हैं। 1. लिपिबद्ध आधुनिक इतिहास 2. लिपिबद्ध प्रागैतिहास। प्रागैतिहास में प्राचीन–धार्मिक साहित्य, संहिता साहित्य, स्मृति, वेद, आगम, त्रिपिटक, जातक आदि का यत्किंचित् वर्णन पाया जाता है। भले ही यह विषय आधुनिक इतिहास का नहीं है लेकिन पुराणादि में जो वर्णन पाया जाता है वह पूर्ण असत्य नहीं है।

''विश्व इतिहास'' कृति की रचना करके पूज्य गुरुदेव ने सभी के गलत मिथ्या भ्रम तोड़कर सत्य का साक्षात्कार कराया है। गुरुदेव ने शोधपूर्ण, सत्य तथ्यों के द्वारा इस कृति में यह सिद्ध किया है कि विश्व में केवल पृथ्वी का ही समावेश नहीं है बल्कि विश्व में असंख्यात सूर्य, चन्द्र, गृह, नक्षत्र, निहारिका आदि का भी समावेश है। इसीलिए विश्व इतिहास में केवल आधुनिक पृथ्वी की सभ्यता संस्कृति का ही वर्णन नहीं है बल्कि विश्व के बारे में वर्णन है। इसीलिए इस कृति की तुलना आधुनिक इतिहास से नहीं की जा सकती है; क्योंकि आधुनिक इतिहास की सीमा अत्यन्त सीमित है जबकि ''विश्व इतिहास'' की सीमा बहुत ही व्यापक है। इसीलिए आधुनिक इतिहास का जो विषय नहीं है उसका भी वर्णन इस कृति में गुरुदेव ने किया है।

इस कृति का प्रथम संस्मरण हिन्दीभाषा में प्रकाशित है।

एवं मूल्य 25/– रूपये मात्र है।

## (60) विश्वधर्म सभा समवसरण : V

जैनधर्म में देव, शास्त्र, गुरु का महत्वपूर्ण स्थान है और समवशरण में देव, शास्त्र, गुरु की उपस्थिति रहती है यहाँ ही जिनवाणी की उत्पत्ति होती है। जैनियों के लिए समवशरण एक महत्वपूर्ण जिज्ञासा एवं श्रद्धा का विषय है। इसीलिए पूज्य गुरुदेव ने समवशरण के बारे में सांगोपांग वर्णन पूर्वाचार्यों कृत साहित्य के आधार पर एवं आधुनिक वैज्ञानिक परिप्रेक्ष्य में किया है। प्रथम अध्याय में जन्म, केवलज्ञानादि के अतिशय, 24 तीर्थंकरों के केवलज्ञानादि की तिथि, समय नक्षत्र, स्थान एवं 24 तीर्थंकरों के गणधर यक्ष–यक्षी आदि का वर्णन है। द्वितीय अध्याय के अंतर्गत समवशरण के 31 विभाग, समवशरण में वंदनारत जीवों की संख्या, समवशरण के प्रभाव से वैरत्व दूर एवं समवशरण में कौन नहीं जा



Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri



सकता इत्यादि विषयों की विस्तृत व्याख्या है। तीसरे अध्याय में समवशरण एवं सिद्धों के स्वरूप का बड़ा ही मार्मिक, रोचक सविस्तार वर्णन है।

इस कृति का प्रथम संस्मरण हिन्दी भाषा में प्रकाशित है। मूल्य 21/– रूपये

## (61) विश्व द्रव्य विज्ञान (द्रव्य संग्रह ) :- VI

इस द्रव्य संग्रह का आधुनिक अपरनाम पूज्य गुरूदेव ने 'विश्व द्रव्य विज्ञान' इसीलिए रखा है कि इसमें विश्व के मूलभूत जीव, पुद्गल, धर्म, अधर्म, आकाश, काल द्रव्यों का सांगोपांग वैज्ञानिक प्रणाली के साथ लगभग 60 आगमोक्त ग्रंथों के आधार पर बहुत ही मार्मिक / रोचक सविस्तार वर्णन किया है।

प्रथम अध्याय में छहों द्रव्य, उनके धर्म, उनके परस्पर उपकार का वर्णन किया गया है। जीव एवं पुद्गल द्रव्य वैभाविक परिणमन भी करते हैं, इसीलिए इन दोनों की विभिन्न शुद्ध एवं अशुद्ध पर्यायों का भी वर्णन है। जीव विश्व का सर्वश्रेष्ठ चैतन्य वैभव युक्त द्रव्य है। पुद्गल भौतिक जगत् का निर्माण करने के लिए कारणभूत है। पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु; ग्रह, चंद्र, नक्षत्र, निहारिका तथा जीव के शरीर आदि पुद्गल से ही निर्मित हैं। धर्मद्रव्य गतिशील जीव एवं पुद्गल को गति करने के लिए उदासीन सहायक है। अधर्मद्रव्य गति पूर्वक स्थित करते हुए जीव एवं पुद्गलों को स्थित करने में उदासीन सहायक है। आकाश द्रव्य समस्त द्रव्यों को अवकाश देता है। काल द्रव्य समस्त द्रव्यों के परिणमन में उदासीन कारण है। इस अध्याय में पुद्गल की शब्दादि पर्यायों के वर्णन में आधुनिक भौतिक विज्ञान एवं रासायनिक विज्ञान का वर्णन है।

द्वितीय अध्याय में सात तत्व, नव पदार्थ का विभिन्न दृष्टिकोणों से वर्णन है।

तृतीय महाधिकार में स्वाधीनता, (मोक्ष) प्राप्त करने के उपायों का वर्णन है। इस अध्याय में निश्चय एवं व्यवहार मोक्षमार्ग की परिभाषा के साथ–साथ दोनों मोक्षमार्ग के लिए कारणभूत ध्यान का सांगोपांग वर्णन किया है।

यह महान् श्रेष्ठ ग्रंथ केवल जैनधर्म की अमूल्य निधि नहीं है बल्कि विश्व की अमूल्य निधि तथा ज्ञान की कुंजी है। इसमें ज्ञान–विज्ञान के अनेक बीज भरे हैं। उनको आधुनिक वैज्ञानिक वातावरण में अंकुरित, पल्लवित, पुष्पित, फलीभूत करने के लिए यह कृति सभी के पढ़ने के लिए अति योग्य है।

यह कृति प्रथम संस्करण हिन्दी भाषा में प्रकाशित है। मूल्य सजिल्द 41 रूपये मात्र है।



Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri



# (62) व्यसन का धार्मिक वैज्ञानिक विश्लेषण : VII

मानव विश्व का सर्व श्रेष्ठ प्राणी है, क्योंकि मानव स्वयं के पुरुषार्थ के द्वारा मानव से महामानव एवं भगवान् बन सकता है। मानव को छोड़कर विश्व में ऐसा कोई जीव नहीं जो भगवान् बनने की सामर्थ्य रखता हो अतएव मानव जन्म की उपलब्धि ही महतोपलब्धि है।

इसप्रकार की मानव पर्याय को पाकर क्या करना चाहिए ? आत्महित, दुर्गति के कारणभूत कुसंगतियों का त्याग एवं स्वपर उपकारी तरण-तारण गुरु के अमृतोपम वचनों का पालन।

लेकिन बहुत दुःख होता है कि मानव अपने परम लक्ष्य को भूलकर अनैतिक व्यवहारों से दानवता की ओर बढ़ रहा है। विभिन्न व्यसनों का दास बनकर शारीरिक, मानसिक, आध्यात्मिक दुःखों को आमन्त्रित कर रहा है। एक सिगरेट पीने से सात मिनट आयु क्षय होती है। इससे अनुमान लगाया जा सकता है कि मद्यादि व्यसनों से कितने भयंकर रोग होते हैं।

मद्य,माँस, मछली, अण्डा, हेरोइन, तम्बाकू आदि तामसिक आहार होने के कारण मानव तामसिक भावों से आक्रान्त हो जाता है, जिससे वह मानव न रहकर दानव हो जाता है एवं कलह, अन्याय, अत्याचार, हिंसा, युद्ध, आतंक, गुण्डागर्दी, भ्रष्टाचार आदि दुष्प्रवृत्तियाँ करता है। विश्व में महायुद्ध से लेकर छोटे से छोटे कलहादि व्यसनों के कारण ही होते हैं। परस्त्री के कारण रामायण का युद्ध, द्यूत व्यसन से महाभारत युद्ध से लेकर ग्रीक आदि प्राचीन श्रेष्ठ सभ्यता के पतन के कारणों में व्यसनों का योगदान सर्वोपरि है।

व्यसन केवल सात ही नहीं होते बल्कि वर्तमान युग की खोज ने अनेकानेक व्यसनों की खोज कर ली है। जैसे- अश्लील सिनेमा, टी.वी. अश्लील प्रोग्राम, अश्लील अनैतिक काल्पनिक कुसाहित्य का पढ़ना-लिखना, हिंसात्मक, रोगात्मक बहुमूल्य प्रसाधन सामग्रियों का प्रयोग, कामचोरी, आलस्य, दहेज, रिश्वत, चापलूसी, फैशन, वृथा प्रदर्शन आदि।

प्रत्येक जीव अमृत स्वरूप है लेकिन विषपान कर रहा है। मद्य में अल्कोहल, माँस अण्डादि में कोलस्ट्रोल, डी.डी.टी. बीड़ी, सिगरेट आदि में निकोटिन, चाय काफी में कैफीन आदि विष होते हैं। जिसको व्यसनी लोग धन देकर सेवन करके आर्थिक, मानसिक, शारीरिक, आध्यात्मिक सभी प्रकार से क्षति उठाते हैं।



Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri



सभी प्रकार की क्षति से बचने के लिए एवं धार्मिक, नैतिक, वैज्ञानिक, आर्थिक, राष्ट्रीय, वैश्विक दृष्टिकोण को लेकर गुरुदेव ने विभिन्न दृष्टान्त, नीति श्लोक आदि के माध्यम से सभी को निर्व्यसनी, आदर्शमय जीवन जीने के लिए इस कृति की रचना की है। इस कृति का तृतीय संस्मरण हिन्दी भाषा में प्रकाशित हो गया है।

नये संस्मरण का मूल्य 30 रूपये है।

## (63) विश्व शांति के अमोध उपाय :- VIII

आज विश्व में चारों तरफ हर प्राणी अशांत, परेशान, दुःख, पीड़ा से व्यथित है। प्रत्येक व्यक्ति किसी न किसी प्रकार से दुःखी अशान्त है लेकिन प्रत्येक प्राणी सुख शांति चाहता है। यह सुख, शांति कैसे मिले इन कारणों की विशद विवेचना पूज्य गुरुदेव ने इस कृति में की है। अखिल जगत् के प्राणी इस कृति का अवश्य ही अध्ययन करके उन कारणों को अपने आचरण में क्रियान्वित करके वास्तविक, अविनाशी, अनंत, अक्षय सुख शांति को प्राप्त करें।

इस कृति का द्वितीय संस्करण हिन्दी भाषा में प्रकाशित है। मूल्य 10/– रू.

## (64) विश्व धर्म के दस लक्षण :- IX

वर्तमान समय में धार्मिक आयोजनों का बाहुल्य बहुत ऊँचे दर्जे पर है। हर गल्ली, मुहल्ले, सड़कों पर झंडे, बैनर, पोस्टर तथा विभिन्न संप्रदायों के प्रचारक–प्रसारक आदि देखने को सहज ही मिल जाते हैं। पूजा–पाठ, ध्यान, शिविर, भजन, कीर्तन, टी.वी. के द्वारा धार्मिक प्रवचन आदि सब कुछ बड़े पैमाने पर हो रहा है। लेकिन दूसरी तरफ यह देखा जाता है कि भ्रष्टाचार, दुराचार, पापाचार, बलात्कार, अपहरण, फूट, कलह, वैमनस्य, शोषण, अन्याय, अनीति, बेईमानी, रिश्वतखोरी, चारित्रहनन, आत्महत्यायें आदि दुष्प्रवृत्तियाँ दिन दूनी रात चौगुनी फल–फूल रही हैं। आखिर ऐसे दुष्कृत्य करने की शिक्षा कौन से धर्मग्रंथ में लिखी है ? कौनसा धर्म ऐसे दुष्कृत्य करने का उपदेश देता है ?

इस प्रकार की ज्वलन्त शंकाओं का शीतल सटीक समाधान इस कृति में प्रखर, ऋतम्भरा प्रज्ञा के धनी आचार्यश्री ने , भूले, भटके, भ्रमित लोगों को अपनी ओजस्वी, मीठी, मधुर, डाँट के द्वारा सत्य/सम्यक् मार्ग का पथ प्रशस्त किया है। आचार्यश्री ने इस कृति में उत्तम क्षमादि दस धर्मो की सम्यक् / सविस्तार/ सोदाहरण / वैज्ञानिक गवेषणा करते हुए विशेष इस बात पर बल दिया है कि बाह्य ढोंग–दिखावे को



Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri



छोड़कर अपने परिणामों को निर्मल, विमल, श्रेष्ठ, पवित्र, सहज, सरल बनाओ। परोपकारमय, निःस्वार्थमय मार्ग ही श्रेष्ठ, श्रेयस्कर मार्ग है। इस कृति को आबाल, वृद्ध, स्त्री, पुरुष सभी पढ़कर अपनी रुढ़िगत / मिथ्या मान्यताओं का परित्याग करके सम्यक् / सत्य मार्ग का अनुसरण करें।

इस कृति का प्रथम संस्मरण हिन्दी भाषा में प्रकाशित है।

मूल्य 41 रूपये मात्र है।

## (65) व्यक्ति एवं समाज निर्माण के आद्य कर्त्तव्य (सम्यक् दर्शन के आठ अंग) :– X

धर्मरूपी वृक्ष की मूल (जड़) सम्यक्दर्शन है। जैसे वृक्ष का मूल नष्ट हो जाने से वृक्ष की शाखा–प्रशाखाओं की वृद्धि नहीं हो सकती है उसी प्रकार सम्यक्दर्शन नष्ट होने से रत्नत्रय रूपी वृक्ष भी नष्ट हो जाता है जिससे मोक्ष रूपी फल की प्राप्ति नहीं होती। पुरुष के सम्यक्त्व से रहित शान्ति, ज्ञान, चारित्र तप इत्यादि का महत्व पत्थर के भारीपन के समान व्यर्थ है, परन्तु वही उसका महत्व यदि सम्यक्त्व से सहित है तो मूल्यवान मणि के समान पूज्यनीय है। सम्यक्दर्शन की प्राप्ति तीन लोक के ऐश्वर्य से भी श्रेष्ठ है। ऐसे श्रेष्ठ / मूल्यवान् / उत्कृष्ट सम्यक्दर्शन की प्राप्ति तीन मूढ़ताओं से रहित, आठ मदों (घमण्ड) से रहित, छः अनायतन से रहित तथा आठ शंकादि दोषों से रहित प्राणी को ही होती है।

इस कृति में पूज्य गुरुदेव ने 8 दिवसीय ''धर्म दर्शन विज्ञान प्रशिक्षण शिविर'' के तत्वावधान में प्रतिदिन सम्यक्दर्शन के आठ अंगों के ऊपर अपनी दिव्य, ओजस्वी, वैज्ञानिक भाषा शैली में विशद प्रकाश डाला है।

सम्यक्दर्शन के इच्छुक जन इस कृति का अवश्य ही अध्ययन, मनन, चिंतन करके स्व–पर को सम्यक्दर्शन प्राप्त करें– करायें एवं मोक्ष महल को प्राप्त करें।

इस कृति का प्रथम संस्करण हिन्दी भाषा में प्रकाशित है। मूल्य ?

## (66) शाश्वत समस्याओं का समाधान :- I

'जैसी दृष्टि वैसी सृष्टि' अर्थात् जैसी अन्तरंग परिस्थितियाँ होती है वैसी ही वैश्विक परिस्थितियाँ होती है। विश्व साहित्य के अध्ययन एवं इतिहास से ज्ञात होता है कि प्रायः सामान्य जीव जिस देश, काल एवं अवस्था में जीते हैं वे उसको



Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri



समस्यापूर्ण मानते हैं तथा अन्य को अच्छा मानते हैं। इसीलिए जितने भी महापुरूष होते हैं पहले स्वनिहित समस्याओं का समाधान करते हैं फिर दूसरों की समस्यायें या विश्वकी समस्याओँ का समाधान करते हैं।

पूज्य गुरुदेव ने इस कृति की रचना इस उद्देश्य को लेकर की है कि अखिल जगत् के प्राणी समस्त शारीरिक–मानसिक, पारिवारिक, सामाजिक एवं आध्यात्मिक समस्याओं को दूर करके निरापद, निर्मल, शाश्वत अविनाशी, अनंत अक्षय सुख को प्राप्त करें।

इस कृति का प्रथम संस्करण हिन्दी भाषा में प्रकाशित है।

मूल्य–18/– रू. पृष्ठ – 80

## (67) शांति-क्रांति के विश्व नेता बनने के उपाय (सोलह कारण भावना) : II

धर्म, सभ्यता–संस्कृति का उद्गम, प्रचार–प्रसार, उन्नयन, क्रांति एवं दृढ़ीकरण महापुरुषों से होता है। इस मानव समाज में कुछ ऐसे अलौकिक शक्ति, प्रतिभा के धारी क्रांतिकारी महापुरुष हुए है जिनसे मानव समाज को आगे बढ़ने में दिशा, उत्साह, प्रेरणा मिली है। यदि मानव समाज में प्रगतिशील, क्रांतिकारी महान् पुरुष नहीं होते तो शायद आज भी मानव समाज पशु समाज के समकक्ष ही होता। पशु समाज में ऐसे कोई उन्नतिशील जीव नहीं होते, जिससे पशु समाज की उन्नति हो।

मानव समाज विशेषतः अनुकरण प्रिय होने से उन महापुरुषों का अनुकरण करके, उनके पादचिन्हों पर यथा शक्ति कदम रखकर आगे बढ़ने का पुरुषार्थ करते हैं। महापुरुष रत्नदीप स्तम्भ के समान स्वयं को प्रकाशित करने के साथ–साथ दूसरों को भी प्रकाश प्रदान करते हैं।

इस कृति में आचार्य गुरुदेव ने सोलह कारण भावनाओं के प्रवचन के द्वारा यह सिद्ध किया है कि किस प्रकार की भावनाओं / कामनाओं के द्वारा तीर्थंकर प्रकृति का बंध होता है तीर्थंकरों का स्वरूप कैसा होता है ? इत्यादि विषयों का वैज्ञानिक आध्यात्मिक / मनोवैज्ञानिक तरीके से विभिन्न ग्रंथों के उदाहरण, गाथा, श्लोक, दृष्टान्त देते हुए सांगोपांग सविस्तार वर्णन किया है। यह कृति आबाल, वृद्ध, सभी के पढ़ने के लिए अति योग्य है।



Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri



इस कृति का प्रथम संस्करण हिन्दी भाषा में प्रकाशित है।

मूल्य–41/– रूपये मात्र है।

## (68) शकुन विज्ञान :- III

जीवन में जैसे निमित्त का महत्वपूर्ण स्थान है उसी प्रकार शकुन का भी है। शकुन अशुभ और शुभ होते हैं। शकुन का ज्ञान पशु, पक्षी, नक्षत्र, सूर्य–चन्द्र, बादल, मनुष्य, बालक, स्त्री आदि से होता है। यह शकुन पूर्वोपार्जित पुण्य–पाप कर्म के उदय के कारण दिखाई देते हैं। शास्त्रों में अशुभ शकुन को दूर करने के लिए इष्ट देव की प्रार्थना, पूजा, मंत्र, जाप दान आदि विधान पाये जाते हैं।

शकुन का वर्णन भद्रबाहु संहिता, रिष्ट समुच्चय, भगवती आराधना आदि आर्ष ग्रंथों में पाया जाता है। पूज्य गुरुदेव ने जैन धर्म में वर्णित शकुन के साथ–साथ बौद्ध, हिन्दु ग्रंथों आधुनिक अनेकों शोधपूर्ण पत्र–पत्रिकाओँ के माध्यम से इस कृति की रचना की है। शकुन विज्ञान को जानकर मानव भविष्य की घटनाओं का यथायोग्य परिज्ञान करके लाभान्वित हो इसी उद्देश्य को लेकर पूज्य गुरुदेव ने इस कृतिकी रचना की है।

इस कृति का प्रथम संस्करण हिन्दी भाषा में प्रकाशित है।

मूल्य–30 रू. पृष्ठ–285

## (69) संगठन के सूत्र :- IV

कुछ महान् उद्देश्य को सम्पादन करने के लिए जो सम्यक् रूप से गठन किया जाता उसे संगठन कहते हैं। संगठन का महत्व परिवार, समाज, राष्ट्र, राजनीति, धर्मनीति, सभी क्षेत्रों में है। मंदिर, नहर, जलाशय, धर्मशाला, विद्यालय, चर्च, चिकित्सालय आदि का निर्माण कार्य बिना संगठन के नहीं हो सकता। बिना संगठन के धार्मिक, सामूहिक उत्सव, क्रांतिकारी–राष्ट्रीय विप्लवादि भी नहीं हो सकते। विघटन के कारण विश्वगुरु भारत को पराधीनता की जंजीरों में बहुत समय तक बँधना पड़ा था; उन्हीं जंजीरों को हमारे भारत के महान् सपूतों ने संगठित होकर तोड़ डाला।

वर्तमान समय में परिवार, समाज, धर्म, राष्ट्र एवं अन्तर्राष्टों को संगठन की अत्यधिक आवश्यकता है क्योंकि आज परिवार आदि विघटन के कारण बिखर रहे हैं।



Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri



इस विघटन की परिस्थिति को देखकर पूज्य गुरूदेव का अन्तरंग दुःख पीड़ा की कसक के कारण बाल्यकाल से अत्यधिक दुःखी, रहता था। गुरुदेव की बाल्यकाल से ही यही भावना/कामना थी कि परिवार, समाज, धर्म, कानून, राष्ट्र एवं सम्पूर्ण विश्व में संगठन की भावना जागृत हो एवं अखिल मानव जगत् भाई–भाई रूप से, कंधें से कंधा मिलाकर संगठित होकर रचनात्मक कार्य करने के लिए आगे बढ़े। ऐसी शुभ, पवित्र, मंगल भावना, कामनाओं को लेकर जैन, बौद्ध, हिन्दू तथा मनोविज्ञान में वर्णित संगठन के विभिन्न सूत्रों का वर्णन इस कृति में किया है।

इस कृति को पढ़कर विघटित हो रहे जो भी प्राणी हैं वे सभी संगठित होकर विश्व के मंगलमय एवं रचनात्मक कार्यों को करने के लिए आगे आयें।

विघटित / विखण्डित / परिवार, समाज, राष्ट्र, विश्व को संगठित रूप से सूत्रित / ग्रंथित करने के लिए इस अनुपम कृति का द्वितीय संस्करण हिन्दी भाषा में प्रकाशन हो चुका है। नये संस्करण का मूल्य 25/– रूपये मात्र है।

## (70) संस्कार :- V

विश्व का सर्वश्रेष्ठ प्राणी मनुष्य है क्योंकि मानव अपना विवेक, पुरुषार्थ, ज्ञान–विज्ञान से स्वयं को सुसंस्कारित करके उन्नति के सर्वोच्च शिखर पर पहुँच सकता है। केवल बड़ी–बड़ी अट्टालिकायें या भोगोपभोग सामग्रियों की उपलब्धि से कोई भी परिवार, समाज, राष्ट्र, विश्व महान्, आदर्श नहीं बन सकता। समाजादि को महान् आदर्श, श्रेष्ठ बनाने के लिए महान् व्यक्तित्ववाला मनुष्य चाहिए। क्योंकि महान् व्यक्तियों के समूह से ही महान् समाज बनता है एवं महान् समाज के समूह से महान् राष्ट्र बनता है, महान् राष्ट्र के समूह से महान् विश्व का निर्माण होता है। अभी परिवार, समाज, राष्ट्र, विश्व के निर्माण की बुलन्द आवाज हर क्षेत्र से आ रही है परन्तु मानव निर्माण का लक्ष्य किसी का नहीं है अतः देश सामाजादि को योग्य प्रगतिशील, समुन्नत, सुसंस्कृत बनाना है तो पहले व्यक्ति निर्माण कार्य को प्रधानता दे। इसी उद्देश्य को लेकर पूज्य कनकनंदीजी गुरुदेव ने महती, शुभ, मंगल भावना कामना के साथ इस 'संस्कार' पुस्तक का विभिन्न दृष्टान्त, गाथा, श्लोक, सैद्धान्तिक, आध्यात्मिक, नैतिक, चारित्रिक सत्य तथ्यों को देते हुए प्रतिपादन किया है कि सभी स्व–पर को सुसंस्कारित करें एवं कुसंस्कारों का त्याग



Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri



करके अनंत, अविनाशी, अक्षय मोक्ष सुख को प्राप्त करें। यह पुस्तक 5 भाषाओं में अनुवादित है एवं सभी में अत्यधिक लोकप्रिय होने के कारण इसके 15 संस्करण निकल चुके हैं। बृहत् संस्कार मूल्य– 30/– रू., छोटे संस्कार का मूल्य–5/–रू.

## (71) स्वप्न विज्ञान :- VI

बाहर की दुनियाँ जैसे विचित्रमय है वैसे ही भावनात्मक दुनियाँ भी विचित्रमय है। भावनात्मक दुनियाँ को जानने के लिए, शोध–बोध करने के लिए अनादि काल से मानव संलग्न है। इसका अध्ययन करनेवाले ऋषि, मुनि, तीर्थंकर, पैगम्बर, धर्म प्रचारक दार्शनिक, मनोवैज्ञानिक, वैज्ञानिक आदि होते हैं। इसका अध्ययन कोई आध्यात्मिक दृष्टि से, कोई मानसिक दृष्टि से, कोई स्वप्न की दृष्टि से करते हैं। स्वप्न को जानने के लिए आध्यात्मिक एवं मानसिक दृष्टिकोण का भी अध्ययन होना चाहिए क्योंकि स्वप्न का संबंध इन सबसे है।

निद्रावस्था में स्थूल भौतिक दृष्टि के बिना मानसिक दृष्टि से जो कुछ दृश्य दिखायी देते हैं उसे स्वप्न कहते हैं। जीवन में प्रत्येक व्यक्ति कोई न कोई स्वप्न अवश्य देखता है। स्वप्न अनेक प्रकार के होते हैं जिसका विस्तार से वर्णन जैन, हिन्दू, आयुर्वेद,आधुनिक मनोविज्ञान, विभिन्न शोधपूर्ण पत्रिकाओं में वर्णित स्वप्न विषयों का संकलन इस कृति में किया है। प्रथम, द्वितीय, तृतीय आदि अध्यायों में विभिन्न स्वप्नों के विभिन्न फल, स्वप्न दर्शन, शुभाशुभ सूचक स्वप्न, तीर्थंकर के जन्म सूचक 16 स्वप्न, आयुर्वेद (चरकसंहिता) में वर्णित स्वप्न, मनोविज्ञान में वर्णित स्वप्न, बौद्धधर्म में वर्णित स्वप्न इत्यादि विषयों पर विभिन्न गाथा, श्लोक, सूत्रों द्वारा सविस्तार वर्णन है। समस्त मानव इस कृति का अध्ययन करके शुभ–अशुभ स्वप्नों का परिज्ञान करके अशुभ से बचकर शुभ मार्ग में प्रवृत्त हो।

इस कृति की अत्यधिक लोकप्रियता / महत्ता / श्रेष्ठता होने के कारण इसका द्वितीय संस्करण हिन्दी भाषा में प्रकाशित है। सजिल्द पुस्तक का मूल्य 51/– रू. पृष्ठ–275

## (72) स्वतन्त्रता के सूत्र (मोक्षशास्त्र, तत्वार्थसूत्र): VII

तत्वार्थ सूत्र ग्रंथ समुद्र के समान अथाह, आकाश के समान व्यापक, अणु के समान सूक्ष्म, शुद्ध आत्मा के समान पवित्र, आत्मज्ञान के समान गूढ़ एवं रहस्यपूर्ण होने के कारण इसके ऊपर बड़े–बड़े आचार्यों ने बड़ी–बड़ी टीकायें की हैं। इतना



Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri



ही नहीं आधुनिक पंडितों ने भी अनेक टीकायें की हैं।

परम पूज्य महावैज्ञानिक गुरूदेव ने मोक्षशास्त्र ग्रंथ की जो टीका की उनका उद्देश्य कुछ इन सभी से विशेष ही है। गुरदेव का मुख्य उद्देश्य था कि तत्त्वार्थसूत्र में निहित वैज्ञानिक तथ्यों को उजागर करना आधुनिक युग वैज्ञानिक युग है। वैज्ञानिक दृष्टिकोण से धार्मिक सिद्धान्तों का प्रतिपादन करने से धार्मिक सिद्धान्त जो गूढ़ एवं शुष्क रहते हैं वही सिद्धान्त सरल एवं सुरुचिपूर्ण हो जाते हैं।

दूसरा उद्देश्य यह भी था कि धार्मिक दृष्टि से विज्ञान को समझने के लिए और विज्ञान की दृष्टि से धर्म को समझाने के लिए जो विद्यार्थी एवं शोधकर्ता चाहते हैं उन्हें इस कृति का मार्गदर्शन मिले एवं आगे किसी भी विषय का शोध करने के लिए दिशा बोध भी मिले।

तीसरा उद्देश्य यह था कि उमास्वामी आचार्य ने जो कुछ कहा है उस सिद्धान्त सम्बन्धित अन्यान्य आचार्यों ने क्या कहा है उसका भी पूज्य गुरुदेव ने इस कृति में दिग्दर्शन कराया है।

चौथा उद्देश्य यह है कि अभी तक जो आधुनिक हिन्दी टीकायें हुई हैं, उसमें संक्षिप्त वर्णन है इसीलिए उस विषय को विस्तार से विद्यार्थी लोग हृदयंगम करें।

इस कृति की रचना करने के लिए जैनाचार्यों द्वारा प्रणीत आर्ष परम्परा के लगभग 50-60 ग्रंथों के साथ-साथ पातञ्जलि योगदर्शन, महाभारत आदि जैनेतर अनेकों कृतियों का अवलम्बन भी मिला है। इसीलिए इस कृति का जो गंभीरता के साथ तलस्पर्शी अध्ययन करता है उसके मुँह से आश्चर्य के साथ प्रशंसा के स्वर अवश्य ही प्रस्फुटित होते हैं कि वैज्ञानिक धर्माचार्य कनकनंदी जी गुरुदेव ने ऐसी महान् / श्रेष्ठ / उत्कृष्ट कृति की रचना करके हम अज्ञानियों की गुप्त-सुप्त चेतना को जागृत किया है। धन्य हैं ऐसे महिमा मण्डित, ओजस्वी, तेजस्वी, ज्ञानी-विज्ञानी पूज्य गुरुदेव।

इस कृति का द्वितीय संस्मरण हिन्दी भाषा में प्रकाशित है। मूल्य 71/- रू. पृष्ठ - 660

## (73) सत्य धर्म :- VIII

केवल वाचनिक सत्य ही पर्याप्त नहीं है, उसके साथ-2 मानसिक एवं कृतित्व सत्य भी चाहिए। आज हर क्षेत्र में असत्य का ही बोलबाला है भले ही न्यायालय, विद्यालय, देवालय, गृहालय क्यों न हो। जबतक जीव के भावों में सत्य के प्रति



Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri



आस्था / श्रद्धा / विश्वास / समर्पण के साथ–साथ सत्य का परिज्ञान एवं सत्यानुकूल आचरण नहीं होगा, तब तक जीव सत्य को एवं सुख शांति को प्राप्त नहीं कर सकता।

विश्व में शांति की स्थापना किसी भी भौतिक साधन से, राजनैतिक कारण से, वैज्ञानिक उपकरणों से नहीं हो सकती है। शांति की स्थापना केवल सत्य के ही माध्यम से हो सकती है।

शांति के इच्छुक प्राणी सत्य के शोध–बोध के साथ–साथ, सत्य का अनुकरण करें इसी उद्देश्य, लक्ष्य, भावना, कामना को लेकर सत्यप्रेमी पूज्य गुरुदेव ने इस कृति की रचना की है।

इस कृति का प्रथम संस्करण हिन्दी भाषा में प्रकाशित है।

मूल्य–5/– रू. पृष्ठ – 50

## (74) सत्यसाम्य सुखामृतम् (प्रवचनसार) :- IX

प्रकृष्ट / श्रेष्ठ / उत्तम / निरवद्य वचन / कथन / प्रतिपादन को प्रवचन कहते हैं। वस्तुतः प्रवचन सर्वज्ञ, हितोपदेशी अरहंत / आप्त / परमात्मा का ही हो सकता है। गणधर का वचन भी प्रवचन नहीं हो सकता क्योंकि गणधर सर्वज्ञ नहीं होते। प्रवचनसार का संक्षिप्त अर्थ होता है प्रकृष्ट प्रवचन (दिव्यध्वनि, तीर्थंकर केवली अरिहंत के वचन) का सार। प्रवचन का दूसरा अर्थ है स्वशुद्धात्मा।

प्रवचनसार (सत्यसाम्य सुखामृतम्) में तीन महाधिकार हैं। प्रथम महाधिकार में ज्ञानतत्व प्रज्ञापना है। इनमें 92 गाथाओं में आचार्य कुंद–कुंद देव ने ज्ञान का गहन, मार्मिक, दार्शनिक, वैज्ञानिक तार्किक वर्णन करके यह सिद्ध किया है कि स्वभाविक ज्ञान ही सुख स्वरूप है तथा वह ज्ञान संकल्प–विकल्प आकुलता से रहित होता है।

द्वितीय महाधिकार ज्ञेयतत्व प्रज्ञापन है। इसमें 108 गाथायें हैं। इसमें षट्द्रव्य तथा उसके गुण, धर्म, स्वभाव का बहुत ही व्यापक वैज्ञानिक वर्णन है। इस अध्याय में विश्व के जितने दर्शन हैं उनके द्वारा प्रतिपादित समस्त ज्ञेयों का वर्णन सम्यक् रीति से है। इतना ही नहीं आधुनिक विज्ञान की रसायन विज्ञान, भौतिक विज्ञान, सापेक्ष सिद्धान्त, मनोविज्ञान आदि की विभिन्न शाखा–प्रशाखाओं का मूलभूत सैद्धान्तिक वर्णन सूत्रस्वरूप में बीज स्वरूप में किया गया है।



Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri



तृतीय महाधिकार श्रमणाचरण संहिता है। इसमें 75 गाथायें हैं। इसमें श्रमणों के आचरण का मौलिक ढंग से वर्णन है। सन्दर्भ प्राप्त गौण रूप से श्रावक धर्म का भी कुछ वर्णन किया गया है।

इस ग्रंथ में आचार्य कुंद–कुंद देव की गाथा, जयसेनाचार्य की तात्पर्यवृत्ति संस्कृत टीका, स्व.पं. अजितकुमार शास्त्री तथा स्व.पं. रतनलालजी मुख्त्यार के भाषानुवाद के साथ पूज्य गुरुदेव की वैज्ञानिक सारगर्भित, शोधपूर्ण समीक्षा है। कुछ स्थल में अमृतचन्द्रसूरि कृत तत्वप्रदीपिका नामक संस्कृत टीका को भी गर्भित किया गया है।

वैज्ञानिक, शोधपूर्ण, सारगर्भित, समीक्षा में पूज्य गुरुदेव ने जैन, बौद्ध, वैदिक, आधुनिक वैज्ञानिकों के विभिन्न साहित्यों का समावेश किया है। इस विशद, श्रेष्ठ, महान् ग्रंथ का प्रथम संस्करण हिन्दी भाषा में प्रकाशित है।

मूल्य 301/– रूपये, पृष्ठ–1100

## (75) सर्वोदय शिक्षा मनोविज्ञान :- X

जिसके द्वारा मनुष्य सर्वांगीण / सर्वतोमुखी / सार्वभौम / सर्वोदय / शारीरिक, मानसिक, आध्यात्मिक / व्यक्तिगत / सामाजिक / आर्थिक / परमार्थिक आदि समस्त विकास / उन्नति / प्रगति / क्रांति को करके समस्त सुख / शांति / ज्ञान–विज्ञान / संस्कार / संस्कृति / संभावनाओं को प्राप्त कर सकता है उसे शिक्षा, / विद्या / ज्ञान / प्रशिक्षण / अध्ययन कहते हैं। केवल अक्षरात्मक, पुस्तकीय, विद्यालयी, पेट, पेटी, प्रजननादि संकीर्ण उद्देश्य के लिए प्राप्त की हुई जानकारी ही यथार्थ शिक्षा नहीं है। अक्षरात्मक शिक्षा तो केवल यथार्थ शिक्षाके लिए माध्यम है जैसे– एक स्थान में पहुँचने के लिए सड़कादि मार्ग है। उस यथार्थ शिक्षा को प्राप्त करने के लिए यथार्थ शिक्षा प्रणाली, शिक्षार्थी, शिक्षक, शिक्षा का सुफल तथा इसके विपरीत कुशिक्षा, शिक्षार्थी शिक्षक, शिक्षा के कुफल का भी परिज्ञान होना चाहिए। इससे ही सुशिक्षादि को जानकर सुशिक्षादि ग्रहण कर सकते हैं और कुशिक्षादि को जानकर कुशिक्षादि का त्याग कर सकते हैं।

वर्तमान परिवेश में शिक्षा का स्तर बहुत ही विचारणीय है। शिक्षा सभी प्राप्त कर रहे हैं लेकिन किस ढंग से, पद्धति से शिक्षा ली एवं दी जाती है इसका सर्वांग ज्ञान न तो शिक्षक को है और न उनके माता पिता और न शिक्षार्थी को। इसीलिए



Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri



पूज्य गुरुदेव ने शिक्षा संबंधी अनेकों विकृतियों को देखते हुए इस महान् / श्रेष्ठ / उत्कृष्ट कृति की रचना करके इसमें जैन, वैदिक, बौद्ध एवं आधुनिक अनेक कृतियों का सहारा लेकर लगभग 25 अध्यांयों में शिक्षा का स्वरूप एवं उद्देश्य, भारतीय शिक्षा प्रणाली, उसकी विभिन्न शाखा–प्रशाखायें, स्त्री शिक्षा का महत्व, गाँधीजी की शिक्षा, आध्यात्मिक शिक्षा, संस्कार–शिशु एवं शरीर, सुयोग्य विद्यार्थी के लक्षण आदि विद्यार्थी के योग्य आहार विहार–आसनादि, योग्य शिक्षक के गुण, लक्षण, विश्व के घटकों से प्राप्त विभिन्न शिक्षायें, ज्ञानोपलब्धि तथा ज्ञानोपयोग, श्रुतज्ञान या शिक्षाज्ञान, कुशिक्षा, शिक्षार्थी, शिक्षक शिक्षा का दुरुपयोग, ट्यूशन के दुष्परिणाम इत्यादि विषयों का सविस्तार, वैज्ञानिक, उदाहरणों सहित बड़ा ही सुंदर वर्णन इस कृति में किया है। आधुनिक परिवेश के शिक्षक एवं शिक्षार्थियों के लिए यह पुस्तक पढ़ने के अति योग्य है। इस कृति का प्रथम संस्करण हिन्दी भाषा में प्रकाशित है। मूल्य–201/– रूपया, पृष्ठ–642

सर्वोदय शिक्षा मनोविज्ञान (छोटा) मूल्य–21.00

## (76) राष्ट्रीय संगोष्ठी की स्मारिकायें : XI से XIV

1. स्वतन्त्रता के सूत्र (तत्वार्थ सूत्र) के परिप्रेक्ष्य में विज्ञान :– शाश्वतिक सच्चे धर्म को आधुनिक वैज्ञानिक युग में विश्व को कल्याण, समृद्धिशाली बनाना वर्तमान युग की मांग है। इस माँग को सम्यक् समझते हुए पूज्य गुरुदेव ने राष्ट्रीय वैज्ञानिक संगोष्ठी का बड़े पैमाने पर आयोजन किया। इस संगोष्ठी में आचार्य उमास्वामी कृत 'मोक्ष शास्त्र' के ऊपर गुरुदेव द्वारा की गयी समीक्षात्मक वैज्ञानिक टीका में निहित विभिन्न धर्म, दर्शन, विज्ञान, कर्म सिद्धान्त, शाकाहार, पर्यावरण, मनोविज्ञान, कानून, अहिंसा, विश्व मैत्री, सप्त तत्व आदि विषयों के ऊपर शोधार्थियों ने अपने शोधपत्र प्रस्तुत किये।

इस संगोष्ठी में पूरे भारत के जैन, हिन्दू, मुसलमान, वैज्ञानिक, प्रफोसर्स, डॉक्टर्स, इंजीनियरों आदि ने भाग लिया।

द्वितीय राष्ट्रीय वैज्ञानिक संगोष्ठी भी इसी कृति के परिप्रेक्ष्य में हुई जो कि सत्य शोधक द्वितीय राष्ट्रीय वैज्ञानिक संगोष्ठी स्मारिका रूप से हिन्दीभाषा में प्रकाशित हुई। प्रथम स्मारिका का मूल्य–81/– रू. सत्य शोधक (द्वितीय स्मारिका) का मूल्य 51/– रू.



Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri



*शिक्षा शोधक तृतीय संगोष्ठी की स्मारिका :–* प्राचीन काल से भारत विश्वगुरु के नाम से विख्यात रहा है। ज्ञान–विज्ञान, धर्म, दर्शन, कला आदि क्षेत्रों में भारत ने प्राचीनकाल में श्रेष्ठतम मनीषियों, वैज्ञानिकों, विद्वानों, चिन्तकों, दार्शनिकों, के माध्यम से संपूर्ण विश्व को जीवन के प्रत्येक आयाम पर सुस्पष्ट मौलिक चिंतन दिया। विदेशी जिज्ञासुओं की ज्ञान–विज्ञान प्राप्ति हेतु तथा शिक्षण–प्रशिक्षण जिज्ञासुओं की ज्ञान–विज्ञान प्राप्ति हेतु तथा शिक्षण–प्रशिक्षण प्राप्त करने के लिए उपस्थित भी यही सिद्ध करती है परन्तु भौगोलिक, सांस्कृतिक ऐतिहासिक कारणों से विश्वगुरु का गौरवमयी पद शनै–शनै समाप्त हो गया। स्वतन्त्रता प्राप्त करने के बाद भी विदेशी ज्ञान विज्ञान को ही हम कब तक आदर्श मानकर बैठे रहेंगे ?

यह चिन्ता गुरुदेव विगत कई वर्षों से अनुभव कर रहे थे। महानतम शोध–बोध, चिंतन–मनन, विचार विमर्श के पश्चात् अथक व अनवरत् प्रयासों से 'सर्वोदय शिक्षा मनोविज्ञान' महान् / उत्कृष्ट / श्रेष्ठ / विशद ग्रंथ की रचना करके भारत की गरिमा को सुदृढ़ व पुनर्जीवित किया और इसी संदर्भ में तृतीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया। इस संगोष्ठी में देश–विदेश के बड़े–बड़े शोधार्थियों ने भाग लेकर वर्तमान शिक्षा पद्धति में भारतीय सांस्कृतिक मूल्यों व दर्शन तत्वों का समावेश कर विद्यार्थियों में सुसंस्कारित भावना, राष्ट्रीय चारित्र, आत्मगौरव, स्वावलम्बन की भावना का विकास इत्यादि विषयों पर अपने शोधपत्र प्रस्तुत किये।

चतुर्थ विराट राष्ट्रीय वैज्ञानिक संगोष्ठी भी 'सर्वोदय शिक्षा मनोविज्ञान' ग्रंथ के परिप्रेक्ष्य में संपन्न हुई।

शिक्षा शोधक स्मारिका हिन्दी भाषा में प्रकाशित है।

मूल्य–101/– रू. पृष्ठ–150

## (77) संस्कृति की विकृति : XV

जो जीव को संस्कार / परिष्कार / परिमार्जन / परिष्कृत करें उसे संस्कृति कहते हैं। इससे विपरीत जो जीव को विकार / विभाव / बिगाड़ / विकृत करें उसे विकृति कहते हैं। संस्कृति से जीव विकास / उन्नति / प्रगति करके सुख, शांत, संपन्न समृद्ध बनता है तो विकृति से जीव दीन, हीन, पतित बनकर दुःखी, विपन्न, अशान्त, बनता है। जैसे कि लक्ष्य स्थल को सरलता से प्राप्त करने के लिए यान–वाहन का सहारा लिया जाता है परन्तु उसके असम्यक् प्रयोग से दुर्घटना,



Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri



मृत्यु तक हो जाती है इसी प्रकार संस्कृति का जब असम्यक् प्रयोग होता है तब विकृति हो जाती है।

इस कृति में पूज्य गुरुदेव ने यह सिद्ध किया है कि धार्मिक पूजा–पाठ, रीति रिवाज, पर्व, तीर्थयात्रा, उपवास, रस त्याग, आधुनिक शिक्षा, धार्मिक शिक्षा, सत्ता, शक्ति, अधिकार, कर्त्तव्य, धन इत्यादि की विकृति कैसे विकसित होकर फलती–फूलती जा रही है।

जन साधारण इस कृति का अध्ययन करके संस्कृति को जाने–माने–पहिचाने एवं ग्रहण करे तथा विकृति का त्याग करे।

इस कृति का प्रथम संस्करण हिन्दी भाषा में प्रकाशित है। मूल्य 10/– रू. पृष्ठ–40

## (78) समग्र क्रांति के उपाय :- XVI

समग्र क्रांति के प्रणेता पूज्य गुरुदेव ने इस कृति में "धर्म दर्शन विज्ञान शोध संस्थान" के तत्वावधान में आयोजित ६ दिवसीय "समर्पित कार्यकर्ता प्रशिक्षण शिविर" के अंतर्गत अपनी अमृतमयी, दिव्य, ओजस्वी, महिमा मण्डित देशना से जन–जन की सुप्त–गुप्त चेतना को जागृत किया है। ६ दिनों के अंतर्गत क्रमशः गुरुदेव ने बताया कि (1) "सामाजिक कुरीतियों को दूर करने के लिए जन जागृति चाहिए।" (2) भारत को पुनः विश्वगुरु बनाने में सुसंस्कारित बालक ही कामयाब होंगे। (3) व्यसन से विनाश तथा निर्व्यसन से विकास (4) स्वयं का अवलोकन तथा स्वकर्त्तव्यों का पालन करना ही जीवन जीने की श्रेष्ठ कला है। (5) महान् पुरुषों का आचरण करने से ही स्वयं का जीवन महान् बनता है। (6) शक्ति और मर्यादा का प्रेरक पर्व–विजयादशमी। इस प्रकार इस कृति का जन साधारण अध्ययन करके लाभान्वित हो। इस कृति का प्रथम संस्करण हिन्दी भाषा में प्रकाशित है।

मूल्य 15/– रू. पृष्ठ–80

## (79) सत्यान्वेषी आचार्य कनकनंदी कृतित्व एवं व्यक्तित्व :- XVII

प्रकाश पथ का पथिक, मुक्तिपथ का आराधक, प्रकाश का ज्ञान कराने के लिए, जीवन को सौरभमय, उज्ज्वलमय, कीर्तिमय कैसे बनाया जाता है? इस



Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri



कथा को जानना अनुपम, अनिवर्चनीय आनंद से गुजरना है।

इसी अनुपम, अनिवर्चनीय, महात्मा दिव्यात्मा, पुण्यात्मा संत पुरुष की अलौकिक जीवनी का वर्णन इस कृति में है।

जिज्ञासु इस कृति को पढ़कर अपने जीवन में इस शिक्षा को ले कि गुरुदेव ने बाल्यावस्था से लेकर आचार्य बनने तक अपने जीवन में कौन–कौन से महान् / श्रेष्ठ / उत्कृष्ट कार्य करके अपने जीवन को इतना महान् बनाया।

इस कृति का प्रथम संस्करण हिन्दी भाषा में प्रकाशित है। मूल्य–5/– रू.

## (८०) सर्वांग विज्ञान की वैज्ञानिक गवेषणा (भाव-भाग्य एवं अंग विज्ञान ) : XVIII

अपने रोजमर्रा के जीवन में जितने लोगों के सम्पर्क में आते हैं उनकी आकृति देखकर उसका बहुत कुछ अंदाज लगा लिया जाता है कि उसका स्वभाव, चाल–चलन, चारित्र आदि कैसा है यह अनुमान बहुत अंशों में सही उतरता है। प्राचीनकाल से ही इस विद्या की खोज जारी है अनेकों अन्वेषकों ने इस दिशा में बहुत खोज की है और जो रतन उन्हें मिले उनको सर्वसाधारण के सामने प्रकट किया। रामायण, महाभारत, वेद, पुराण आदि ग्रंथों से यह पता चलता है कि इस विद्या में भारतवासी पुराने समय से परिचित हैं।

इस कृति की रचना करने में पूज्य गुरुदेव ने जैन, बौद्ध, हिन्दू आदि के प्रामाणिक लगभग 60–65 ग्रंथों का अवलंबन लेकर प्रथम अध्याय में बाह्य अंग एवं अन्तरंग भावों का अन्तः संबंध, विभिन्न व्यक्तित्व के कारण, लग्न के अनुसार काय एवं रोग, पुण्य पुरुष के उत्तम अंगोपांग, शरीर के अंग प्रत्यंग के माप, पुरुष सर्वांग विज्ञान, स्त्री सर्वांग विज्ञान, हस्त से व्यक्तित्व ज्ञान, अंगविज्ञान से आयुज्ञान, स्वरोदय विज्ञान, वैराग्य सूचक अंग विज्ञान, आहार–विहार, आचरण से व्यक्तित्व का ज्ञान, झूठ पकड़ने के उपाय, रंग पसन्द से व्यक्तित्व का ज्ञान इत्यादि विषयों का बहुत ही विस्तृत एवं सारगर्भित वर्णन किया है।

इस कृति का प्रथम संस्करण हिन्दी भाषा में प्रकाशित है। सजिल्द पुस्तक का मूल्य 151/– रू. पृष्ठ –475



Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri



## (81) सेवा धर्म : जीवन्त धर्म :- XIX

देश–विदेश के समस्त धार्मिक, सामाजिक, राजनैतिक, शैक्षणिक, वैज्ञानिक आदि महापुरुषों की सबसे बडी विशेषता यदि कुछ है तो वह है भावों की पवित्रता एवं दूसरों के प्रति दया, सेवा, परोपकारिता लेकिन यह सब होते हुए भी अधिकांश व्यक्ति सेवा को बहुत कम महत्व देते हैं। सामान्यतः सेवा को नौकरों / गुलामों की दासवृत्ति / नीचवृत्ति माना जाता है लेकिन सेवा से ही अधिकांश मानव महामानव बने हैं। यहाँ तक कि तीर्थंकर भी सेवा के कारण ही बने हैं।

गुरुदेव ने पहले अपने जीवन में दया, करुणा, परोपकार, सेवा, सहानुभूति, संगठन, सहिष्णुता आदि सद्गुण क्रियान्वित करके बाद में अखिल जगत् के प्राणियों में दया, करुणा, परोपकार, सेवा, सहानुभूति आदि सद्गुण उत्पन्न हों ऐसी उदार, करुणा वात्सल्य, शुभ,मंगल, पवित्र भावनाओं / कामनाओँ को लेकर विभिन्न उद्धरण एवं उदाहरणों के माध्यम से इस कृति की रचना की है।

इस कृति का प्रथम संस्करण हिन्दी भाषा में प्रकाशित हो गया है।
मूल्य 11/– रूपये मात्र है। पृष्ठ

## (82) हिंसामय यज्ञ का प्रारम्भ क्यों ? :- XX

यह शाश्वत सत्य है कि प्राणी स्वभावतः अहिंसक है तथा अहिंसा का उपासक है। यदा–कदा भ्रष्ट व्यक्तियों ने उन्हें पथ से विचलित करने के प्रयास किये। किंतु ऐसे प्रत्येक परीक्षा काल में तीर्थंकर, महान् दिव्य पुण्य पुरुषों ने आकर उन्हें जागृत किया एवं करुणा की एक अनन्त धारा प्रवाहित की। समय–समय पर कुछ पथ विचलित व्यक्तियों ने पूजा, विधान आदि में परिवर्तन करके यज्ञ आदि प्रारम्भ किये और उनमें निरीह पशुबलि को उचित ठहरा दिया।

वर्तमान समय में हिंसा का ताण्डव नृत्य हो रहा है उसमें भी अत्यधिक हिंसा भारत जैसे धर्म प्रधान देश में अधिक हो रही है। भारत में लगभग 35 हजार यांत्रिक कत्लखाने हैं जिनमें लगभग प्रतिदिन हजारों पशुवध होता है।

गुरुदेव का कोमल हृदय इस वज्र आघात को सहन नहीं कर सका और उनके दुःखी मन एवं हाथों से लेखनी चल पड़ी। इस कृति में पूज्य गुरुदेव ने जैन, बौद्ध, हिन्दू आदि सम्प्रदायों के प्राचीन धार्मिक साहित्यों से यह सिद्ध किया है कि प्राचीन



Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri



काल में भारत में किसी भी धर्म में हिंसामय यज्ञों का प्रचलन नहीं था। इस कृति के कर्ता की सार्थकता तभी सिद्ध होगी जब इस कृति को पढ़ने वाले अपने आजू–बाजू सभी में हिंसा की तरफ बढ़ते हुए कदमों को रोकने का सतत प्रयत्न पुरूषार्थ करें, करवायें, करते हुओं का सहकार सहयोग तन–मन–धन समय के साथ करें।

इस कृति का प्रथम संस्करण हिन्दी भाषा में प्रकाशित है।

मूल्य मात्र 7/– रूपये पृष्ठ–80

## (83) क्षमा वीरस्य भूषणम् :- I

जो महान् व्यक्ति होते हैं वे क्षमाशील होते हैं। जो क्षुद्र होते हैं वे सतत् क्षुभित रहते हैं, क्योंकि व्यक्ति जब क्रोध करता है तब उसके, मन, वचन, काय में विशेष परिस्पन्दन होता है, जिससे तीव्र पापकर्म का बंध होता है और उस पापबंध के कारण जीव का अधःपतन होता है। क्रोधी पुरुष का विवेक नष्ट हो जाता है, जिससे वह हिताहित, करणीय–अकरणीय भूलकर अन्याय, अत्याचार, दुराचार, कलह, युद्ध, नरसंहार आदि कर बैठता है। विज्ञान के अनुसार–क्रोध के समय जीवकोशों से एड्रेनेलीन नामक विषाक्त रासायनिक द्रव्य निकलता है, जिससे तन्त्रिकातंत्र सहित संपूर्ण शरीर प्रभावित होकर स्मरण शक्ति की क्षीणता, मन्दाग्नि, त्वचा का रंग काला इत्यादि शारीरिक, मानसिक, आध्यात्मिक रोग हो जाते हैं। इन सब बीमारियों से दूर रहने के लिए पूज्य गुरुदेव ने एक अमोघ आध्यात्मिक औषधि का शोध–बोध करके विश्व के लिए एक अलौकिक, उत्कृष्ट कृति की रचना करके यह सिद्ध किया है कि क्षमा भावों से ही अनंत सुख, ज्ञान, वीर्य, की प्राप्ति होती है।

क्षमा को अपने जीवन में किस प्रकार क्रियान्वित करें और किन–किन लोगों ने क्षमा को धारण करके स्व–पर का कैसे उद्धार किया है इत्यादि विषयों का इस कृति में बहुत ही सुंदर विशद विवेचना के साथ वर्णन है। जनसाधारण के लिए यह कृति निश्चित ही अनेकों लाभ प्राप्त करायेगी क्योंकि आज के भौतिकवादी समय में प्रायः प्रत्येक मानव क्रोधी, अशांत, तनावयुक्त एवं शारीरिक, मानसिक, नैतिक, आध्यात्मिक रूप से शिथिल है। इस कृति का अध्ययन करने के उपरांत क्षमा को जीवन में क्रियान्वित करने से सभी रोगों से निश्चित ही मुक्ति पायेगा। इस कृति की अत्यधिक लोकप्रियता होनेके कारण अधिक माँग होने से तृतीय संस्करण हिन्दी भाषा में प्रकाशित है। नये संस्करण का मूल्य 21/– रू. पृष्ठ–112



Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri



## (84) त्रैलोक्य पूज्य ब्रह्मचर्य

बढ़ती आबादी पर नियन्त्रण एवं एड्स जैसे यौन रोगों का निर्मूलन ब्रह्मचर्य, शील, संयम से ही संभव है। आज संपूर्ण विश्व में त्राहि–त्राहि, दुःख, अशान्ति का वातावरण छाया हुआ है। शील, संयम, सदाचार के द्वारा राष्ट्रीय, वैश्विक समस्याओं का समाधान करना चाहिए। मात्र कानून बनाने से या जुलूस, नारेबाजी लगाने से समस्याओं का समाधान नहीं हो सकता है।

जनसंख्या वृद्धि में भारत का दूसरा स्थान है। संयमित जीवन के अभाव में आज भ्रष्टतम देशों की तुलना में भारत का द्वितीय स्थान है। इस भ्रष्टता को दूर करने के लिए महावीर के आदर्शों की बात शास्त्रों तक ही सीमित नहीं रहनी चाहिए बल्कि जन–जन के आचरण में उतरनी चाहिए। शील, संयम, ब्रह्मचर्य चर्चा का विषय नहीं चर्या का विषय है। अपनी सभ्यता, संस्कृति, धर्म, परम्पराओं की रक्षा के लिए स्वच्छन्दता, अश्लीलता, फैशन, मादक खाद्य वस्तुएं इत्यादि का त्याग करके, शुद्ध, आदर्श, सात्विक, पौष्टिक आहार, सत् साहित्य, धार्मिक शिविर, संगोष्ठी आदि क्रियाओं को जीवन में क्रियान्वित करना होगा क्योंकि तीनों लोकों में ब्रह्मचर्य, शील, सदाचार, उच्च आदर्श, सत् क्रियायें ही पूज्य, वंद्य, प्रशंसनीय, अनुकरणीय हैं।

पूज्य गुरुदेव ने इस कृति में धर्म, विज्ञान, आयुर्वेद, कर्मसिद्धांत, आधुनिक अनेकों शोधपूर्ण, प्रामाणिक पत्र–पत्रिकाओं से यह सिद्ध किया है कि ब्रह्मचर्य से शारीरिक, मानसिक, नैतिक आध्यात्मिक पथ प्रशस्त होता है एवं परिवार, समाज, राष्ट्र, विश्व, धर्म, सभ्यता, संस्कृति, रीतिरिवाज, परम्परायें इत्यादि सभी सुदृढ, शक्तिसंपन्न, सत्तायुक्त, समृद्धशाली, बलशाली, वैभवशाली बनते हैं।

इस कृति का द्वितीय संस्करण हिन्दी भाषा में प्रकाशित है। मूल्य–25/– रू.

## (85) श्रमण संघ संहिता :- I

इस कृति का नाम ''श्रमण संघसंहिता'' अर्थात् ''श्रमण संघ का परस्पर आचरण''रखने का कारण यह है जो आत्मकल्याण के लिए यथायोग्य श्रम करें एवं साम्य भाव रखें वह श्रमण हैं। इस दृष्टि से अरिहंत ही परम उत्कृष्ट श्रमण हैं। उनके अनुकरण करने वाले साधक (आचार्य, उपाध्याय, साधु) भी श्रमण



Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri



हैं। उपरोक्त श्रमण की आराधना करने वाले और उनमें अनुराग रखनेवाले श्रावक 'श्रमण उपासक' हैं। ऐसे श्रमणों के समुदाय / संगठन / एकता / मिलन को श्रमण संघ कहते हैं। इस श्रमण संघ (श्रमण, आर्यिका, श्रावक, श्राविका) में जो परस्पर धार्मिक आचरण है उसे ही ''श्रमण संघ का परस्पर आचरण'' कहते हैं।

वर्तमान समय में श्रमण संघ के परस्पर आचरण का पूज्य गुरुदेव ने निरीक्षण–परीक्षण किया तब कुछ संघों में, कुछ आचार्यों में, कुछ श्रमणों में, कुछ उपाध्यायों में, कुछ आर्यिकाओं में, कुछ क्षुल्लक–क्षुल्लिकाओं, ऐलक में, कुछ श्रावकों में, कुछ जैन पंडितों में जो परस्पर आचरण हैं उसमें जो अंतर परिलक्षित हुआ गुरुदेव ने उस विषय पर गहन अध्ययन चिंतन–मनन किया कि परम उदार / परम अहिंसा / परम साम्यभावी / परम् वात्सल्यमयी, जैनधर्म में यह पक्षपात पूर्ण, अहंकार पूर्ण, भेदभावपूर्ण, आगम विरुद्ध आचरण क्यों ? किसके लिए ? किसलिए ? इससे लाभ क्या ?

पूज्य गुरुदेव ने आगमोक्त / प्रामाणिक / सैद्धान्तिक जैन–अजैन लगभग 60–70 ग्रंथों के माध्यम से आगमोक्त पद्धति के प्रकाशन के लिए एवं असम्यक् पद्धति के निरसन के लिए इस कृति की रचना की है।

धर्म की प्रभावना तब हो सकती है जब धर्म प्रचारक, धर्म उपदेशक स्वयं वात्सल्य, विनयाचार, सदाचार आदि गुणों से समन्वित हो। धर्म के प्रचार के प्रायः प्रत्येक धर्म प्रचारकों ने संघ की स्थापना की है। जैसे ईसा मसीह, पैगम्बर, मोहम्मद, दयानन्द सरस्वती, महात्मा बुद्ध जैन तीर्थंकरों आदि ने धर्म प्रचार के लिए चतुर्विध संघ की स्थापना की। इस चतुर्विध संघ के प्रत्येक सदस्य के कुछ कर्त्तव्य / उत्तरदायित्वों के साथ–साथ कुछ अधिकार भी होते हैं। जो अपने कर्त्तव्यों का समीचीन पालन करता है उसे अधिकार स्वयमेव मिलता है इसीलिए जैन शासन में कर्त्तव्य एवं अधिकारों की समीचीन व्याख्या / मर्यादा / परिभाषा है। उसके अनुसार जो चलता है वही यथार्थ से जैन धर्मावलम्बी है। पूर्वाचार्यकृत शास्त्रों के आधार पर ''श्रमण संघ संहिता'' नामक कृति की रचना गुरुदेव ने की है।

इस कृति का प्रथम संस्करण हिन्दी भाषा में प्रकाशित है। एवं 30/– रूपये मात्र इसका मूल्य है।



Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri



# आगामी प्रकाशनाधीन ग्रंथ

**1. न्याय, राजनीति, अर्थशास्त्र, समाजविज्ञान–** (नीति वाक्यामृतम् की विस्तृत वैज्ञानिक समीक्षात्मक टीका) पृष्ठ संख्या लगभग–1000

**2. भारत का दिव्य संदेश–** भारत की मूल परंपरा यथा– जैन, बौद्ध, वैदिक धर्म के श्रेष्ठ ग्रंथों की आधुनिक समीक्षात्मक टीका सहित। समाधिशतक (जैन) उपनिषद (वैदिक) धम्मपद (बौद्ध)

तीनों ग्रंथों का प्रकाशन एक ही जिल्द में किया जायेगा जिससे विश्व के लोग भारत के दिव्य आध्यात्मवाद को समझें एवं भावात्मक एकता के सूत्र में बँधें। पृष्ठ लगभग 500 से 750 तक।

द्रव्यदाता – प्रशांत, प्रेमकुमार संघई जैन– परभणी (महा.)

**3. स्वभाविक अकृत्रिम विश्व–** दार्शनिक एवं वैज्ञानिक दृष्टिकोण से विश्व का कर्ता, धर्ता एवं हर्ता कोई एक नहीं है यह सब स्वभाविक रूप से होता है यह सिद्ध किया गया है। पृष्ठ लगभग – 100

**4. परम्परा, धर्म एवं विज्ञान –** परम्पराओं में धर्म क्या है? अधर्म क्या है? विज्ञान क्या है? अविज्ञान क्या हैं? यह सिद्ध किया जायेगा।

पृष्ठ– प्रायः 100

**5. 72 कलाएँ वृहत् –** पूर्व प्रकाशित "72 कलाओं" का और विभिन्न दृष्टिकोणों से विस्तृत वर्णन सोदाहरणों के माध्यम में प्रस्तुत किया जायेगा।

पृष्ठ लगभग – 100

**6. तम स्कन्ध (श्याम विवर) –** वैज्ञानिक दृष्टिकोणानुसार ब्रह्माण्ड के कुछ नक्षत्रों में श्याम विवर होते हैं इसका विस्तृत वर्णन धार्मिक एवं वैज्ञानिक दृष्टिकोण से करके यह सिद्ध किया जायेगा कि यह श्याम विवर संभवतः तम स्कन्ध है। पृष्ठ– प्रायः 150

**7. ध्यान का वैज्ञानिक विश्लेषण भाग दो–** इस कृति में चार आर्तध्यान, चार रौद्रध्यान तथा धर्मध्यान, शुक्लध्यान का सविस्तार धार्मिक एवं वैज्ञानिक दृष्टिकोण से वर्णन किया जायेगा। पृष्ठ प्रायः 300-400



Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri



**8. परम पर्यावरण वैज्ञानिक तीर्थंकर एवं पर्यावरण की सुरक्षा –** इस कृति में यह सिद्ध किया जायेगा कि केवल प्रदूषण वायु, जल, मृदा, शब्द ही नहीं होता है बल्कि भावात्मक प्रदूषण सर्व प्रदूषण का जनक है। विश्व के महानतम प्रथम पर्यावरण वैज्ञानिक तीर्थंकर होते हैं। पृष्ठ प्राय: 400 से 500

**9. धर्म, जैनधर्म एवं महावीर भगवान्–** आधुनिक प्रणाली एवं भाषा शैली में धर्म, जैनधर्म एवं भगवान् महावीर की जीवनी का विस्तृत वर्णन किया जायेगा। पृष्ठ प्राय: 150 द्रव्यदाता– आर.के. जैन-- बोम्बे

**10. कल्याणकारक– जैन आयुर्विज्ञान –** पृष्ठ प्राय: 100

**11. भाव ही कल्पवृक्ष, चिंतामणि, कामधेनु–** इस कृति में यह सिद्ध किया जायेगा कि वस्तुत: चिंतामणि, कामधेनु, कल्पवृक्ष व्यक्ति के भाव ही हैं। भावों का प्रभाव शरीर, मन, आत्मा, समाज, प्रकृति, इहलोक–परलोक में किस प्रकार पड़ता है इसका विस्तृत वर्णन धार्मिक, वैज्ञानिक, मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण से किया जायेगा। पृष्ठ प्राय: 200

---

***आयड़ (उदयपुर) में आयोजित 20वें विराट धर्म दर्शन विज्ञान प्रशिक्षण शिविर को संबोधित करते हुये आ. श्री कनकनंदीजी गुरुदेव ससंघ***

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

आ. श्री कनकनंदीजी द्वारा रचित कतिपय ग्रंथ

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi